www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

आओ जानें युगऋषि को

(वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा की जीवन यात्रा)

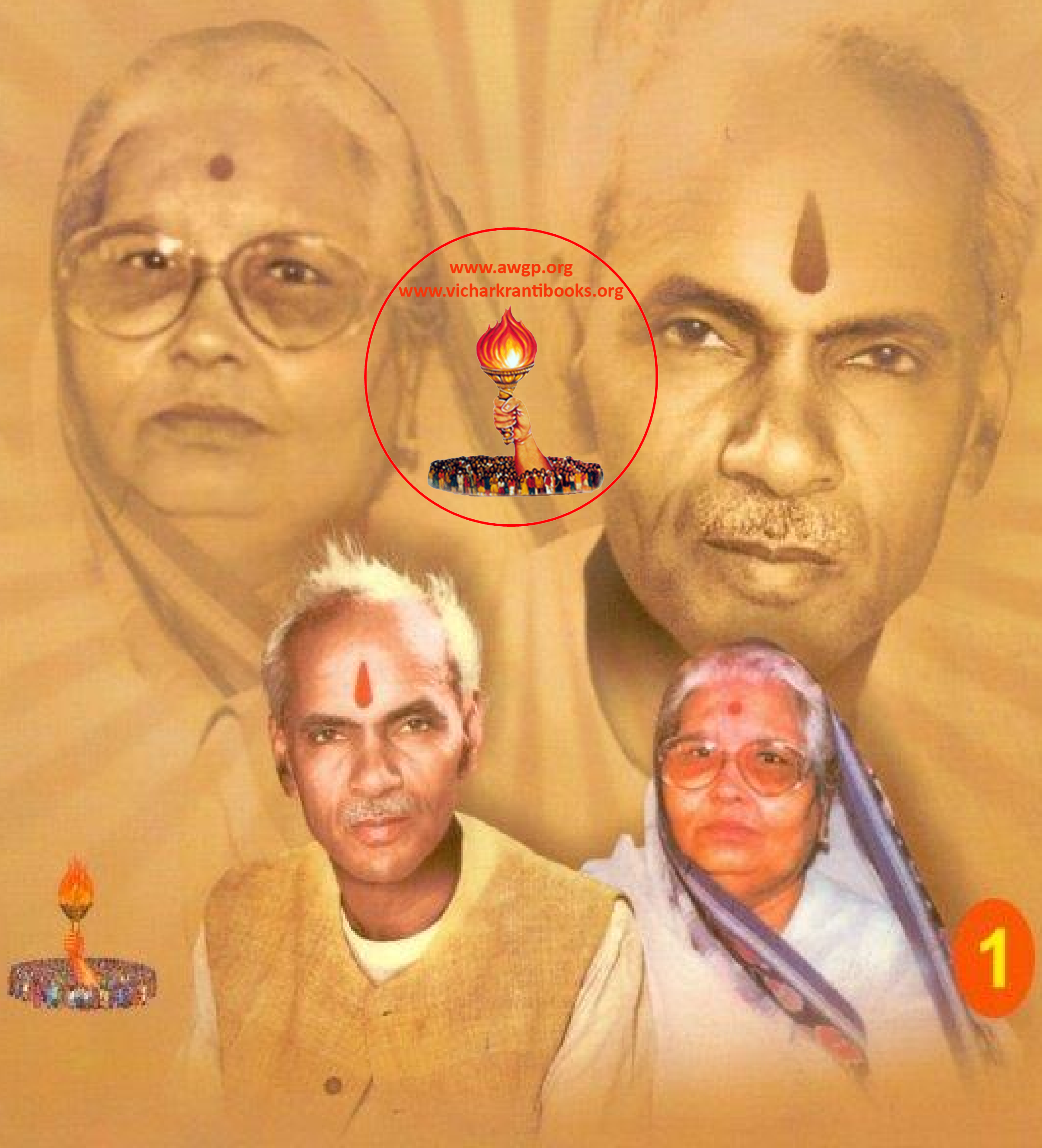

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

1

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आगरा जनपद में एक गाँव है—आँवलखेड़ा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आँवलखेड़ा गाँव में ही एक बड़ा गायत्री शक्तिपीठ स्थापित हुआ है, जिसे देखने दूर-दूर से अनुयायी प्रतिदिन आते हैं।

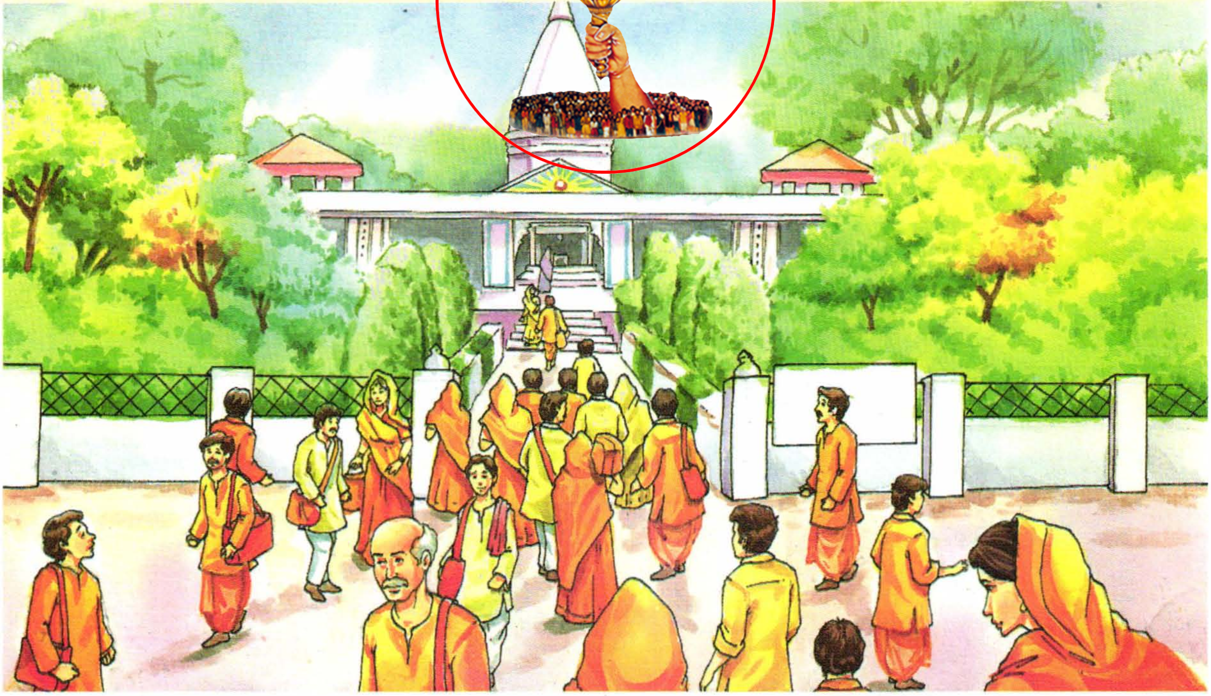

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह गाँव इस शताब्दी के प्रारंभ में एक साधारण सा गाँव था, किंतु पिछले कुछ वर्षों से यह गाँव एक महापुरुष की जन्मस्थली होने के कारण पावन युगतीर्थ के रूप में दर्शनीय हो गया है। अनेक तीर्थयात्री प्रतिदिन यहाँ उस महापुरुष के जन्मस्थल को देखने आते हैं।

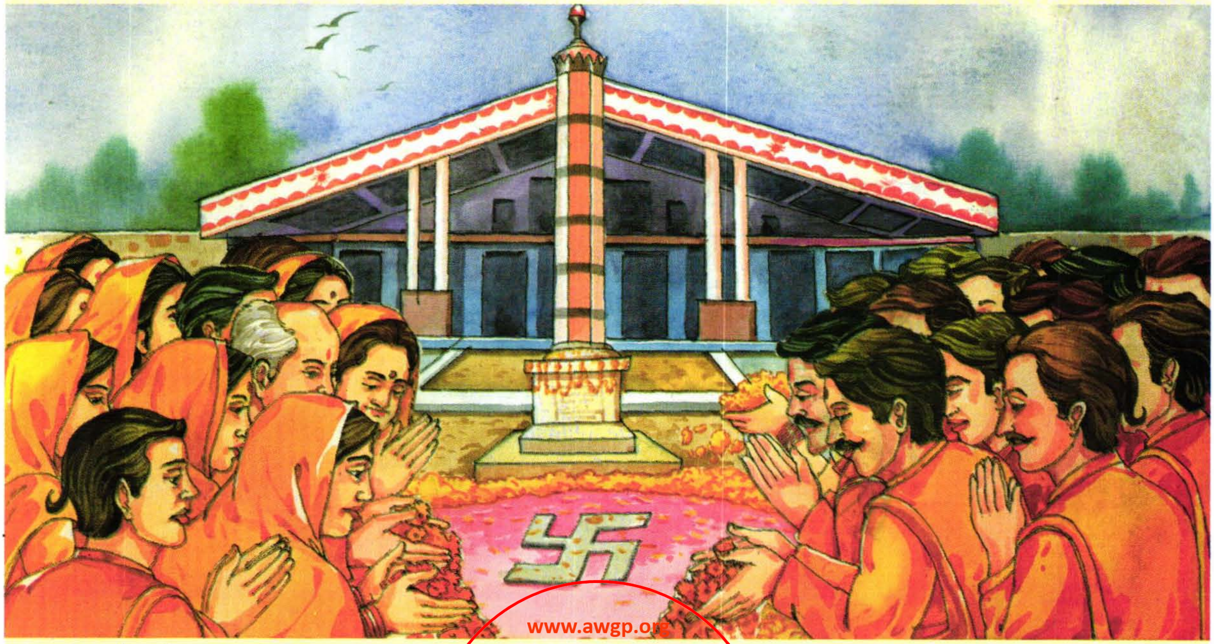

इसी गाँव में बालक श्रीराम का जन्म हुआ जो आगे पं० श्रीराम शर्मा आचार्य कहलाए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

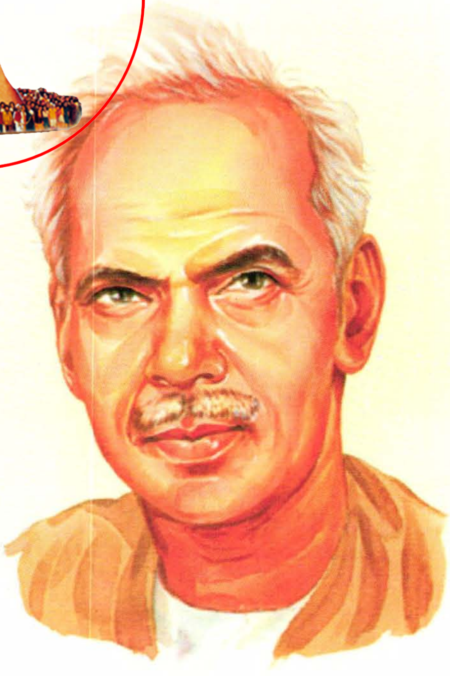

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी के जन्मस्थल पर अब एक कीर्ति-स्तंभ स्थापित किया गया है और उसके पृष्ठ भाग में चौदह रत्न-अभिलेख अंकित भवन हैं।

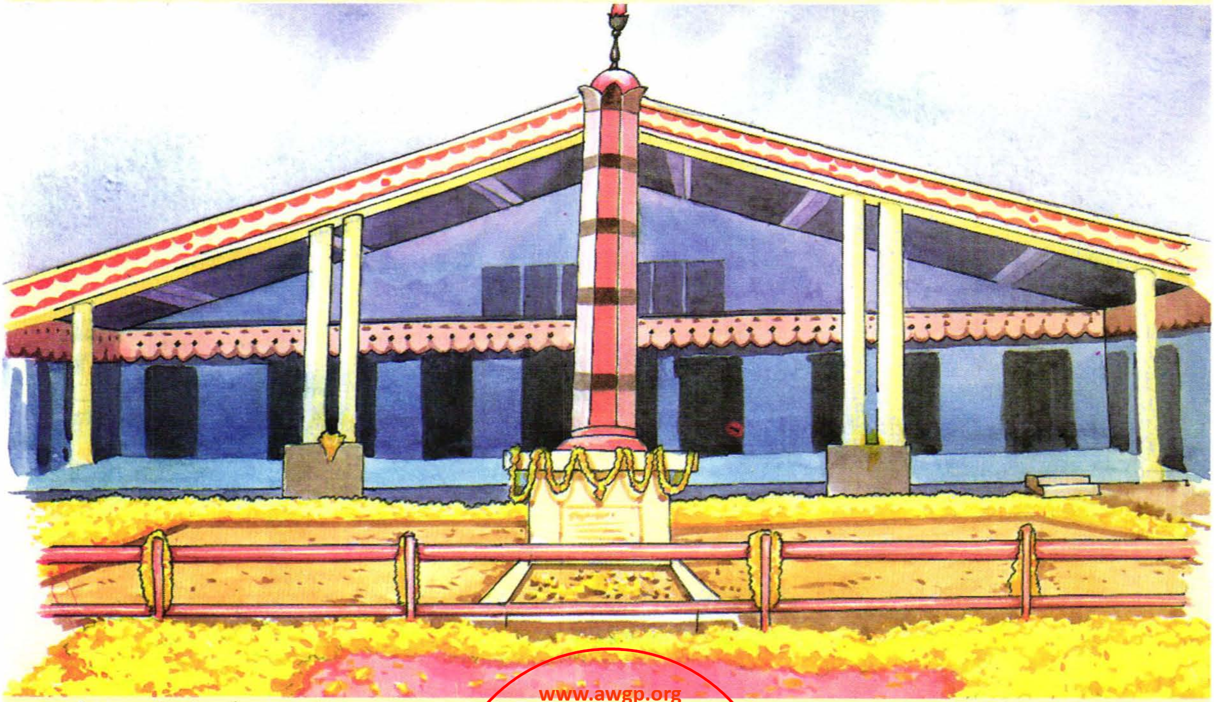

इनकी जन्मतिथि है—आश्विन कृष्ण त्रयोदशी संवत् १९६८ विक्रम। तदनुसार ईसवी सन् की तिथि २० सितंबर सन् १९११ ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इनकी माता जी का नाम है—श्रीमती दानकुंवरि और पिता जी का नाम है पं० रूपकिशोर शर्मा।

माता जी श्रीमती दानकुंवरि एक सरल, सीधी, निष्ठावान और श्रद्धालु महिला थीं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इनकी माता जी को सेवा के कार्य बहुत भाते थे। इनकी उदारता के कारण आस-पास के लोग इनसे सहायता लेने प्रायः आते ही रहते थे। ये सबकी यथाशक्ति सहायता करती थीं।

पिता जी पं० रूप किशोर शर्मा श्रीमद्भागवत के प्रसिद्ध पंडित थे।

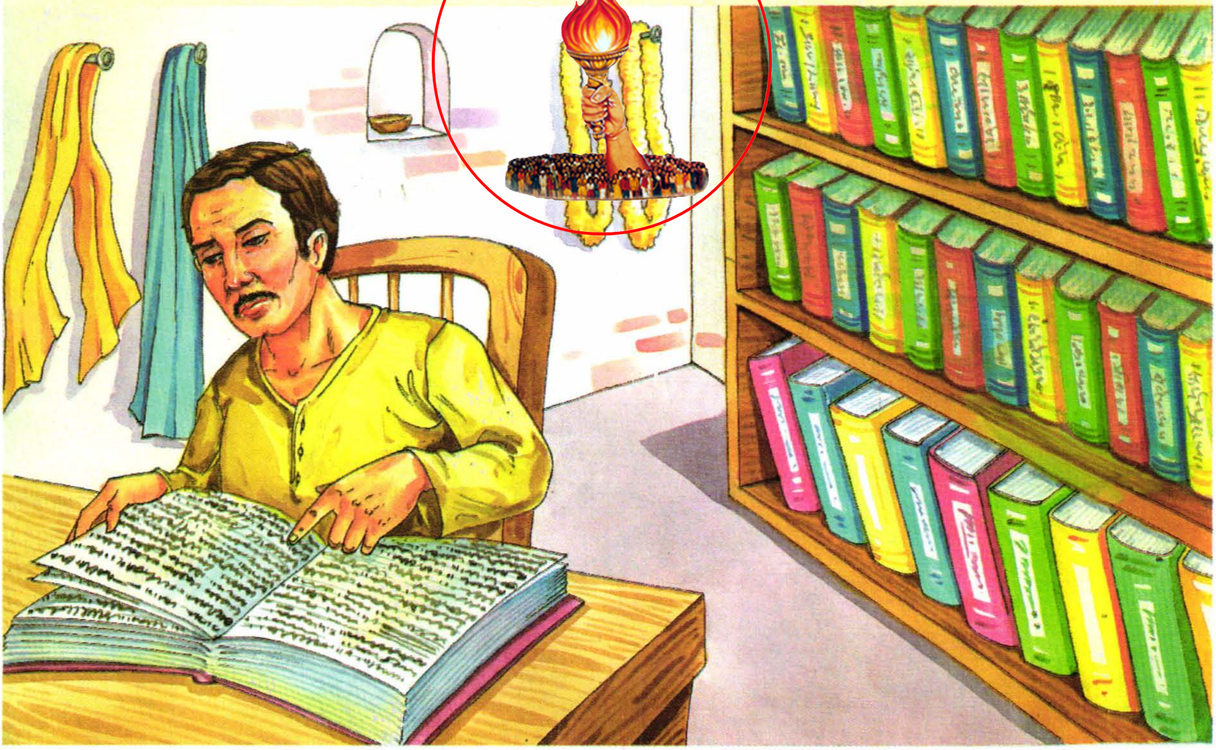

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीमती दानकुंवरि जी (जिन्हें लोग ताई जी कहते थे) ने बताया—"बालक श्रीराम शर्मा के जन्म के पूर्व हमारी हवेली में गाय बहुत आने लगी थीं।"

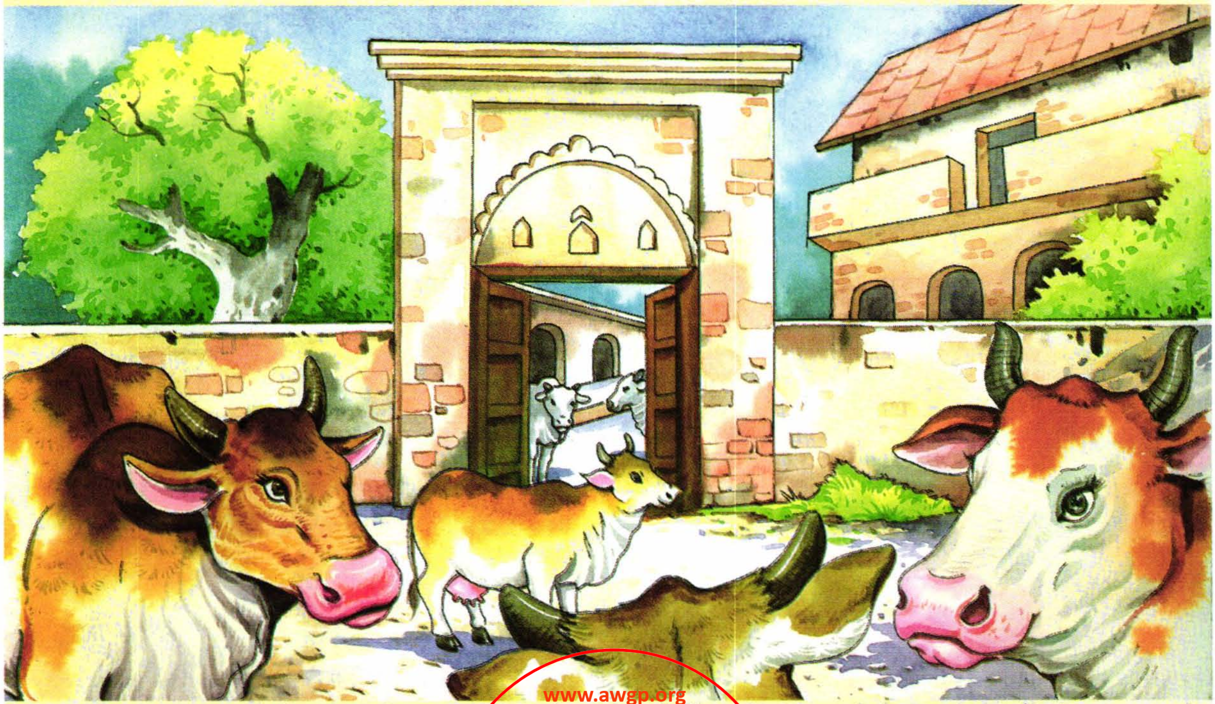

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरु जी की माता जी ने यह भी बताया—"मैं स्वप्न में देखती कि पूर्व से आकाश में विमान उड़ते हुए हमारी हवेली के ऊपर पुष्प वर्षा कर रहे हैं और एक देवी मेरी गोद में फूल डाल रही है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जन्म से कुछ माह बाद एक दिन एक संन्यासी हवेली के द्वार पर आया और नन्हे श्रीराम को घूरकर देखने लगा। ताई जी को बहुत बुरा लगा। उन्होंने पूछा—“महाराज! बच्चे को क्यों घूर रहे हो?” संन्यासी ने कहा—“माई, यह बालक सिद्धात्मा है।” और वह प्रणाम कर चला गया।

गुरु जी की माता जी (ताई जी) ने बताया—“श्रीराम का तन दुर्बल था पर, वह बचपन से ही बड़ा निडर था। हवेली में प्रायः साँप-बिच्छू निकल आते थे। यह उन्हें बिना भय के हटा देता था।”

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम वन में अकेले घुस जाता था। इसे जंगली जानवरों का भी डर नहीं लगता था।

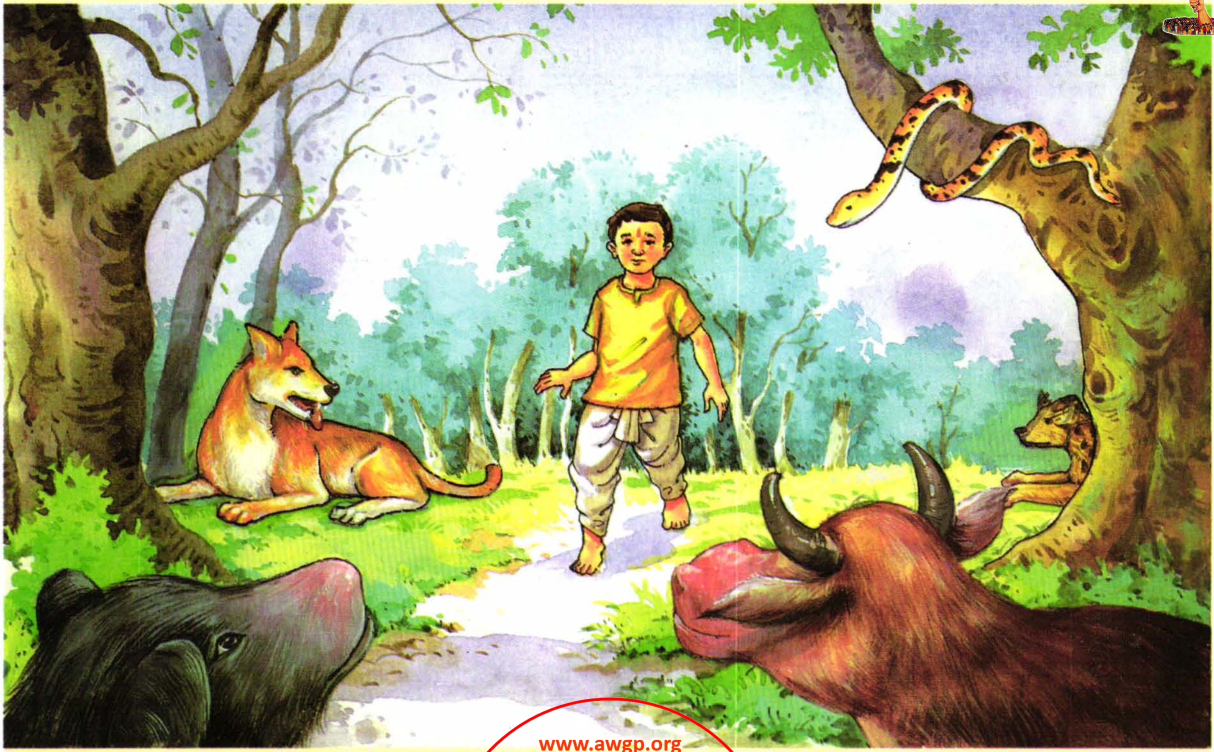

गुरु जी की माता जी ने ही बताया — श्रीराम कभी बिना बताए ही वन में चला जाता था। पता चलता तो चिंता होती। मैं ढुंढ़वाती तो ढूँढ़क[illegible]ने वाला बताता कि ताई, वह तो एक पेड़ के नीचे आँखें बंद किए बैठा था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कभी मैं देखती श्रीराम आँगन में धरती पर बैठा 'ॐ या सतिया' बना रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम को कोई भी वस्तु दूसरे को देने में तथा वस्तुओं को परस्पर बाँटने में बड़े आनंद की अनुभूति होती थी। वह लोगों को वस्त्र [illegible]जन देता रहता था।

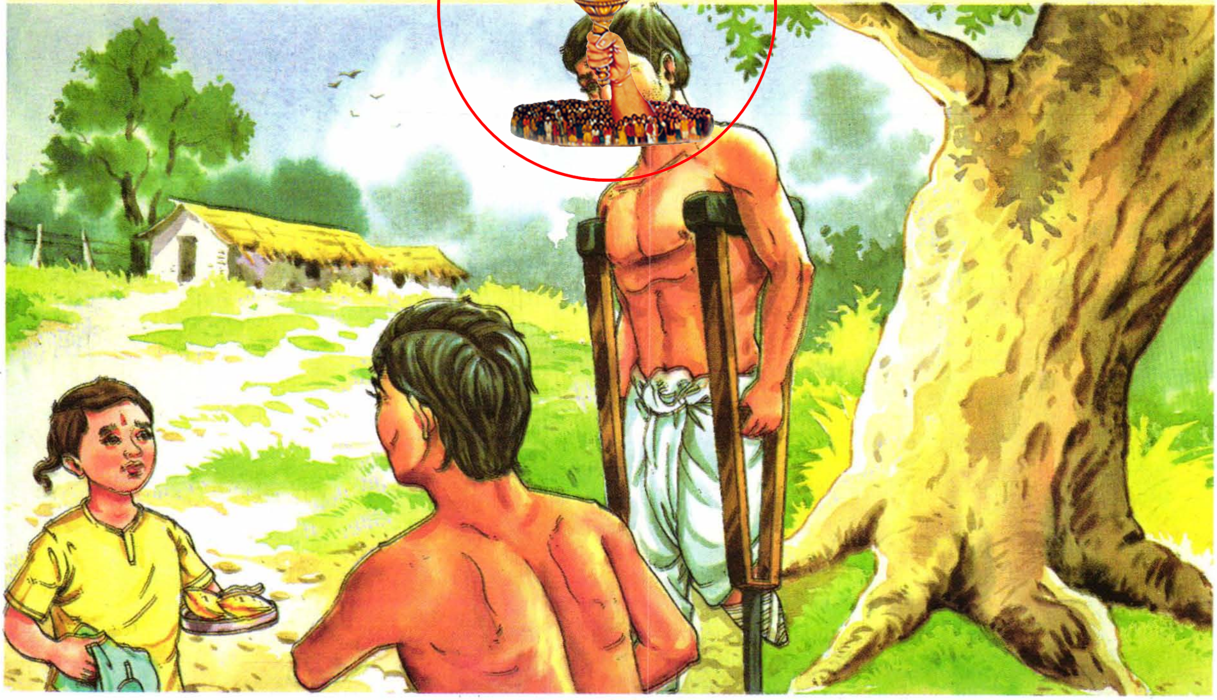

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन माता श्रीमती दानकुंवरि (ताई जी) ने देखा—बालक श्रीराम ने अपना छोटा दुपट्टा एक गरीब को दे दिया है। उन्हें बालक की इस प्रवृत्ति पर आश्चर्य हुआ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ताई जी ने पूछा—"बेटा! तुमने अपना कपड़ा उस भिखारी को क्यों दे दिया?" बालक उत्तर में कहता है—"ताई! वह काँप रहा था। उसे वस्त्र की जरूरत थी।"

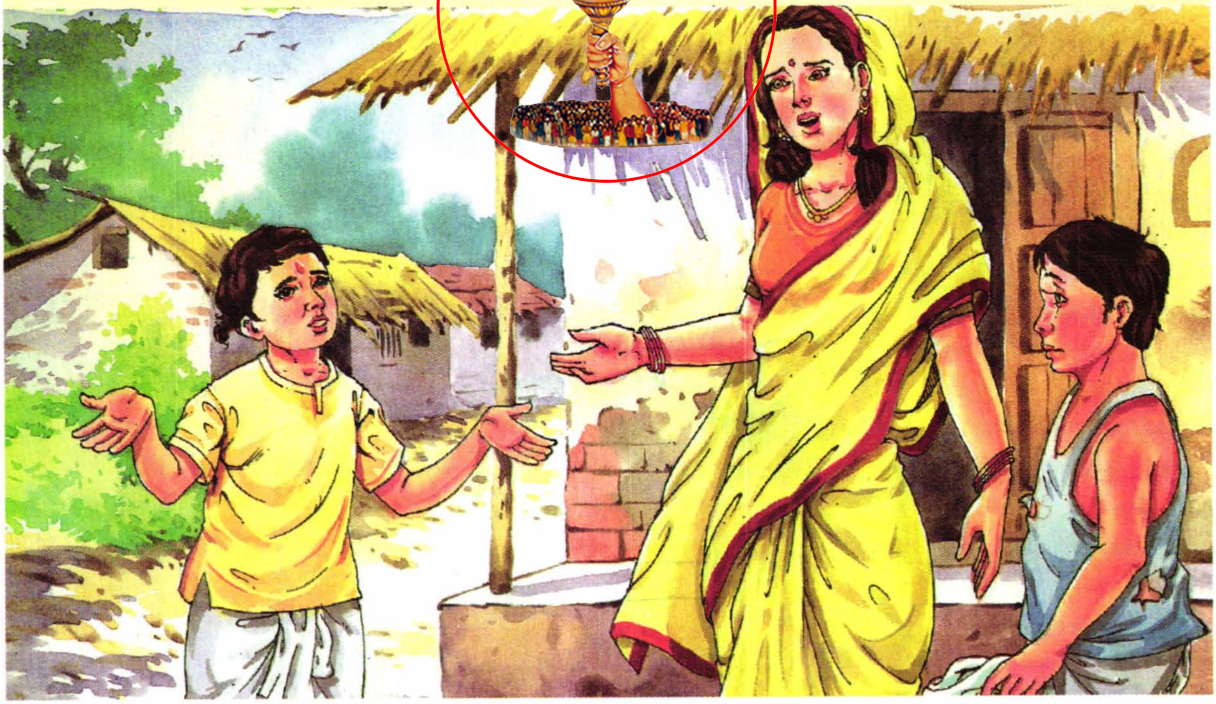

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन माता श्रीमती दानकुंवरि को मालूम हुआ कि बालक श्रीराम ने अपना पूरा भोजन गरीबों में बाँट दिया है। उन्होंने बालक श्रीराम से पूछा— "तुम्हारा सारा भोजन कहाँ है?" बालक ने कहा— "मैंने बाँट दिया। व्रत करना सीख रहा हूँ।"

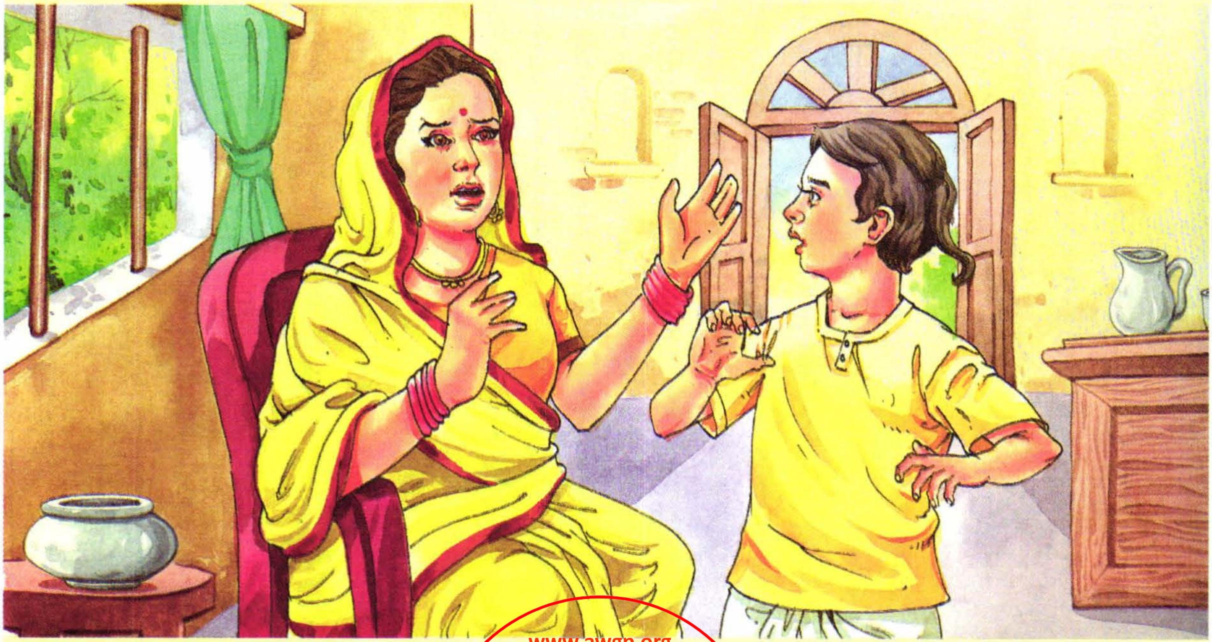

श्रीराम को दीन-दुखियों की मदद करना, सेवा करना बहुत अच्छा लगता था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम के पास गाय स्वयं आकर खड़ी हो जाती। वह उनको चारा खिलाते, उनकी सेवा करते। उनके पास चिड़िया और कबूतर भी निश्चिंत होकर चुगते रहते।

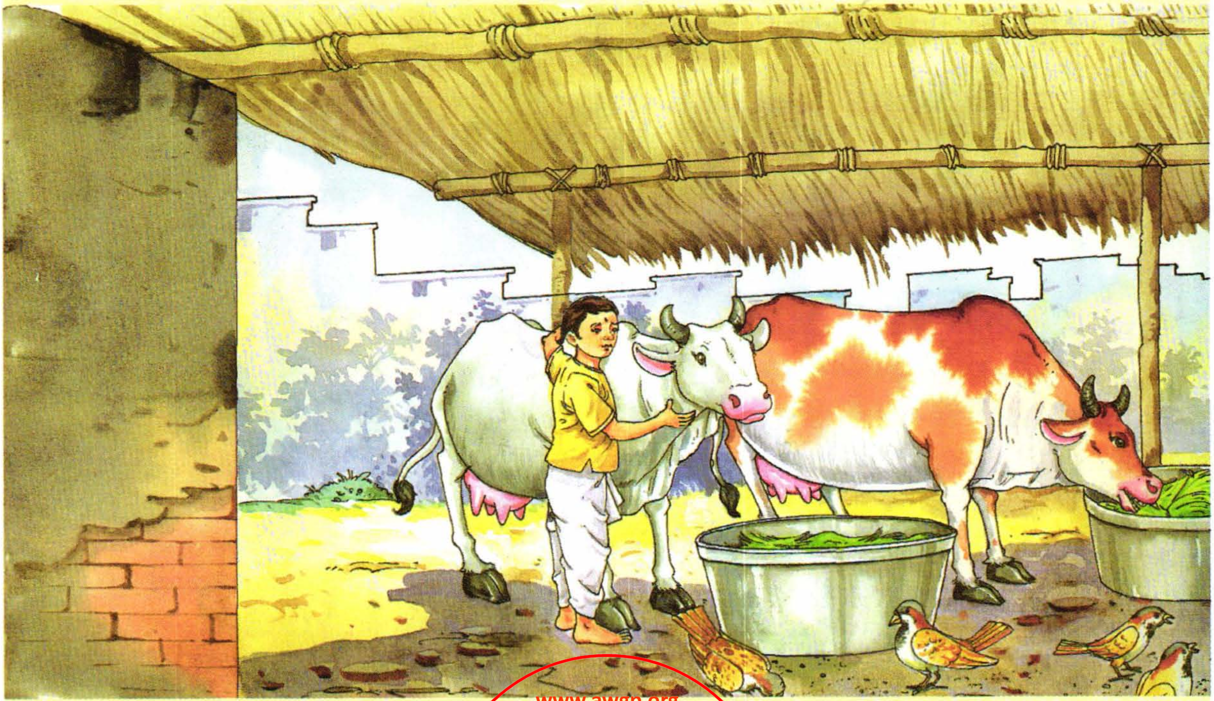

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक दिन गाँव की सुनसान पगडंडी से कई मील दूर श्रीराम एक छोटे स्टेशन तक निकल गए। उन्हें एक पड़ोसी ने देखा—"इधर कहाँ जा रहे हो श्रीराम?" उत्तर दिया—'हिमालय'। बालक श्रीराम का उत्तर सुनकर वह पड़ोसी हँसा और इन्हें वापस अपने साथ गाँव ले आया।

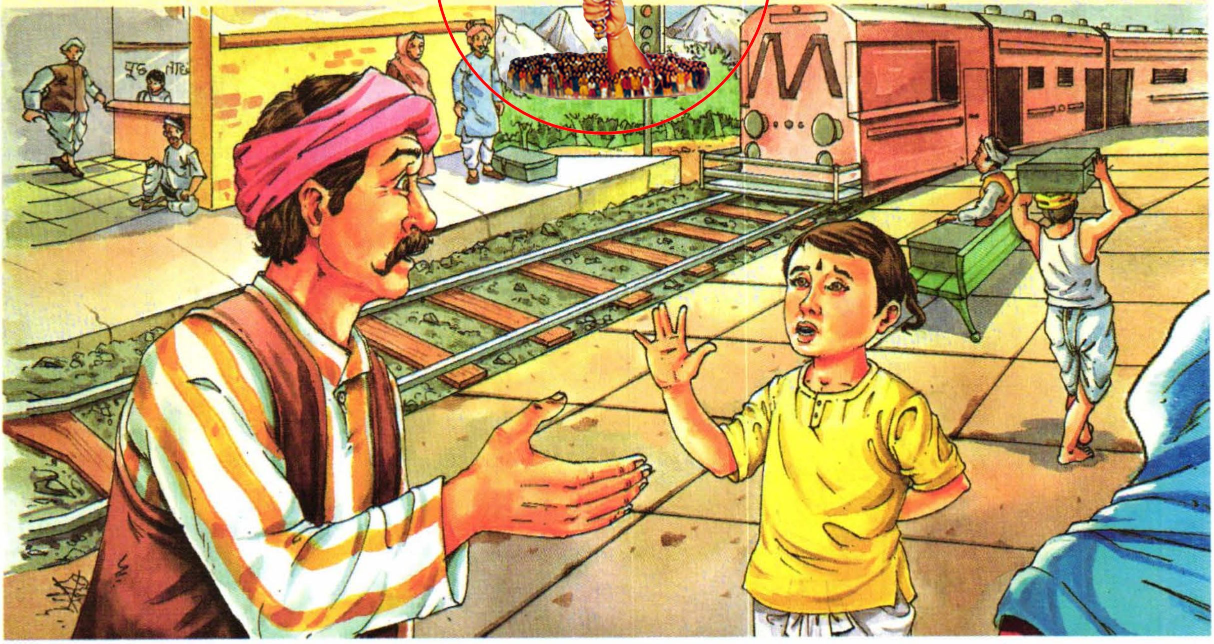

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कभी श्रीराम को साथ के बालक घेरकर बैठ जाते तो यह उन्हें कथा सुनाता। बालक इसकी कथाएँ बड़े ध्यान से सुनते।

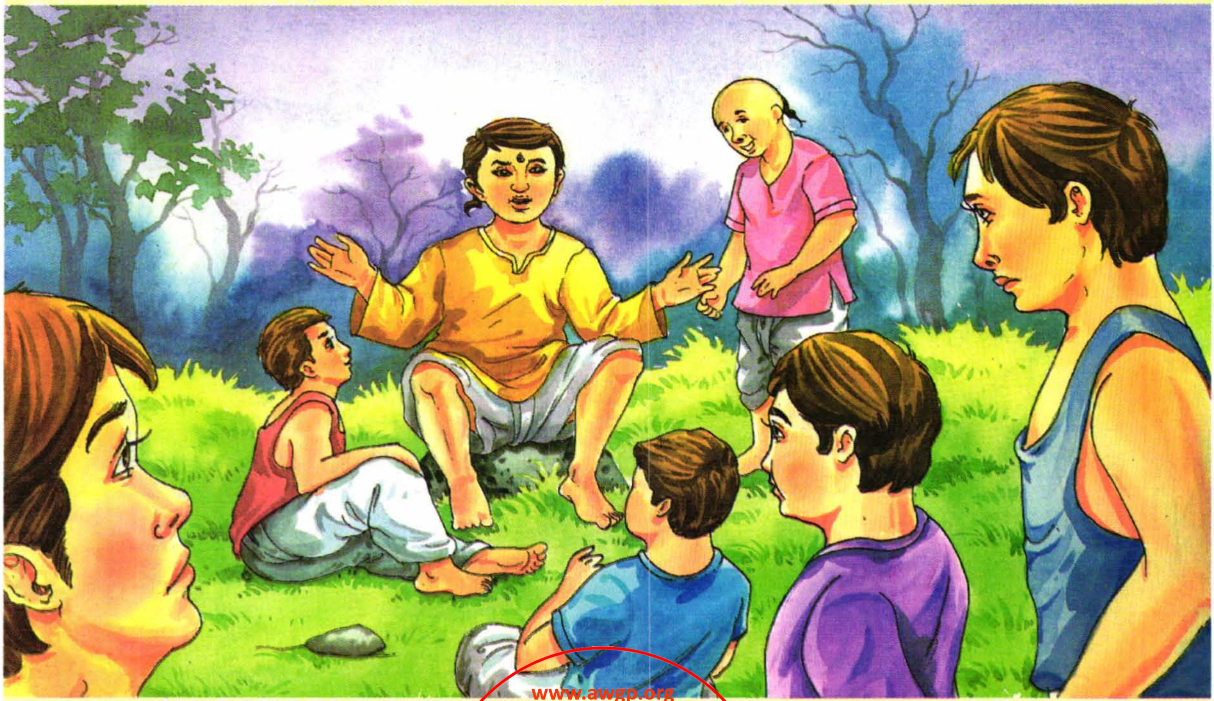

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरु जी के पिताजी के पास प्राचीन संस्कृत साहित्य के दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह था। उनमें कुछ हस्तलिखित पांडुलिपियाँ थीं तथा कुछ भोजपत्र पर लिखे ग्रंथ थे। श्रीराम के पिता जी अवकाश पाते ही इन ग्रंथों को पढ़ने में अपना अधिकांश समय लगाते थे।

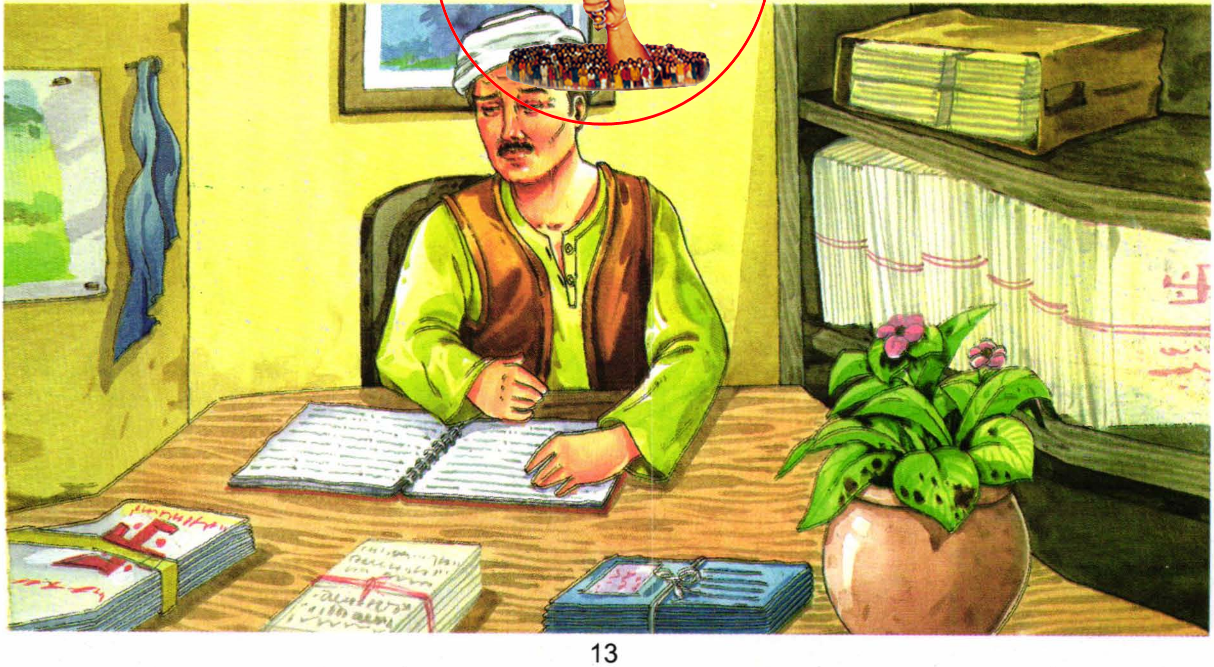

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम अपने पिता जी को अध्ययन करते देखते तो उन्हें बड़ा कुतूहल होता। पिता जी जब पृष्ठों को पढ़ते हुए कुछ बोलते तो उन्हें यह जिज्ञासा होती कि, ये कागज कैसे पिता जी को बोलना सिखाते हैं? बालक श्रीराम अपने पिता जी को छिपकर बड़ी देर टकटकी लगाए देखता रहता।

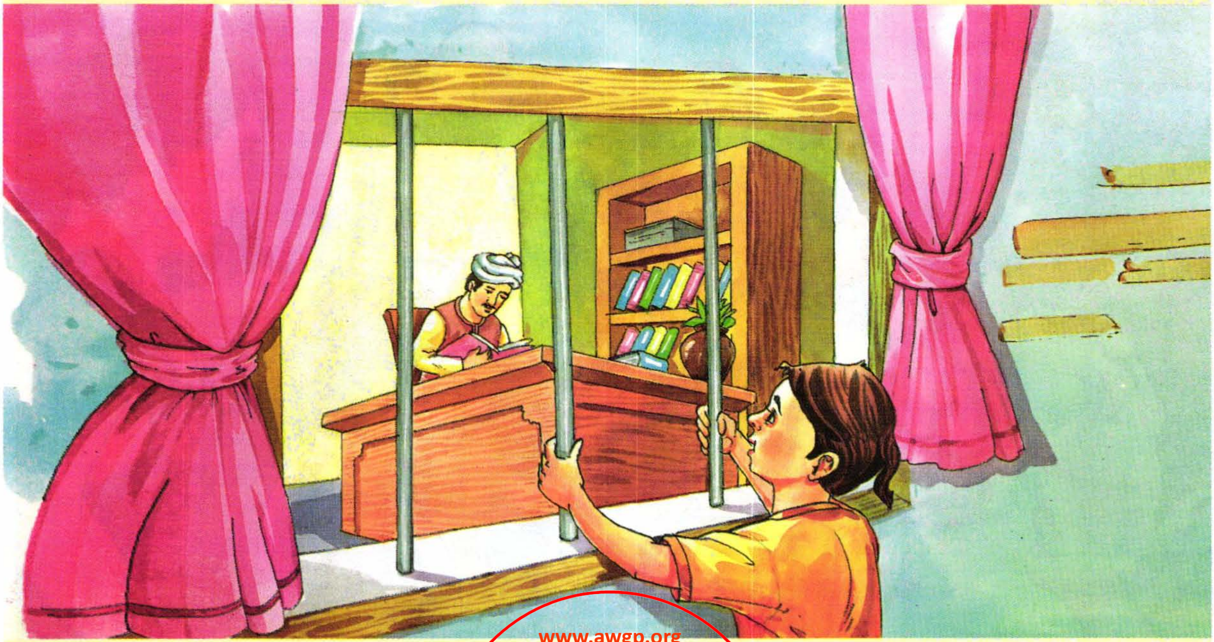

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक दिन माँ से बालक श्रीराम ने पूछा— "ताई! पिता जी के कागज कैसे बोलते हैं?" भोले बेटे की बात सुनकर माता जी हँसीं और उन्होंने बालक श्रीराम को पढ़ने-बोलने की बात का रहस्य बताया। बालक इस रहस्य को जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। मन में निश्चय किया कि यह विद्या मैं भी प्राप्त करूँगा।

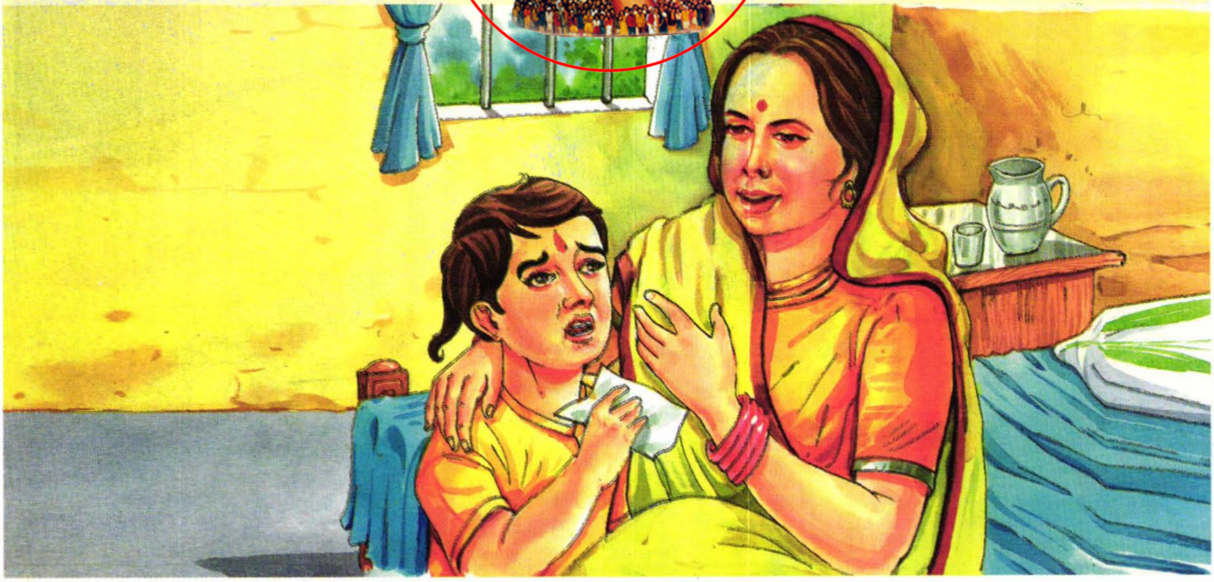

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस दिन के बाद बालक श्रीराम पिता जी की बातों को बड़े ध्यान से सुनने लगा। उसे उनकी बातें सुनना अच्छा लगता था तथा आनंद आता था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम शर्मा ने अपने पिता जी के मुख से अनेक धार्मिक कथाएँ सुनी थीं, उपदेश सुने थे।

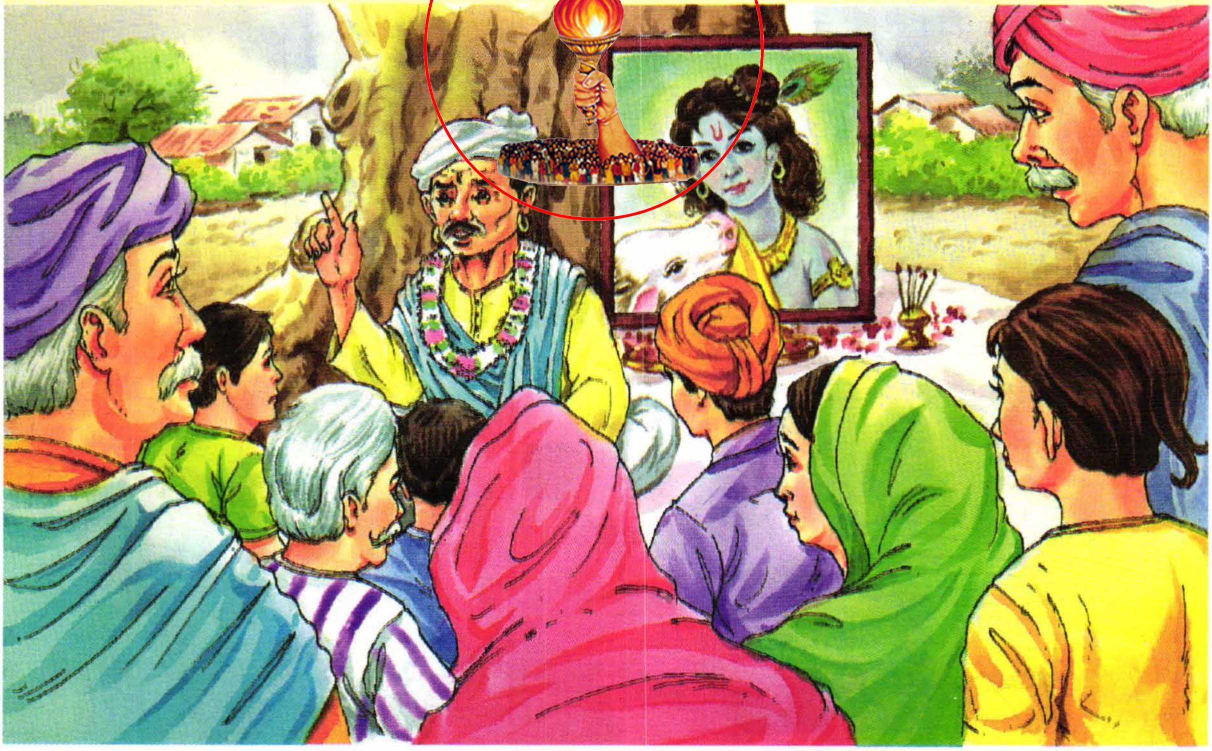

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन पिता जी ने श्रीराम को शिक्षा प्राप्त करने के लिए गाँव की पाठशाला में भेजा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम की कुशाग्र बुद्धि देखकर शिक्षक बहुत प्रसन्न था। श्रीराम ने बहुत जल्दी अपनी शिक्षा में उन्नति की।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पिता पं० रूप किशोर शर्मा को बालक श्रीराम की शिक्षा की प्रगति का समाचार मिला तो बहुत खुश हुए। उन्होंने बालक श्रीराम का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कराने का विचार किया।

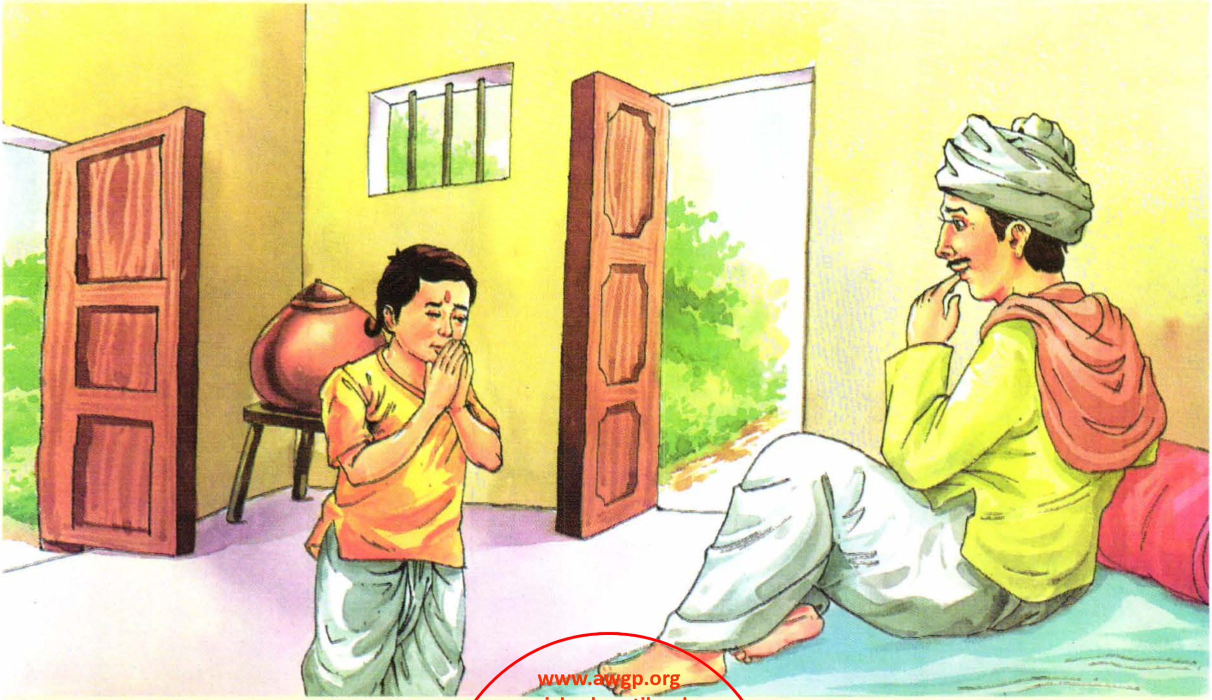

एक दिन बालक श्रीराम माता श्रीमती दानकुँवरि के सामने जाकर खड़े हो गए। माता ने बालक के गंभीर मुख को देखकर पूछा—"क्या बात है, इतने गंभीर क्यों हो?" बालक श्रीराम ने उत्तर दिया—"ताई! मैं अँगरेजी स्कूल में आगरा पढ़ने नहीं जाऊँगा, वहाँ जाने से मुझे अपना जीवन बदलना होगा। मैं अँगरेजों की अच्छी बातें सीखूँगा, लेकिन उनकी सभ्यता और रहन-सहन, वेशभूषा नहीं अपनाना चाहता।"

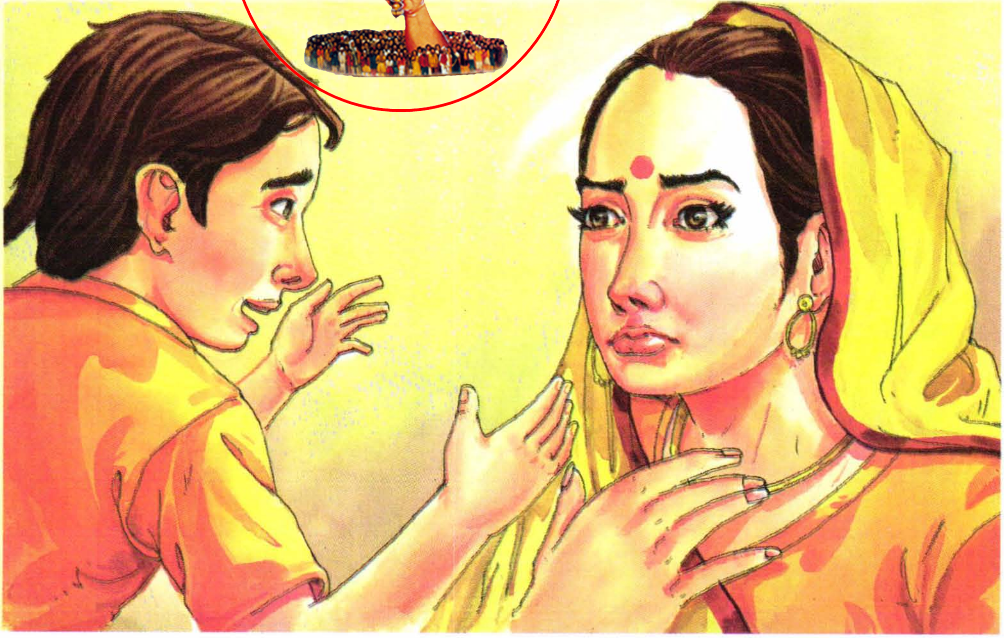

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माता श्रीमती दानकुंवरि ने पुत्र श्रीराम शर्मा की बात सुनकर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए पूछा—"बेटा! फिर तुम आगे करोगे क्या? अँगरेजी स्कूल में न जाने से काम कैसे चलेगा? कुछ काम तो करना पड़ेगा।"

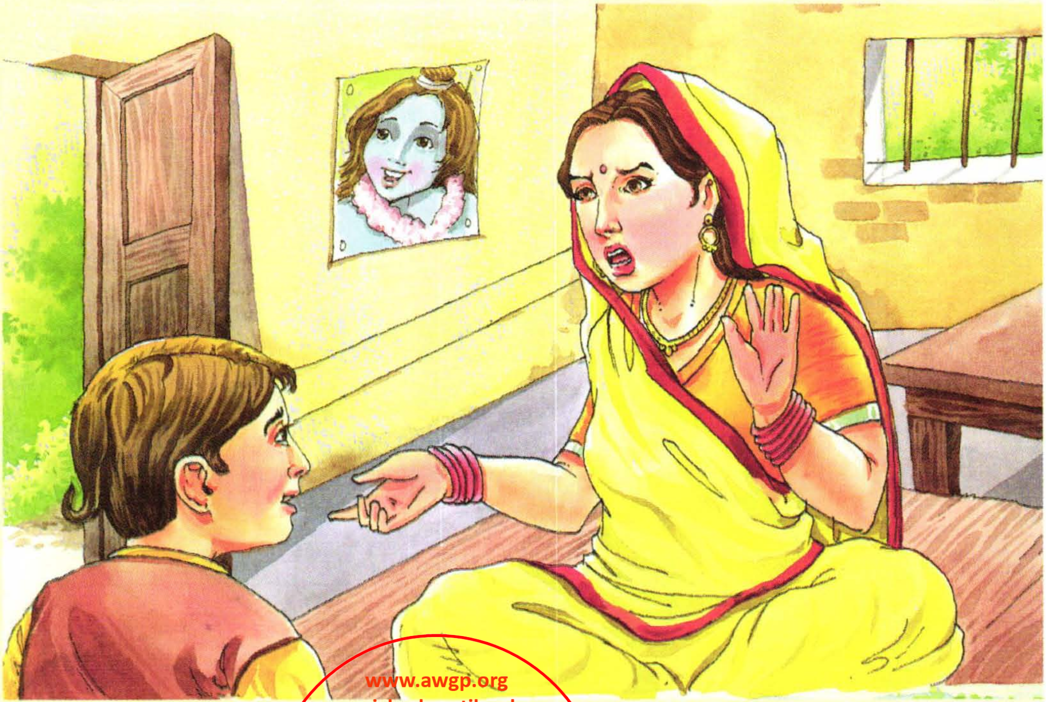

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम शर्मा ने माता से कहा—"ताई! मैं नौकरी नहीं करूँगा। घर-घर कथा भी नहीं कहूँगा। मैं स्वावलंबी स्वयं बनूँगा और अन्य लोगों को स्वावलंबी रोजगार सिखाऊँगा।" माता पुत्र का मुख देखती रही।

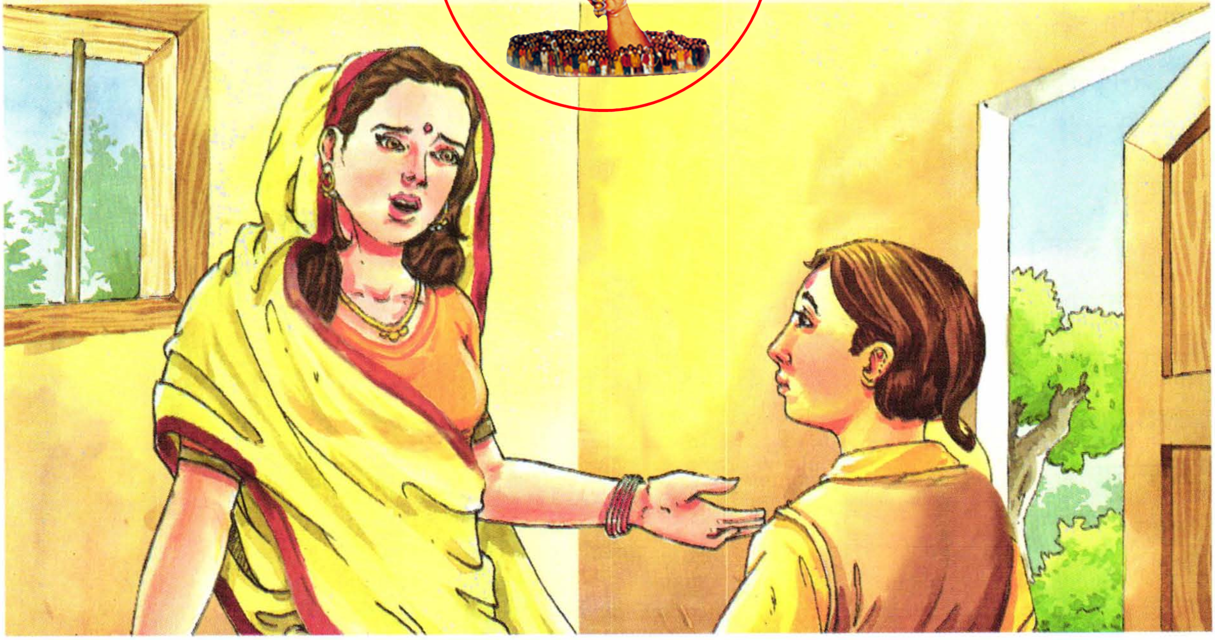

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन बालक श्रीराम ने कहा—''आत्मरक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र सीखने में कुछ बुराई नहीं है। इस विद्या का बुरे कामों में उपयोग करना बुरा है। मैं लाठी, भाला, तलवार चलाना सीखूँगा। मैं हरिया गुरु से यह विद्या लूँगा।'' समझाया कि हरिया गुरु हमसे नीची जाति का आदमी है, उसे गुरु बनाना ठीक नहीं है, पर बालक श्रीराम अपने विचार पर दृढ़ रहा और शस्त्र विद्या सीखने लगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम का शरीर इकहरा था पर, उसमें गजब की फुरती एवं चुस्ती थी। वह कुछ दिन में ही अस्त्र-शस्त्र संबंधी कई विद्याएँ सीख लिया। उसने यह विद्या अपने गाँव के अन्य साथियों को सिखा दी और गुप-चुप रूप से स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अपने साथ कुछ साथी जुटा लिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन श्रीराम ने देखा—एक अँगरेज व्यक्ति घोड़ा दौड़ाता हुआ एक भागती ग्रामीण युवती के पीछे- पीछे आ रहा है। युवती बुरी तरह से घबराई हुई है। लोग चुप खड़े हैं।

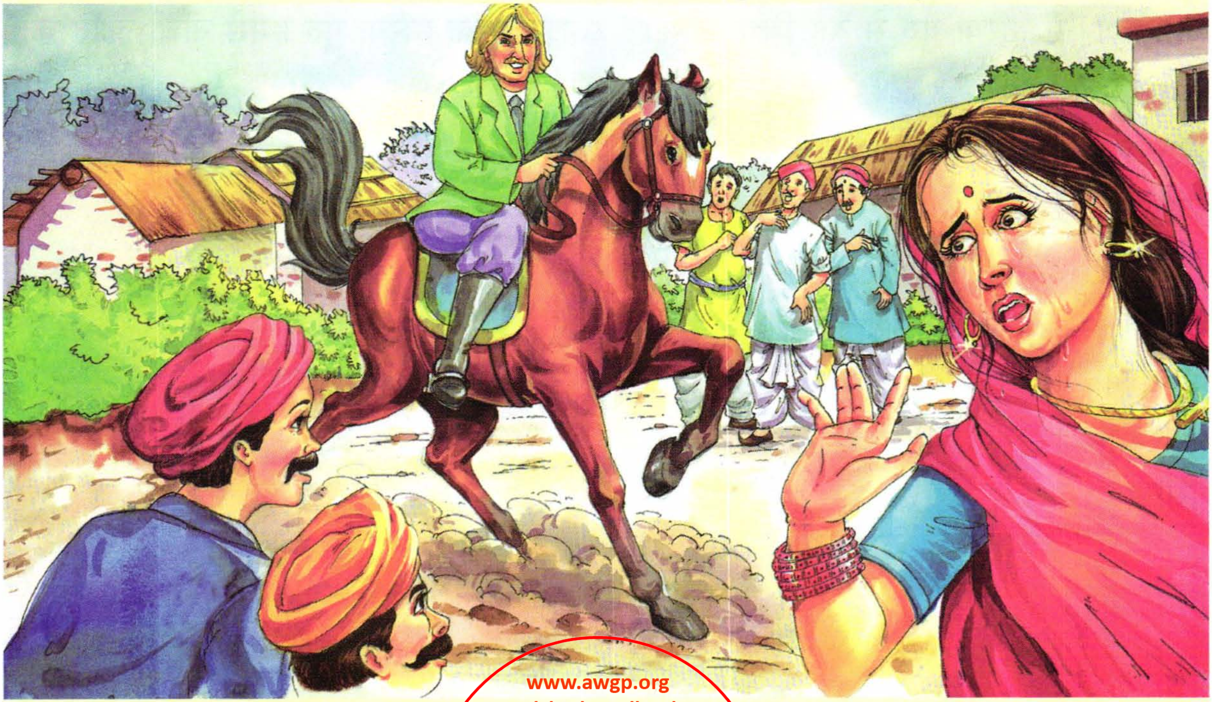

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम से यह न देखा गया। वह अँगरेज के अत्याचार की बात समझ गया और उसने छिपकर गोरे के सिर पर बड़ी ईंट मार दी। गोरे का सिर फट गया। युवती गाँव में कहीं जा छिपी और बच गई। अँगरेज बड़बड़ाता रह गया।

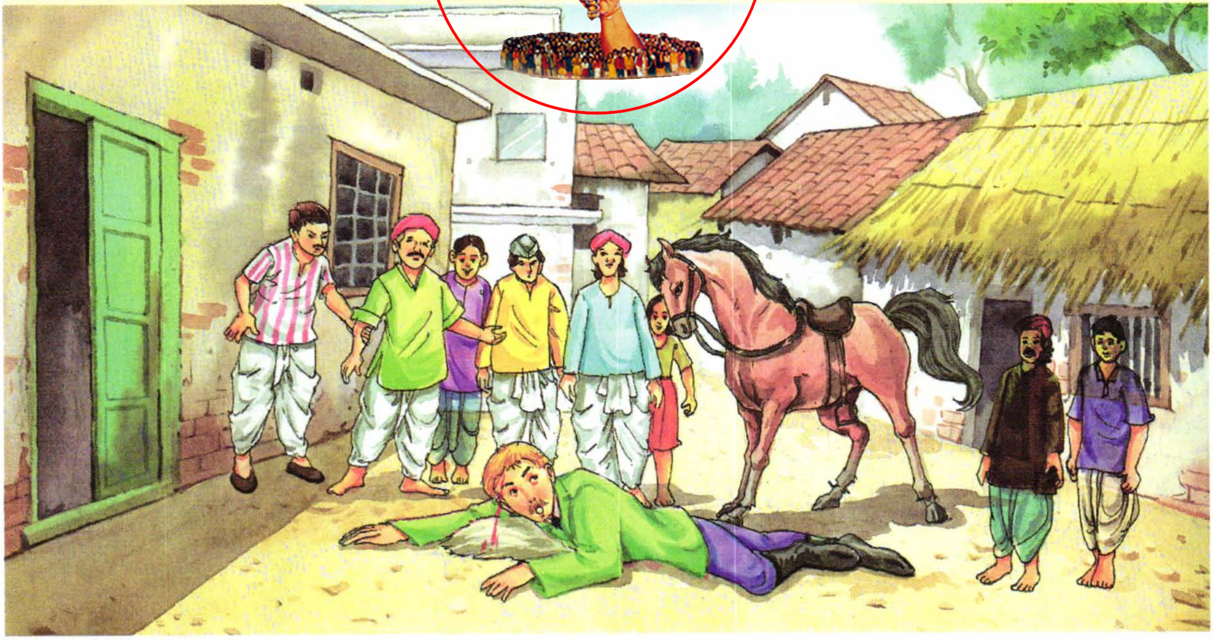

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम की समाज सेवा भी बराबर चलती रही। गाँव में उन दिनों छपको नाम की एक हरिजन महिला रहती थी। उसके हाथों में गलित कोढ़ जैसा रोग हो गया था। वह सख्त बीमार थी। बालक श्रीराम को इस बात का पता चला तो वह उसकी चिकित्सा के लिए उसके घर जा पहुँचा और जब तक वह ठीक नहीं हो गई, तब तक बराबर वह हर प्रकार के विरोध में उसकी सेवा-शुश्रूषा करता रहा।

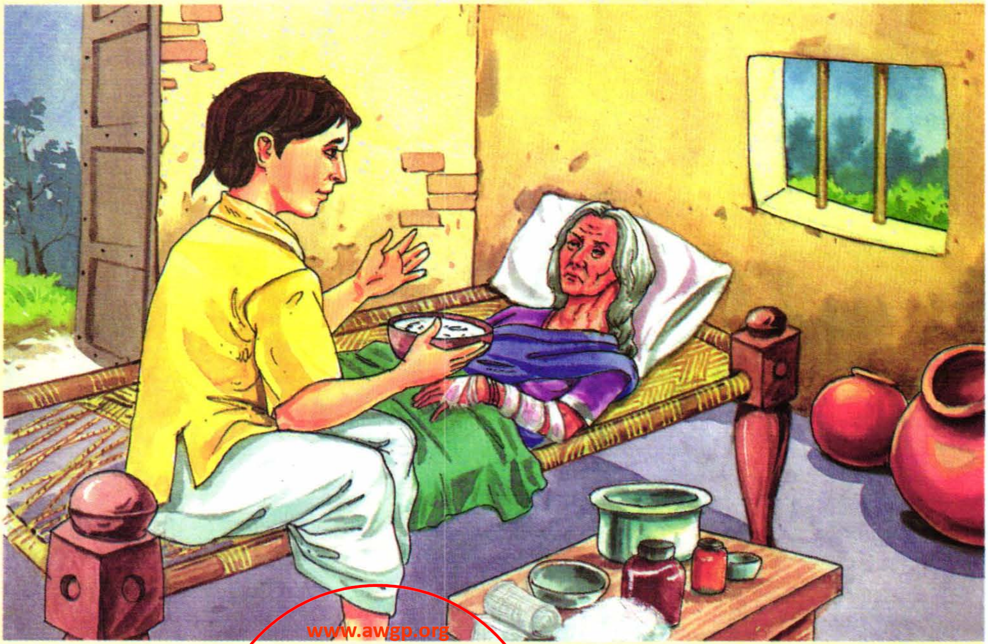

बूढ़ी अम्मा ने आशीर्वाद दिया—"एक दिन बड़ा महात्मा और बहुत से व्यक्तियों के हृदय का सम्राट बनेगा।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

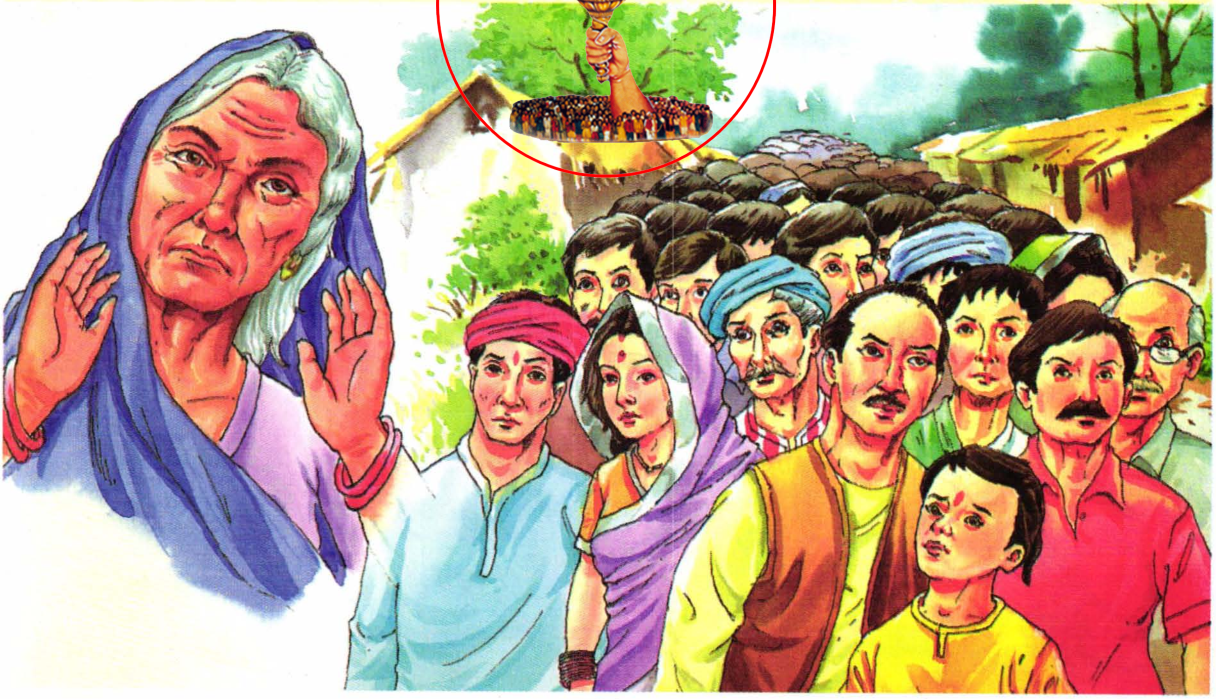

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गाँव के मदरसे से शिक्षा समाप्त कर श्रीराम आगरा आ गए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक सेवा समिति श्रीराम ने आगरे में बनाई। उसका काम अपाहिजों की सेवा तथा कपड़ा और भोजन बाँटना था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गाँव में हुब्बालाल नाम का पटवारी था। उसके आतंक से सब डरते थे। वह अच्छा आदमी नहीं था। कोई उससे बात करना पसंद नहीं करता था।

कुछ दिन बाद गाँव में श्रीराम आए। हुब्बालाल बीमार थे। श्रीराम को पता चला तो उनके पास जाकर उनकी भी सेवा की।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

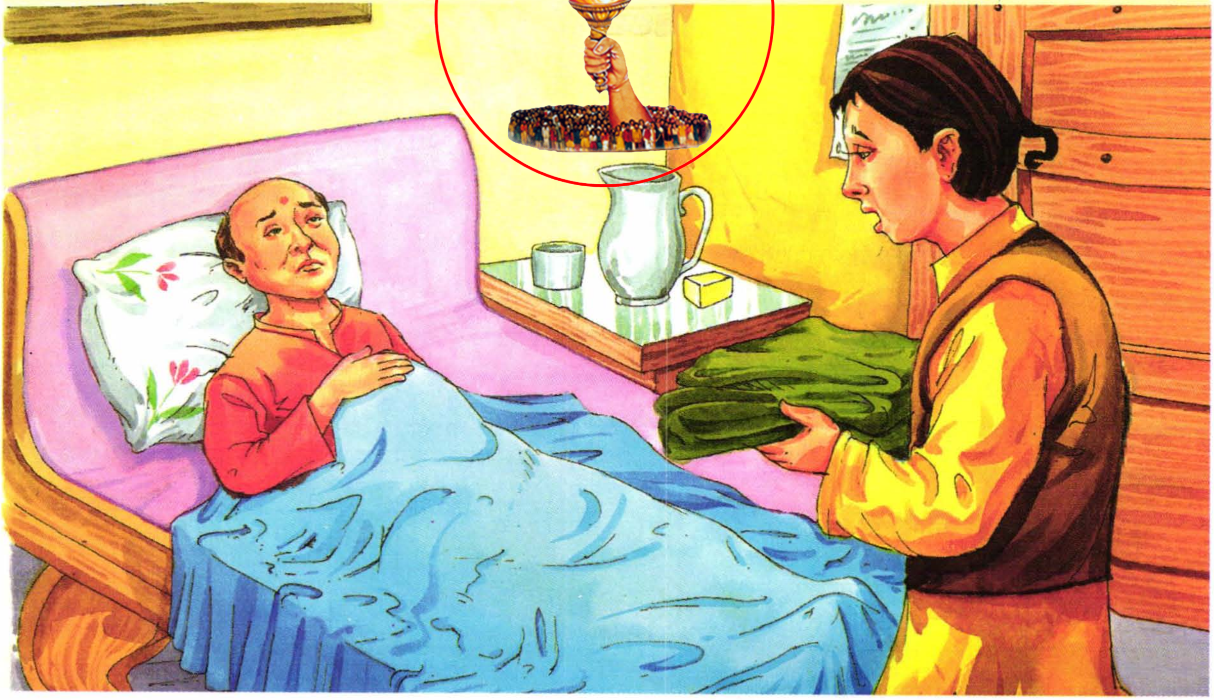

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुब्बालाल बोले—"मैंने पाप किए हैं, उन्हीं का फल भोग रहा हूँ। मैंने लोगों को सताया है इसलिए मैं बीमार हूँ।"

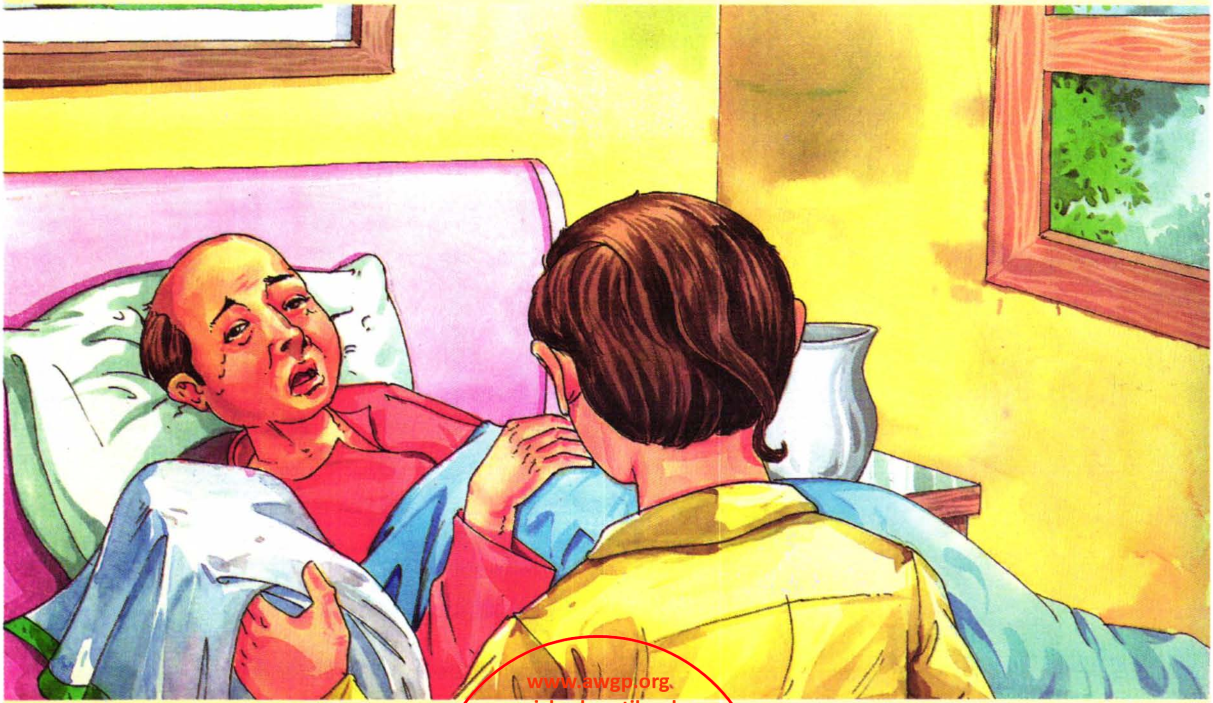

श्रीराम ने घर के बाहर लोगों की भीड़ देखी और बोले—"पाप से घृणा करो पापी से नहीं। बीमार की सेवा करनी चाहिए।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

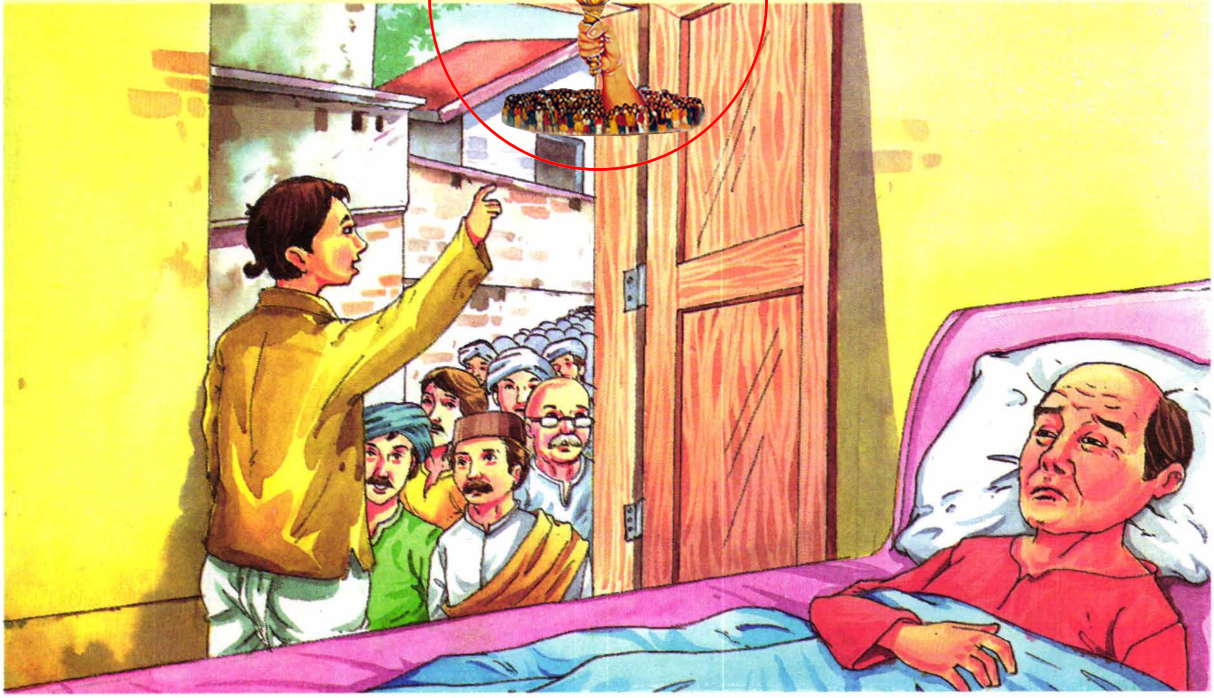

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पिता पं० रूप किशोर शर्मा ने देखा—बालक श्रीराम इस योग्य हो गया है कि इसका उपनयन संस्कार करवा दिया जाए। यह विचार मन में आते ही वह बालक श्रीराम को अपने बाल मित्र महामना पं० मदन मोहन मालवीय के पास काशी ले गए। महामना पं० मालवीय जी ने बालक श्रीराम को गौर से देखा और बड़े प्रसन्न हुए।

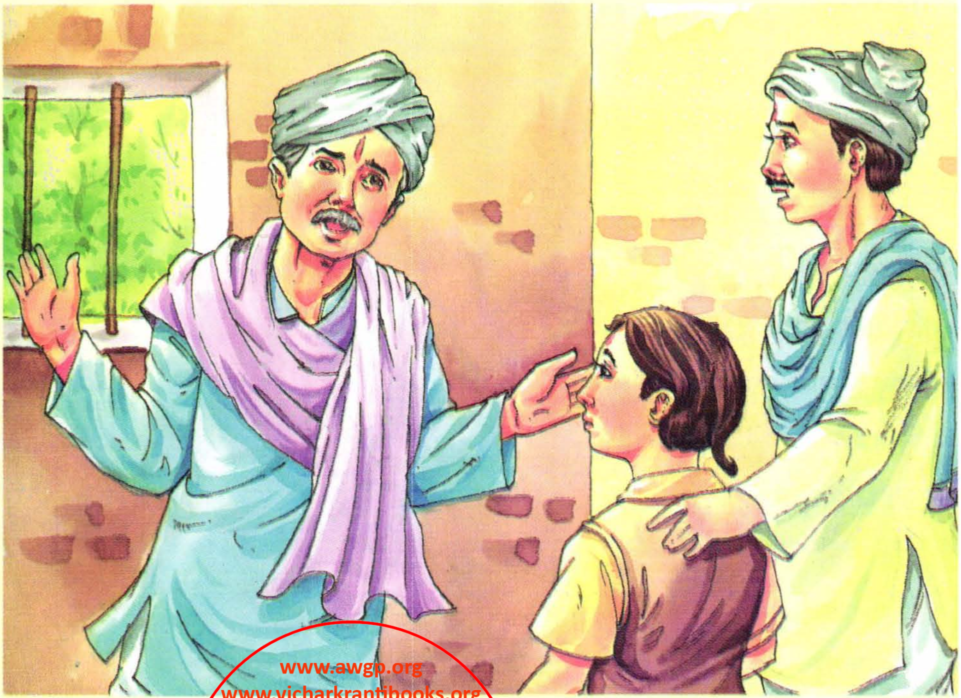

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

महामना पं० मदन मोहन मालवीय ने बालक श्रीराम का अपनी उपस्थिति में उपनयन संस्कार कराया और स्वयं बालक को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। कहा—"गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है। गायत्री की उपासना किया करना।"

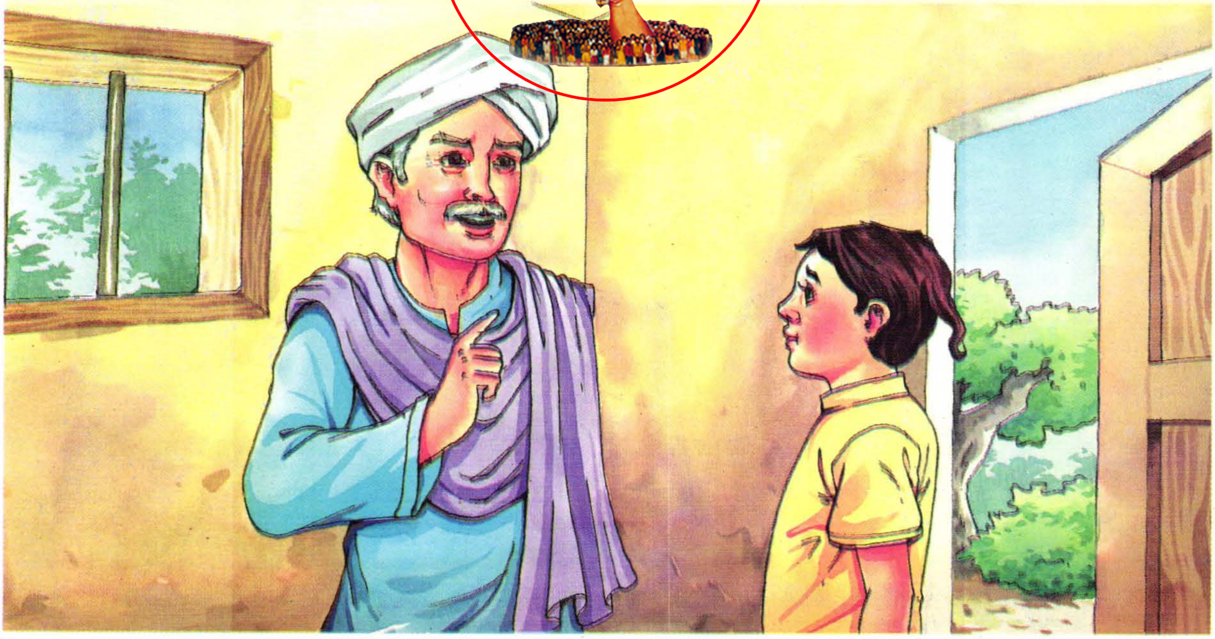

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम ने काशी से लौटते समय पिता जी से रेल में महामना पं० मालवीय जी की बात का अर्थ पूछा। पिताजी ने बताया—"इस बात का यह अर्थ है कि गायत्री मंत्र सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला मंत्र है।" बालक श्रीराम ने यह बात अपनी गाँठ बाँध ली। गायत्री मंत्र के प्रति उनके हृदय में अंकुर दृढ़तापूर्वक जम गया।

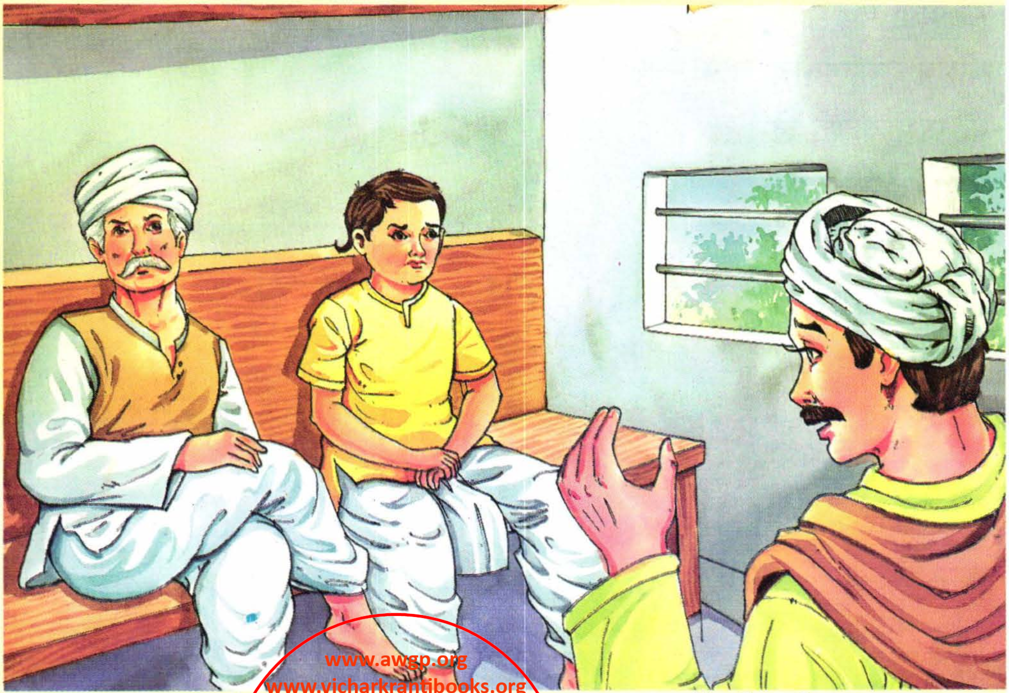

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे बालक श्रीराम गायत्री मंत्र की समझाई हुई विधिवत साधना में लीन हो गया। उसका प्रतिदिन नियमपूर्वक जाप चलने लगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १९२६ की वसंत पंचमी की भोर की घटना है। बालक श्रीराम का साधना-कक्ष अचानक अनुपम सुगंध से भर उठा और उसमें पूर्व दिशा में एक प्रकाशपुंज दिखाई दिया।

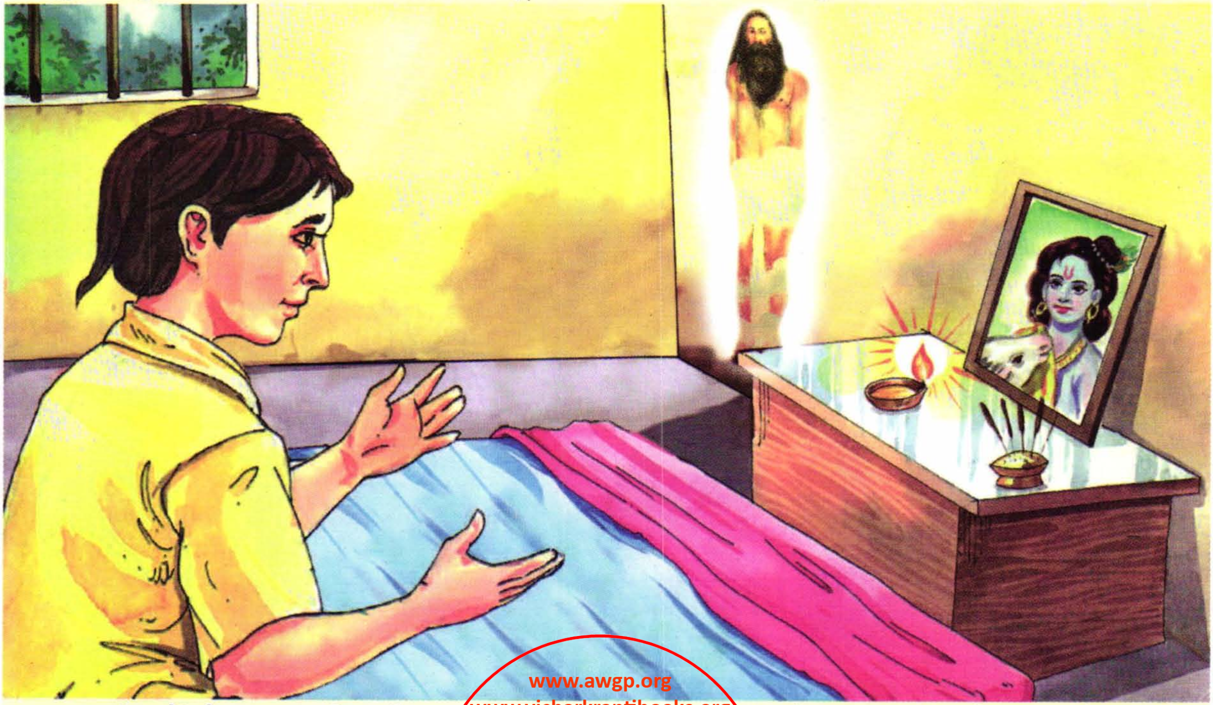

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशपुंज में से एक ऋषि की आकृति उभरी। उस आकृति ने कहा—“डरो मत! मैं तुमसे कई जन्मों से परिचित हूँ।”

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"पिछले तीन जन्मों में तुम कौन थे, तुम्हें नहीं पता। बहुत पहले तुम कबीर थे। फिर तुम समर्थ रामदास हुए। उसके बाद तुम रामकृष्ण परमहंस के रूप में जन्मे थे। तुम्हें इस जन्म में बहुत काम करने हैं।"

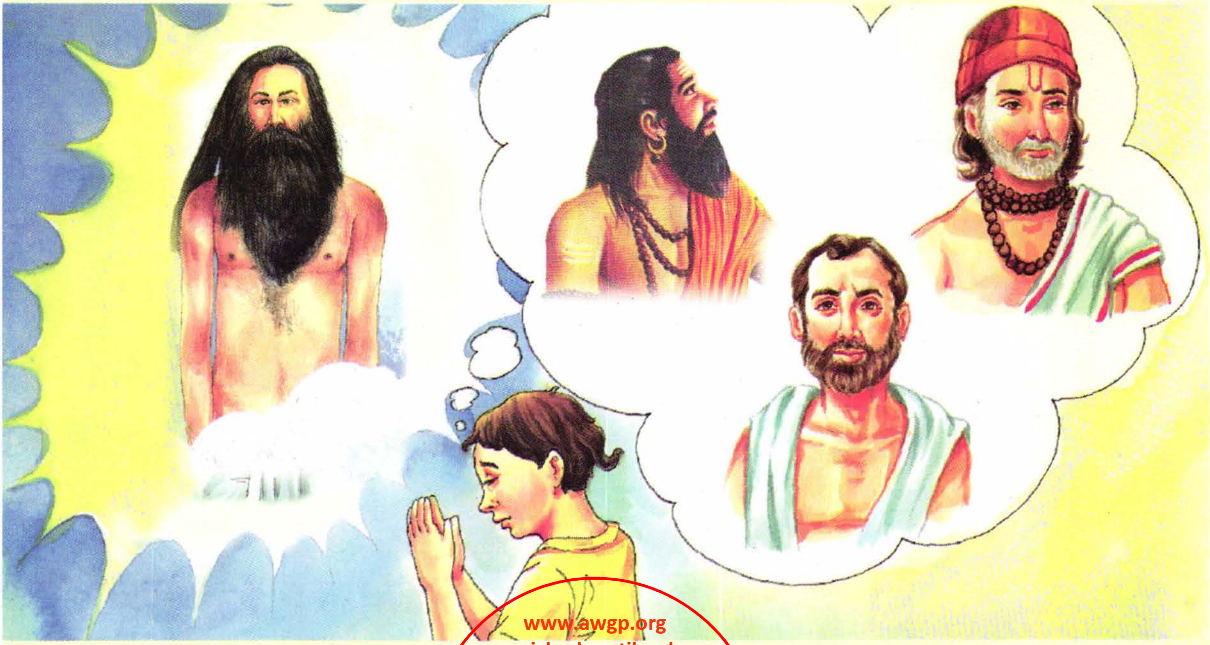

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने पिछले तीन जन्मों की जानकारी पाकर बालक श्रीराम विस्मयपूर्वक विचारमग्न हो गया। उसे लगा जैसे वह तंद्रा में हो। ऋषि ने कहा—"तुम्हें गायत्री मंत्र के चौबीस पुरश्चरण करने हैं। विधि समझाए देता हूँ।" यह कहकर उन्होंने विधि समझा दी, फिर वे अंतर्धान हो गए। उस दिन की दीपक में जागी अखण्ड ज्योति बाद में निरंतर तब से जल रही है।

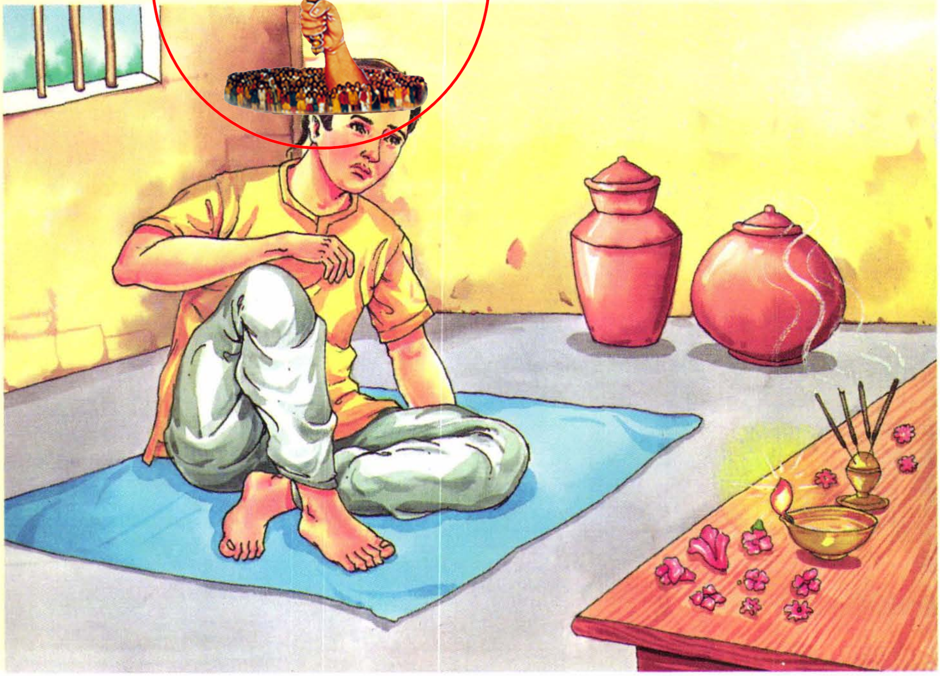

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक श्रीराम की गायत्री मंत्र–साधना धीरे–धीरे बढ़ने लगी। इधर देश में स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ा। बालक श्रीराम इस आंदोलन से अछूता नहीं रहा। वह भी स्वतंत्रता के विविध कार्यों में भाग लेने लगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सन् १९२८ में जाड़े के दिन थे। एक लँगड़ाती गाय को बाँधे दो कसाई ले जा रहे थे। बालक श्रीराम ने गाय की हालत देखी और कसाइयों से बात की। कसाइयों ने गाय की कीमत माँगी। बालक श्रीराम ने किसी तरह वह कीमत जुटाई और गाय कसाइयों से छुड़ा ली।

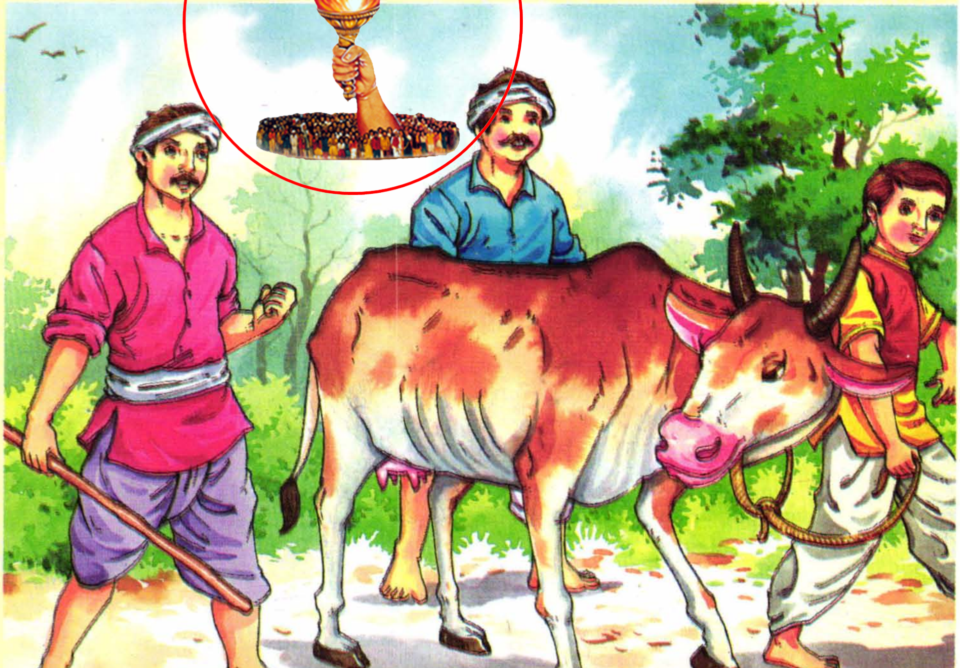

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युवक श्रीराम ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और सरकार का घोर विरोध किया। आँवलखेड़ा के पास जारखी में सरकार विरोधी जलूस में उसका नेतृत्व किया और पुलिस की मुठभेड़ में गिर जाने पर भी तिरंगा झंडा दाँतों में भींचे अपनी जगह जमे रहे। पुलिस भी वह झंडा दाँतों से पूरी तरह नहीं निकाल सकी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन था। युवक श्रीराम शर्मा भी अपने साथियों के साथ इस अधिवेशन में भाग लेने निकल पड़े, किंतु पीछे लगी सी० आई० डी० पुलिस ने इन्हें आसनसोल स्टेशन पर गिरफ्तार करवा दिया।

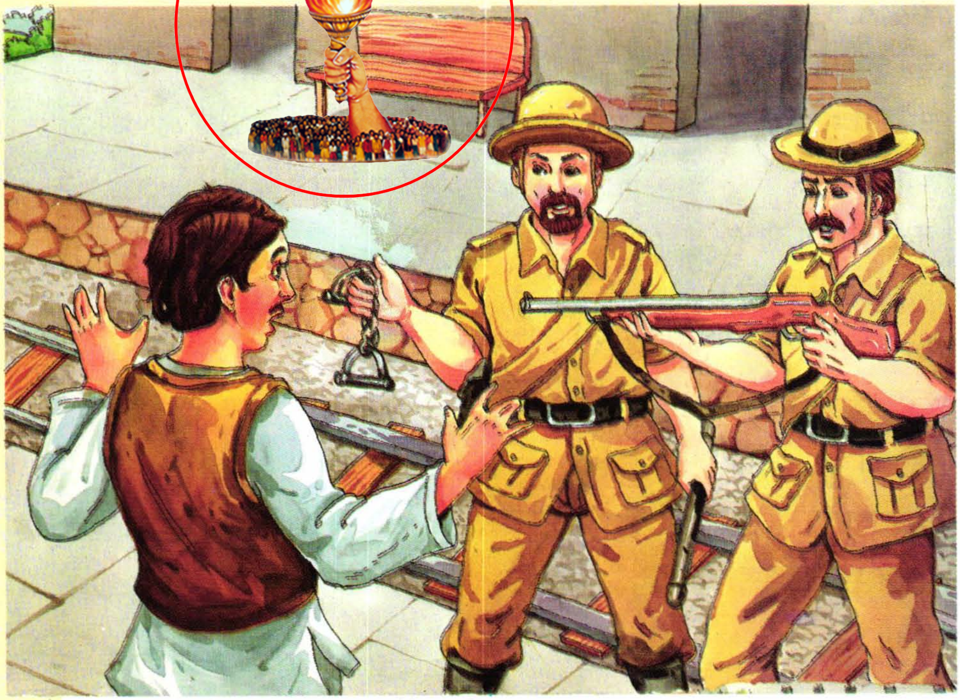

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वतंत्रता आंदोलन में जेल जाना पड़ा। आसनसोल जेल में महामना पं० मदन मोहन मालवीय, माता स्वरूप रानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, श्री देवदास गांधी जैसे देशभक्तों के साथ रहे।

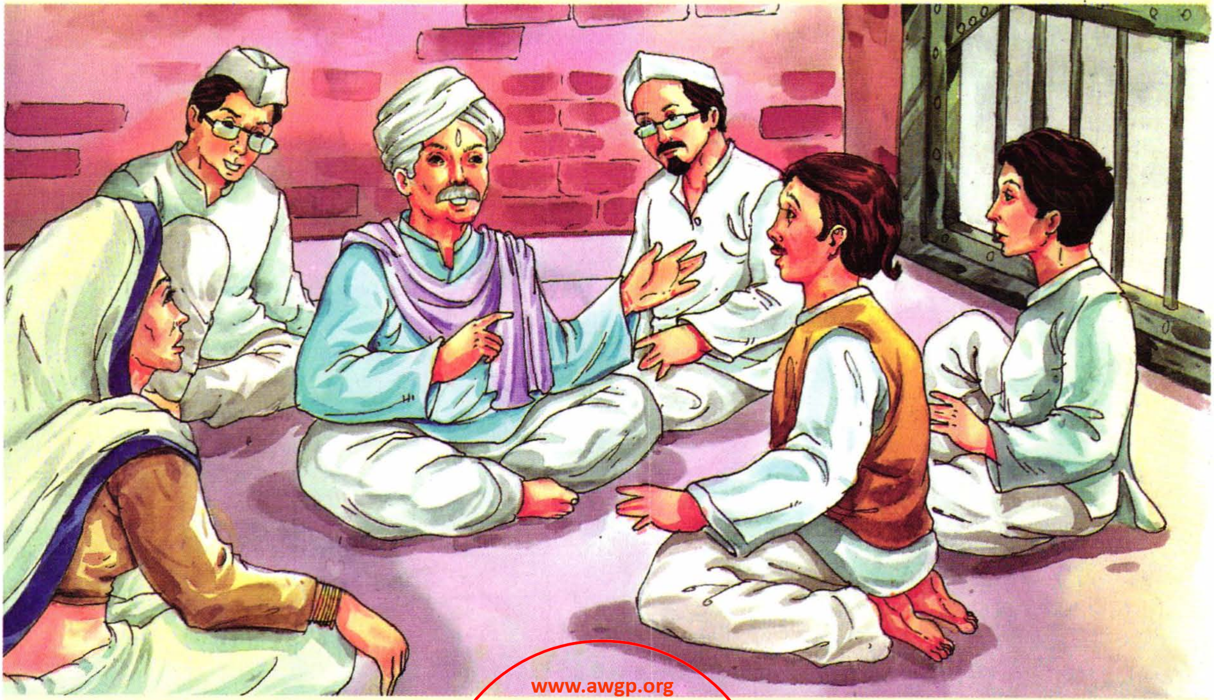

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जेल में श्रीराम शर्मा ने अँगरेजी लिखना-पढ़ना सीखा और वह भी तसले पर कोयले से लिख-लिखकर।

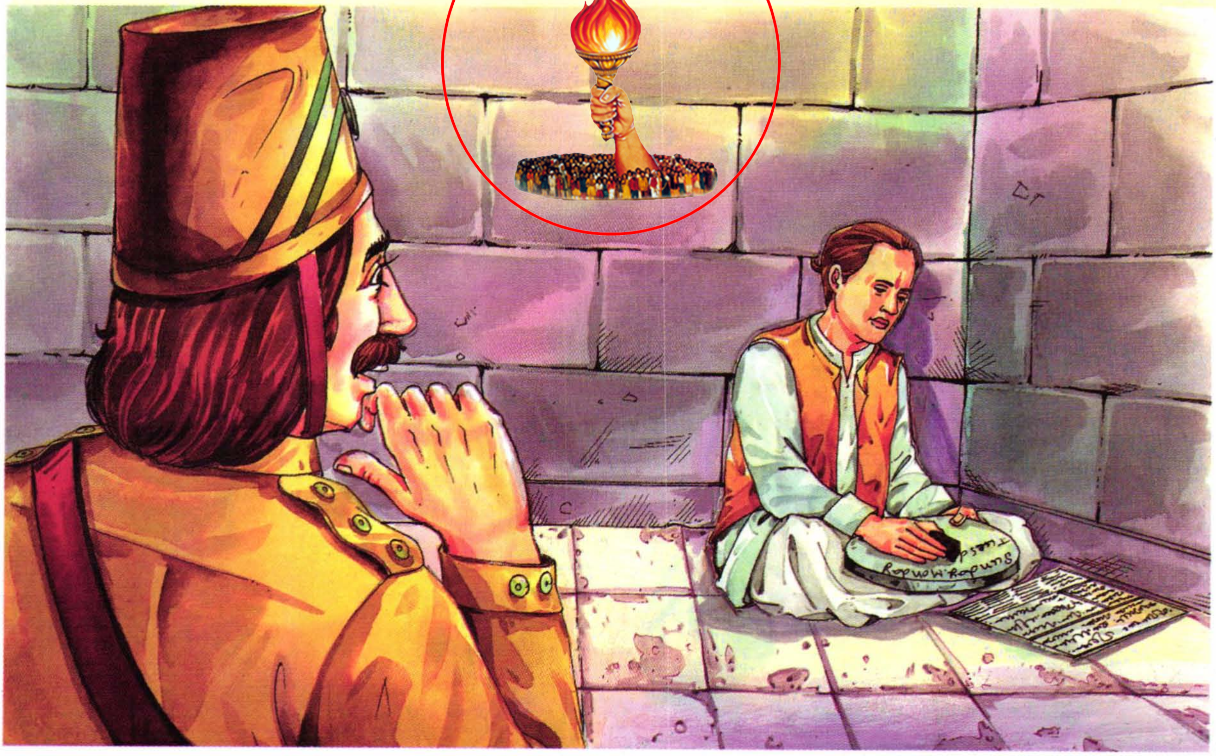

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जेल से बाहर आने पर युवक श्रीराम ने अपने गाँव में रचनात्मक कामों पर ध्यान दिया। गाँव में कताई-बुनाई के लिए एक बड़ा केंद्र खोला। नाम रखा—'बुनता घर'। ग्रामीण उद्योगों की शुरुआत की। उस समय के 'बुनता घर' के नाम और स्थान को आँवलखेड़ा गाँव के लोग आज भी जानते हैं।

आगरा जिले के खुफिया पुलिस के अँगरेज इंस्पेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा—"अभी श्रीराम कांग्रेस में है। अगर यह क्रांतिकारियों के साथ मिल गया तो तबाही मचा सकता है।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन श्रीराम साधना-कक्ष में बहुत देर तक विचार करते रहे—"यह शरीर तो कभी न कभी बूढ़ा होगा, मरेगा भी, पर इस जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? संसार के भोगों से मन भर सकता है। भोगों में कष्ट हैं, रोग हैं। जीवन को अच्छे कार्यों में लगाना ही उचित है। जीवन का हर क्षण कीमती है।"

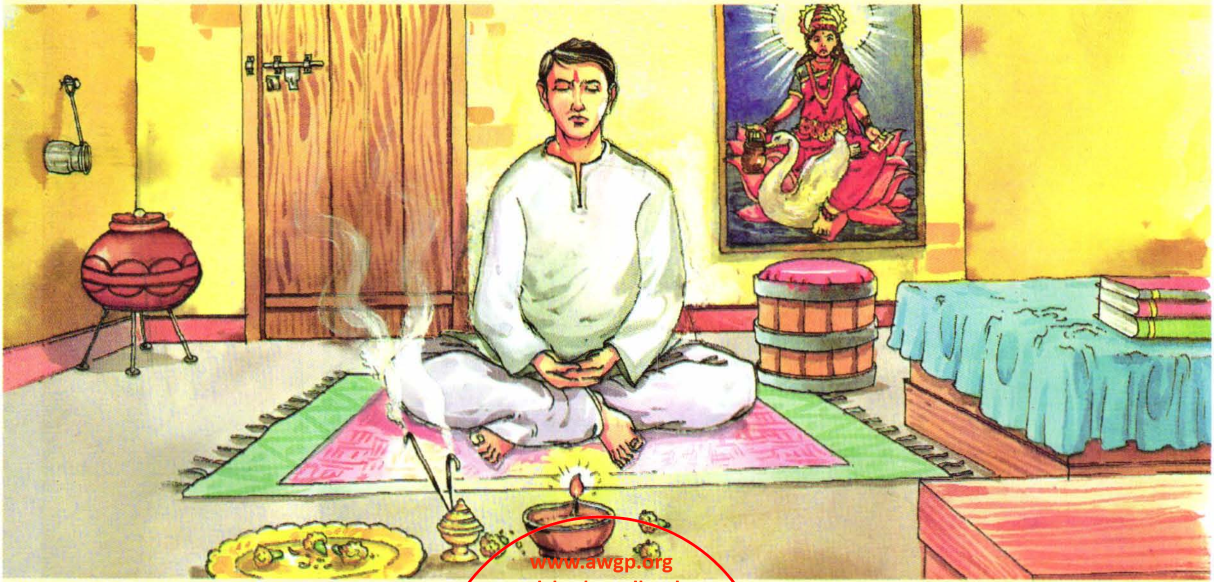

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन-संघर्ष के ऐसे ही दिनों में मार्गदर्शक गुरु का बुलावा हिमालय से आ गया। युवक श्रीराम अकेले ही हिमालय में गुरु सर्वेश्वरानंद जी से भेंट करने निकल पड़े।

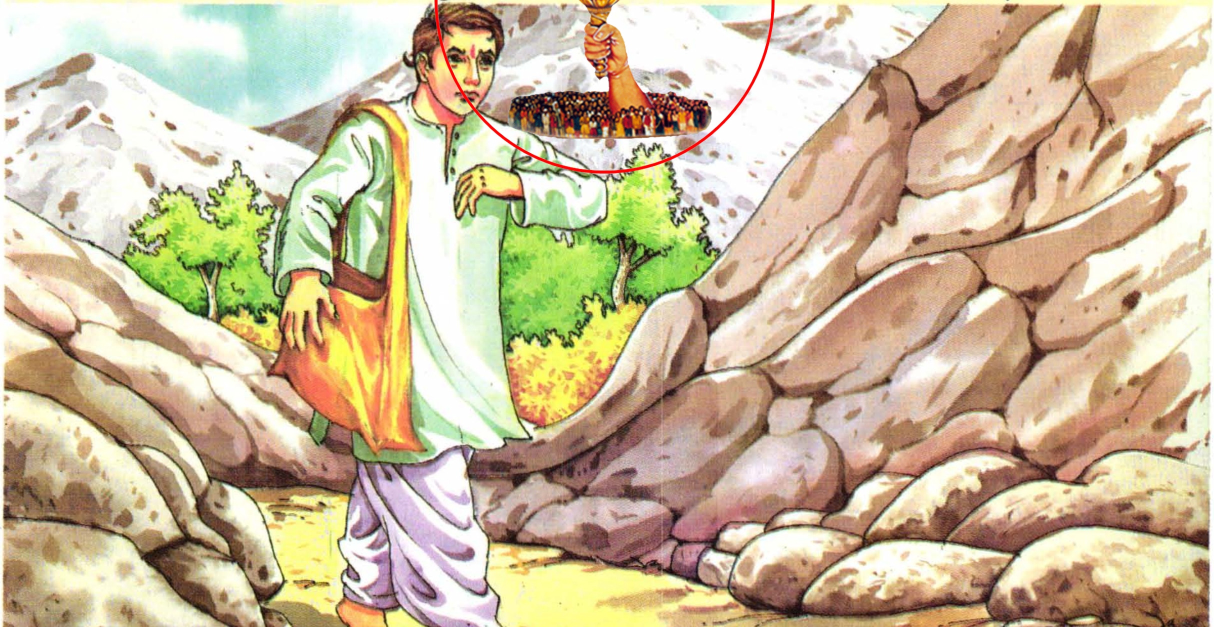

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हिमालय की यह यात्रा उस समय बड़ी कठिन थी। संकल्प था इसलिए गुरु सर्वेश्वरानंद ने भी परोक्ष सहायता देते हुए इन्हें अपने निकट बुला लिया और आगे का सारा कार्यक्रम इन्हें समझाया। इन्हें इससे बहुत बल और प्रोत्साहन मिला।

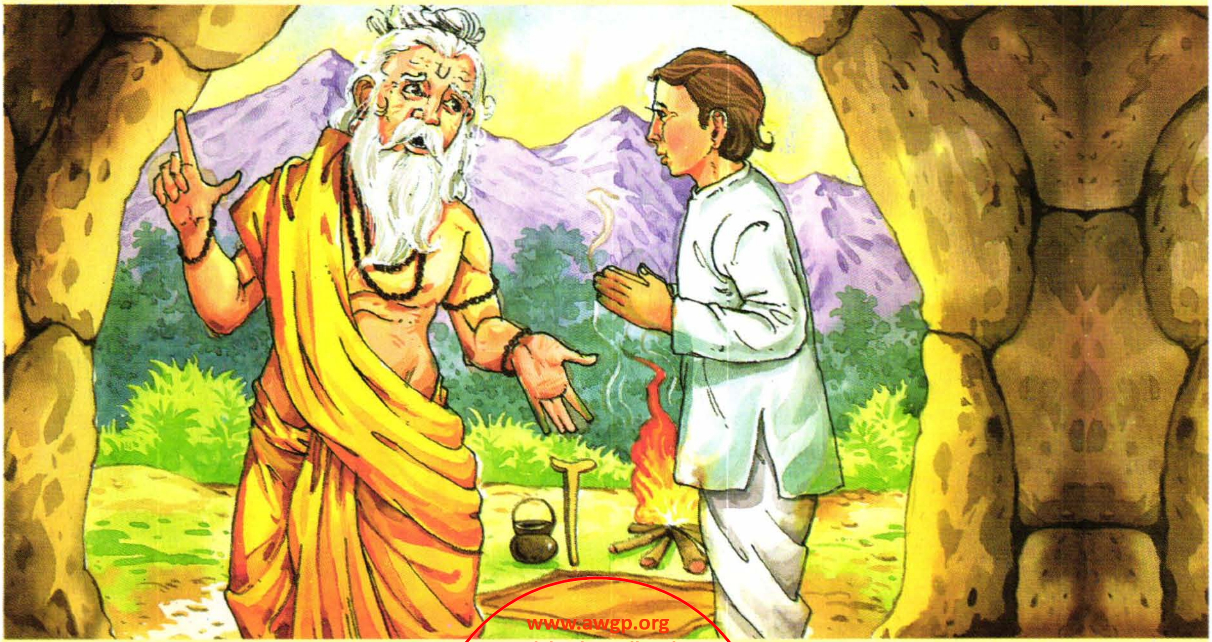

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हिमालय तक पहुँचने की यह लंबी यात्रा थी। जगह-जगह पर उन्होंने आश्रम देखे। साधु-संन्यासियों के विविध क्रिया-कलाप देखे और उनके जीवन पर गहराई से विचार किया। उन्होंने देखा कि साधु-संन्यासियों की बहुत बड़ी संख्या बेकार, निठल्ले, निरक्षर और राष्ट्र-संपत्ति नष्ट करने वालों की है। इनके सुधार के लिए मन में संकल्प लिया।

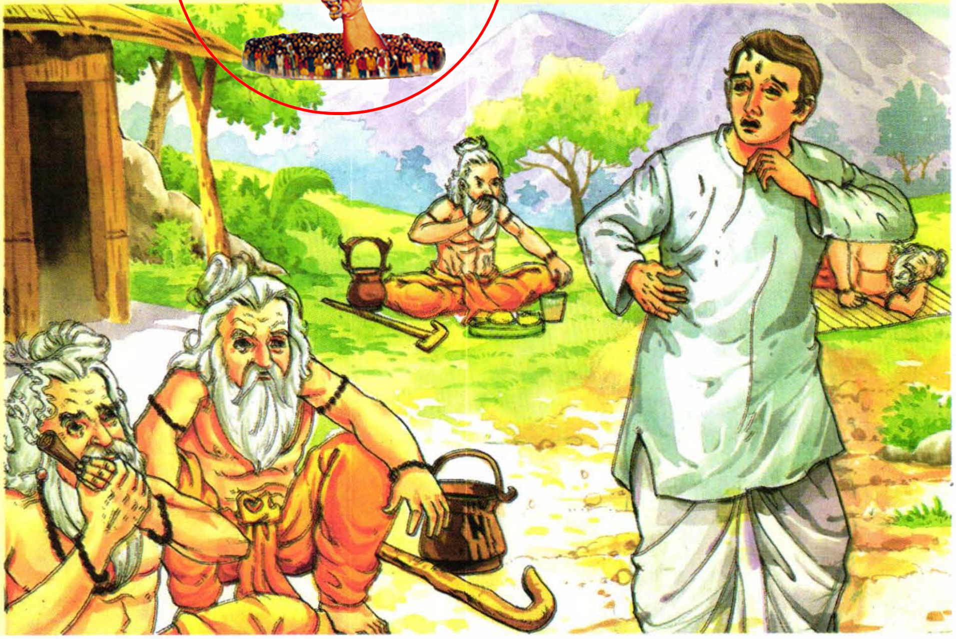

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हिमालय-यात्रा से लौटने के बाद युवा श्रीराम का ध्यान गाँव के पशुधन और खेती-बारी के कामों की ओर गया। इनके सुधार और उचित संरक्षण के लिए युवा श्रीराम ने छोटी-छोटी सस्ती पुस्तकें लिखीं और उन्हें प्रकाशित कराया। इसी काल में उन्होंने दैनिक समाचारपत्र 'सैनिक' में पत्रकारिता का प्रशिक्षण लिया और राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविताएँ लिखीं।

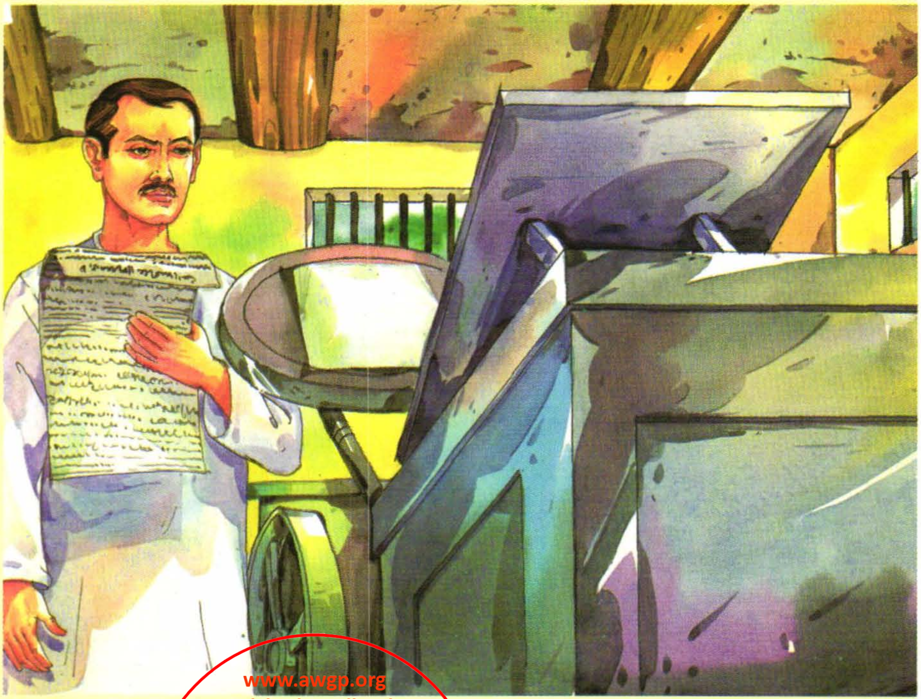

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इन्हीं दिनों में युवा श्रीराम महात्मा गांधी से मिलने साबरमती आश्रम गए और उनकी कार्यपद्धति देखी। वह शांति निकेतन में कविवर श्री रवींद्रनाथ ठाकुर से भी मिले और कुछ दिन बाद महर्षि अरविंद से मिलने पांडिचेरी भी पहुँचे। इस समय उन्होंने देश की लंबी यात्राएँ कीं।

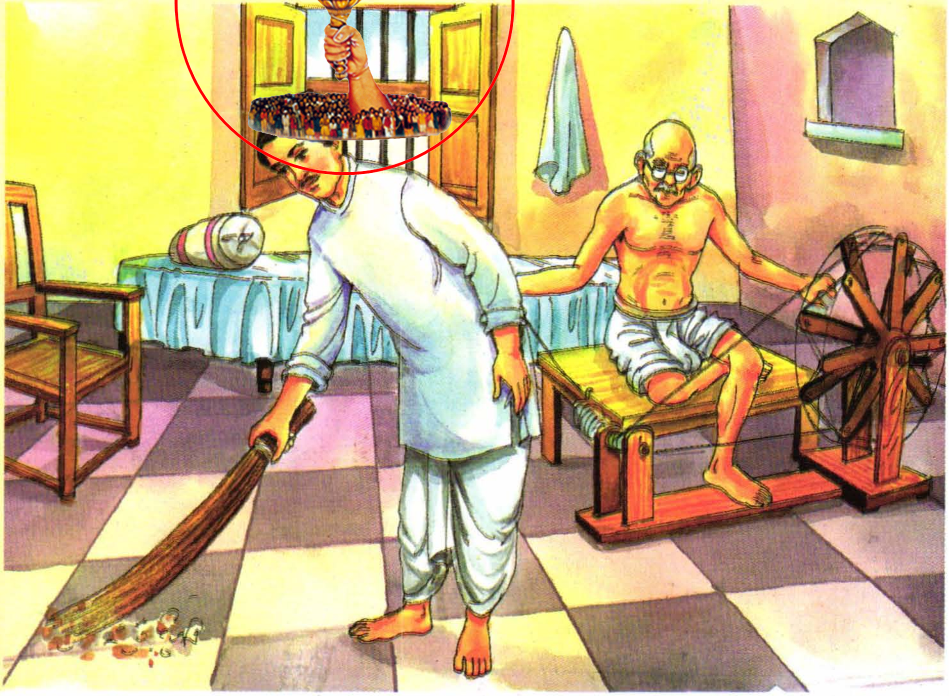

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गांधी जी, महर्षि अरविंद और गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर से मिलने के बाद श्रीराम ने देश के अनेक भागों की यात्रा की और देश की हालत का निकट से परिचय प्राप्त किया। देखा लोग गरीब, निरक्षर और बहुत कम जानकारी रखने वाले हैं। इस युवक ने उन्हें शिक्षित करने और जानकारी देने के लिए उचित उपायों की खोज की। इन्हीं उपायों में एक उपयोगी उपाय उसे पत्रिका प्रकाशन का लगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जनसाधारण में चेतना फैलाने के लिए मुझे प्रयास करना पड़ेगा। लोग कम पढ़े हैं। बड़ी पुस्तकें कैसे पढ़ेंगे—यह विचार कर आध्यात्मिक एवं सामाजिक विषयों पर छोटी-छोटी पुस्तकें एवं पैंपलेट प्रकाशित किए और उन्हें वितरित करा दिया।

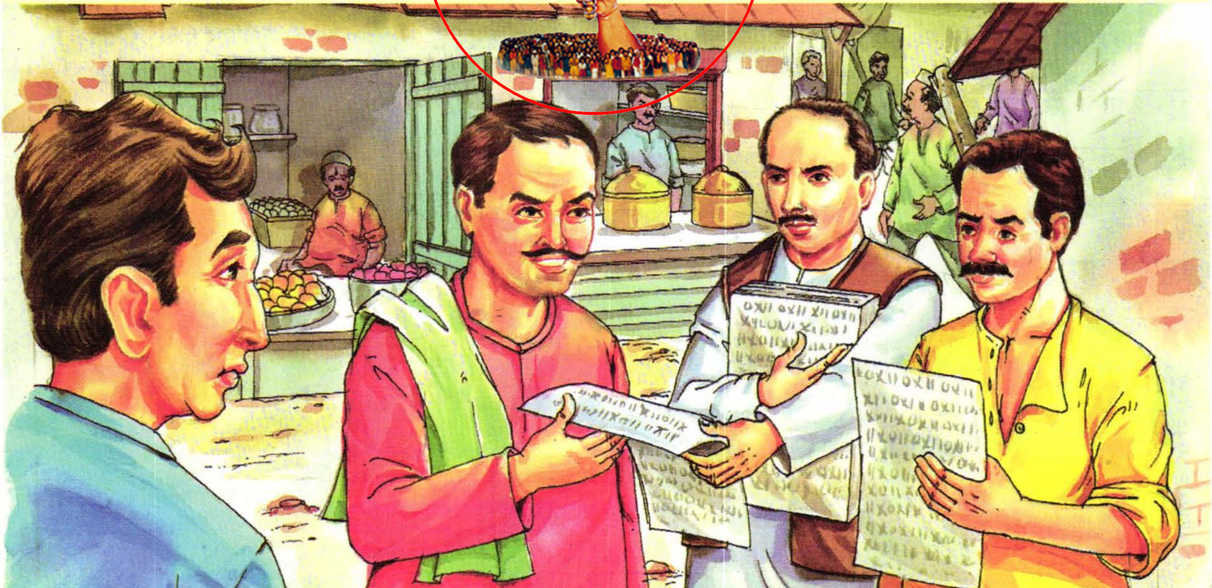

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम गाँव के हाट-बाजार में प्यासों को पानी पिलाते और पशु चिकित्सा संबंधी परचे बाँटते थे

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पं० श्रीराम शर्मा के लेख सरल भाषा में लिखे तथा उपयोगी बातों से भरे हुए थे। इन लेखों में लिखी बातें सबके हित की थीं तथा किसी धर्म विशेष से जुड़ी न थीं। इनमें जीवन की अनुभूति भरी हुई थी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सभी मानव ईश्वर की संतान हैं। इनमें न कोई ऊँच है और न नीच। जात-पाँत ईश्वर की बनाई नहीं है। ये सब भेद ऊपरी हैं। सबमें आत्मा एक समान है। लोगों ने अनुभव किया कि —"बात बिलकुल सही है। हमारे आपसी भेद बेकार हैं।"

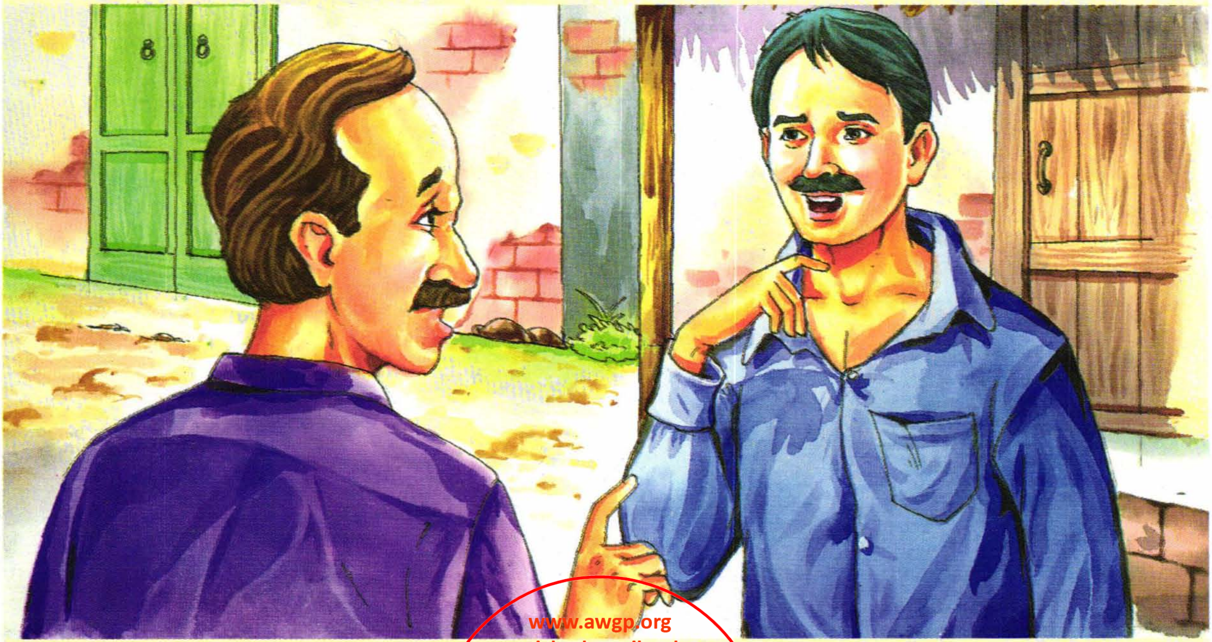

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सन् १९३७ में 'अखण्ड ज्योति' मासिक पत्रिका का पहला अंक आगरा से प्रकाशित हुआ। उस पहले अंक की प्रति उन्होंने गौरी नाम की कन्या द्वारा अपने साधना कक्ष में ज्योति के सामने रखवा दी, जिस पर उस कन्या ने रोली का स्वस्तिक बनाकर फल, फूल और अक्षत चढ़ा दिए।

यह अपूर्व कन्या गौरी उस दिन कहाँ से अचानक उनके घर में आ गई थी, यह आज तक पता नहीं है।

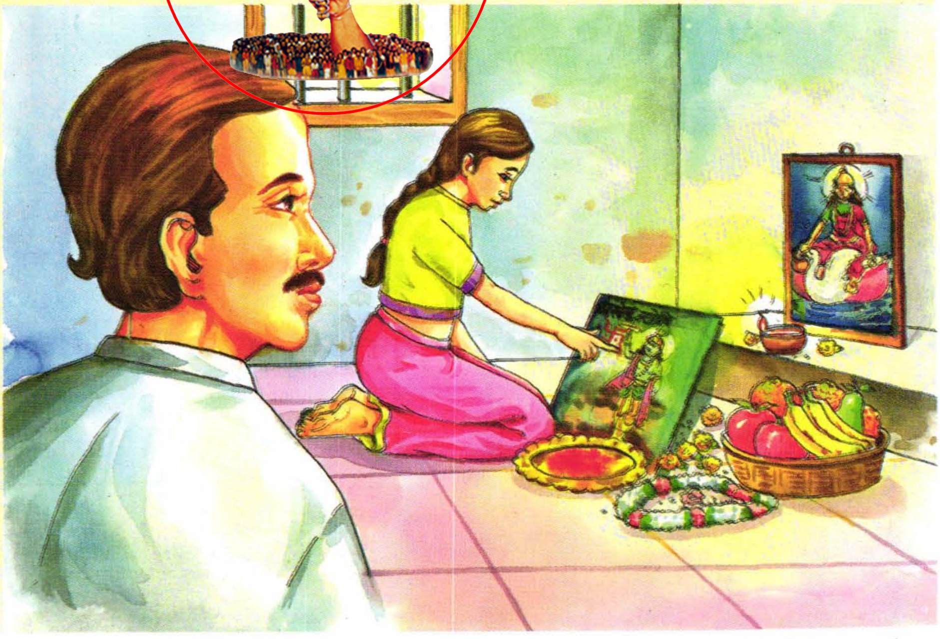

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ समय बाद मथुरा में 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का कार्यालय बनाने के लिए एक मकान किराये पर लिया। फिर वह मकान बदला और नया मकान घीयामंडी में किराये पर ले लिया। इस मकान में प्रेत-आत्माओं का निवास था। मकान के ऊपरी भाग में रोज धमा-चौकड़ी मचती। एक दिन रात में आचार्य जी ऊपर लालटेन लेकर गए और प्रेत-आत्माओं को संबोधित करके बोले—"आप भी रहो और हमें भी रहने दो। ऊपर सात कमरों में आप रहो और नीचे हमें रहने दो।" प्रेत-आत्माओं ने कोई उत्तर नहीं दिया किंतु इस घटना के बाद घर में फिर धमा-चौकड़ी सुनाई नहीं दी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

यह द्वितीय विश्वयुद्ध का संघर्षपूर्ण काल था। वस्तुएँ दिन-प्रतिदिन महँगी हो रही थीं और जगह-जगह देश में दंगे-फसाद हो रहे थे। आचार्य जी शांत चित्त से इन हलचल भरे दिनों में अपने चिंतन, मनन और साधना में लगे रहे।

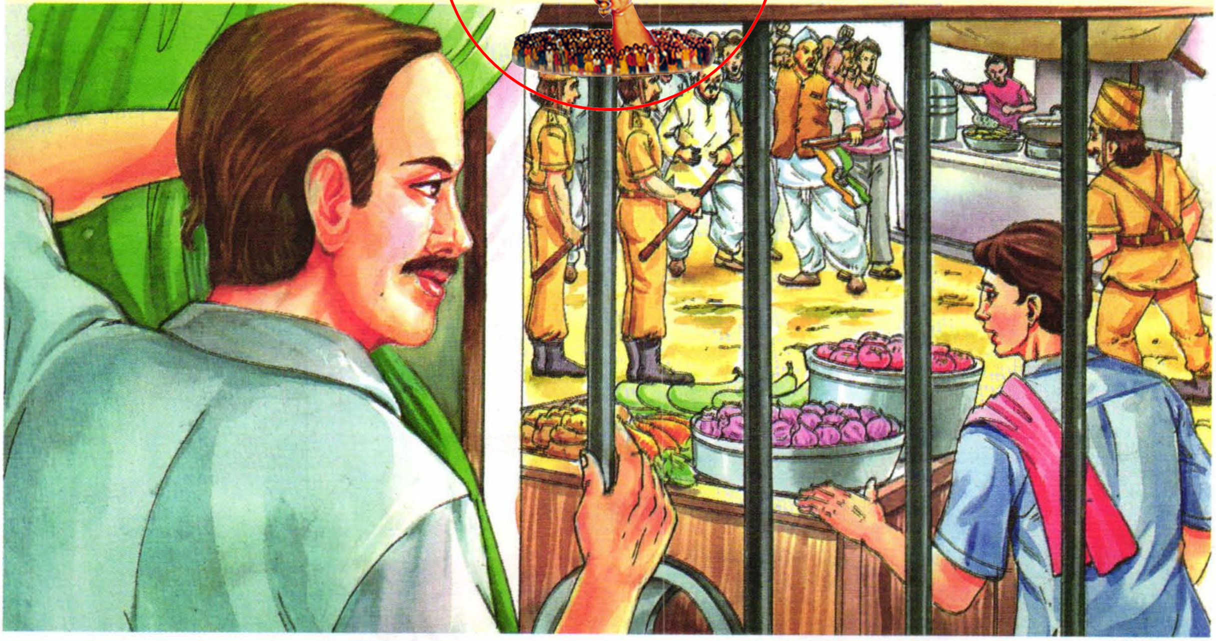

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १९४३ में प्रथम पत्नी का निधन हो गया। गुरुसत्ता के दिए गए पूर्व निर्देश पर आपने पूर्व जन्म की सहचरी भगवती देवी शर्मा से विवाह किया, जिन्होंने इनके परवर्ती जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और जो वंदनीया माता जी के रूप में समस्त विश्व में श्रद्धाभाजन बनी हैं।

आचार्य जी को मार्गदर्शक सत्ता ने अपने प्रथम दर्शन में यह संकेत दिया था—"तुम्हारे विवाहित होने से मैं प्रसन्न हूँ। इसमें बीच में व्यवधान तो आएगा पर पुनः पूर्वजन्मों में तुम्हारे साथ रही सहयोगिनी पत्नी के रूप में मिलेगी जो आजीवन तुम्हारे साथ रहकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।" यह पूर्व सहयोगिनी वंदनीया माता जी ही थीं।

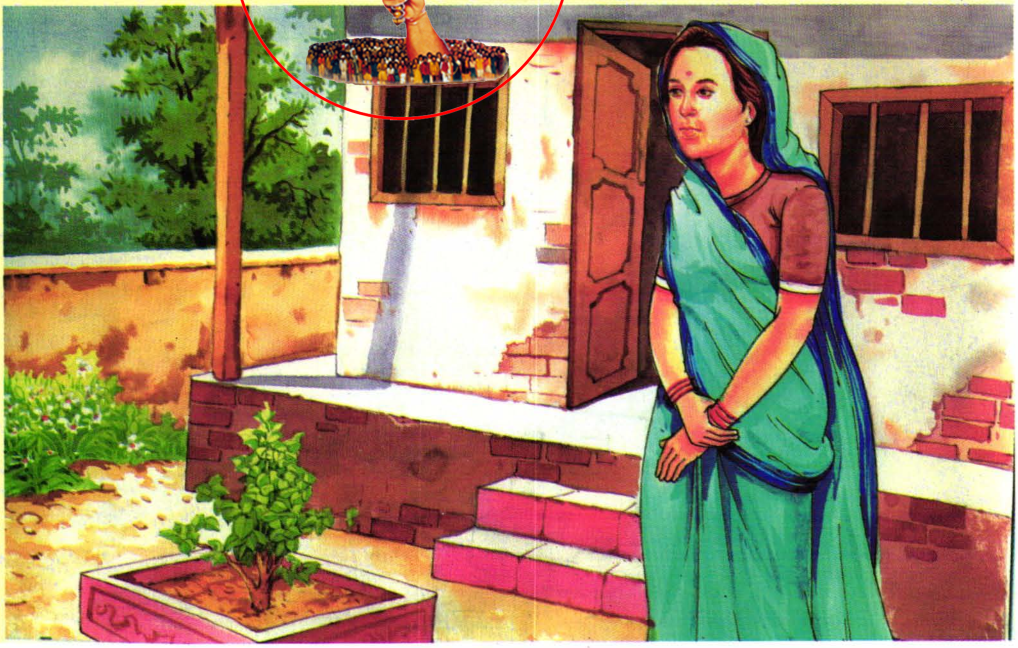

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वंदनीया माता जी का जन्म आगरा के एक संपन्न जमींदार घराने में हुआ था। पूर्वजों में दया, दान, उदारता और परोपकारिता की भावना प्रधान होने के कारण वे अपने क्षेत्र में अत्यंत सम्मानित एवं यशस्वी रहे। पिता श्री यशवंत सिंह जी भी अपने क्षेत्र में बड़े प्रभावशाली जमींदार थे। बालिका भगवती देवी का बचपन अत्यंत लाड़-चाव और स्नेहयुक्त संरक्षण में बीता था। भक्तिभाव के संस्कार आप में बचपन से ही थे। इन संस्कारों को पुष्पित-पल्लवित होने का अवसर पूर्णरूप से आचार्य जी की सहभागिनी बनने पर मिला।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वंदनीया माता जी को उन दिनों में बहुत कार्य करने पड़ते थे। गऊ की सेवा करना, उसे जौ खिलाना, अतिथियों के लिए भोजन बनाना। [illegible] के पत्रों को पढ़ना, आचार्य जी की साधना के समय उनकी व्यवस्था को देखना इत्यादि अनेक काम उनके जिम्मे थे। वे इन कामों को बड़े अच्छे रूप से संपन्न करती रहीं।

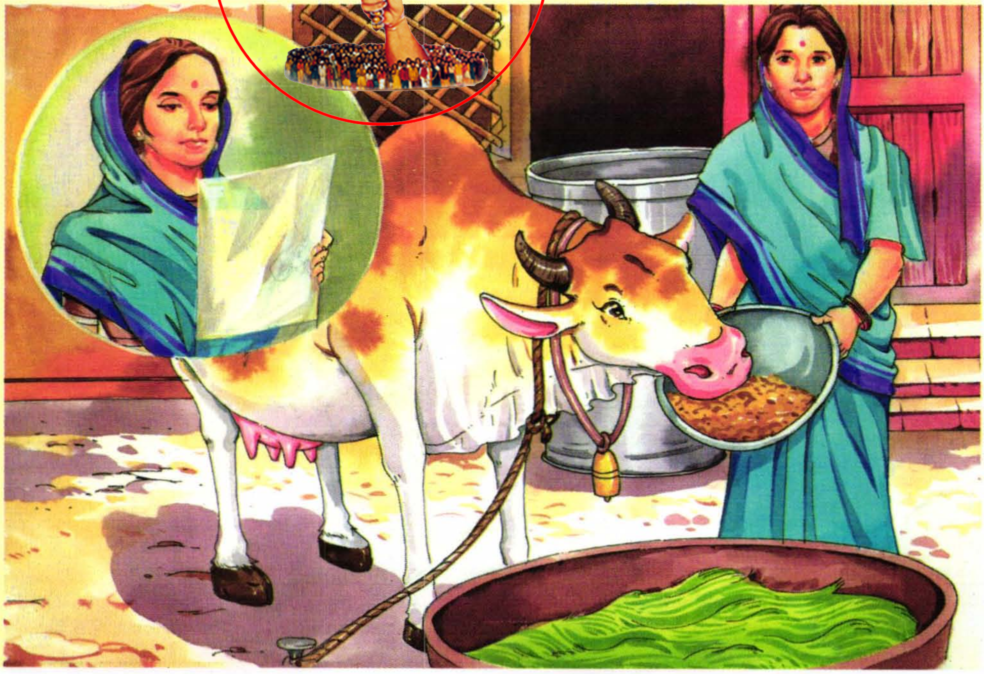

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन पं० श्रीराम शर्मा ने अपने शुभचिंतकों और सहयोगियों के सहयोग से एक छोटी सी प्रेस अपने किराये के मकान में लगा ली। यह काम नया था पर, वह परिश्रम से नहीं घबराए। प्रेस के हर काम में सहयोग दिया तथा परिवार के सदस्यों का सहयोग लिया।

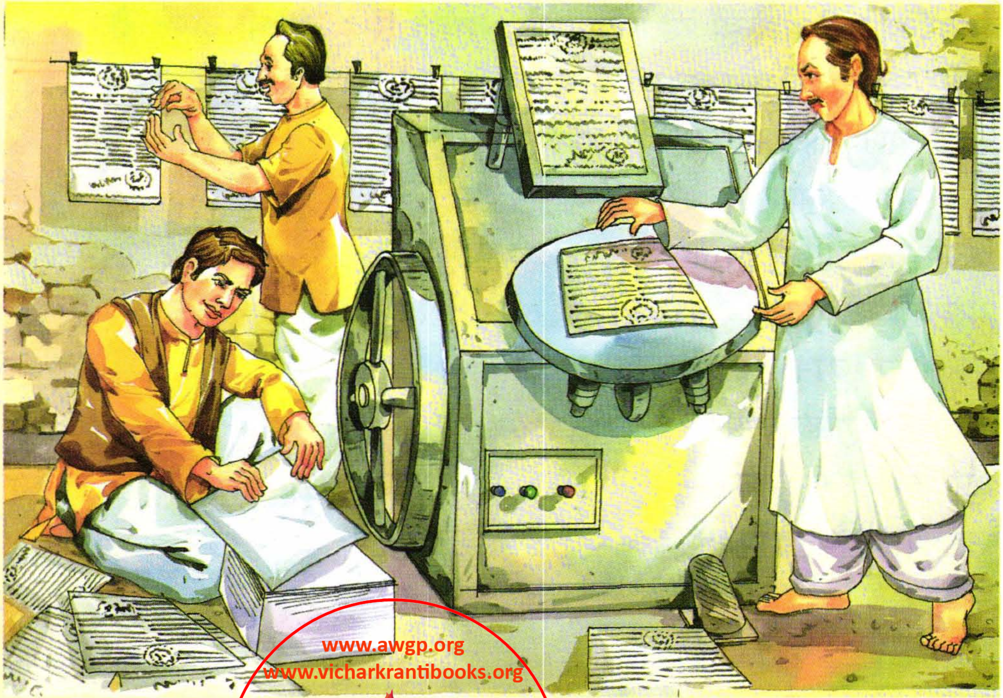

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तिगत संपर्क साधने और शिक्षा देने के लिए शिविर लगाए और प्रतिदिन पत्र लिखे। जनसाधारण से संबंध बनाया। लोगों में अपने कार्य की ओर रुचि पैदा की।

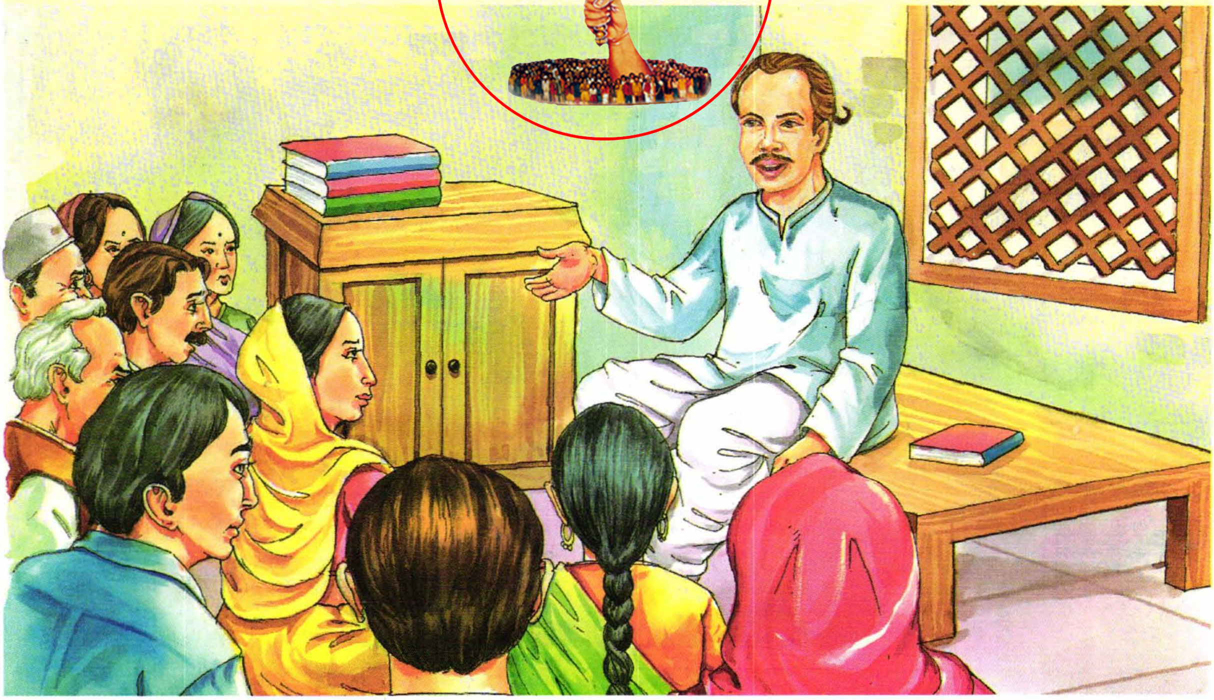

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पत्रिका के प्रकाशन और संपादन में उन्होंने जी-तोड़ मेहनत की। साथ ही उनकी गायत्री साधना भी अथक रूप से चलती रही। वह अवसर पाते ही लिखने-पढ़ने में जुट जाते।

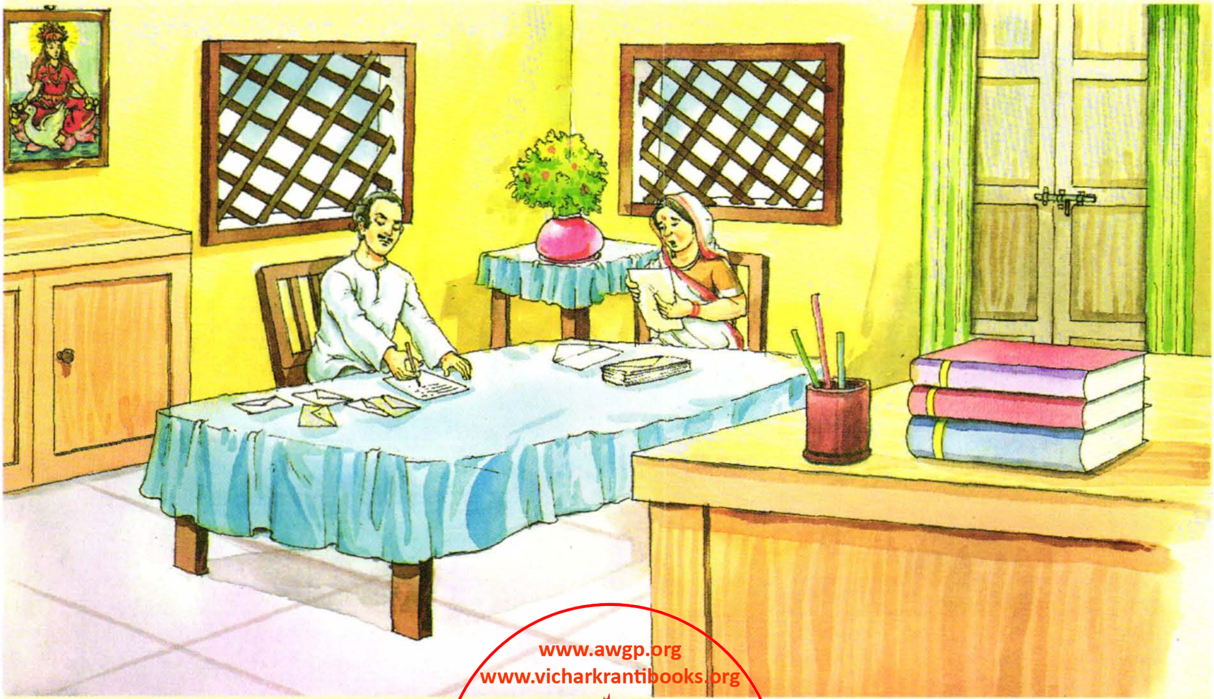

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक साथी ने पूछा—"आपके संपादन और प्रकाशन कार्य से आपकी साधना का क्या संबंध है?" उत्तर दिया—"यह भी जीवन-विकास की साधना है। इसका प्रभाव कुछ काल बाद सामने आएगा।"

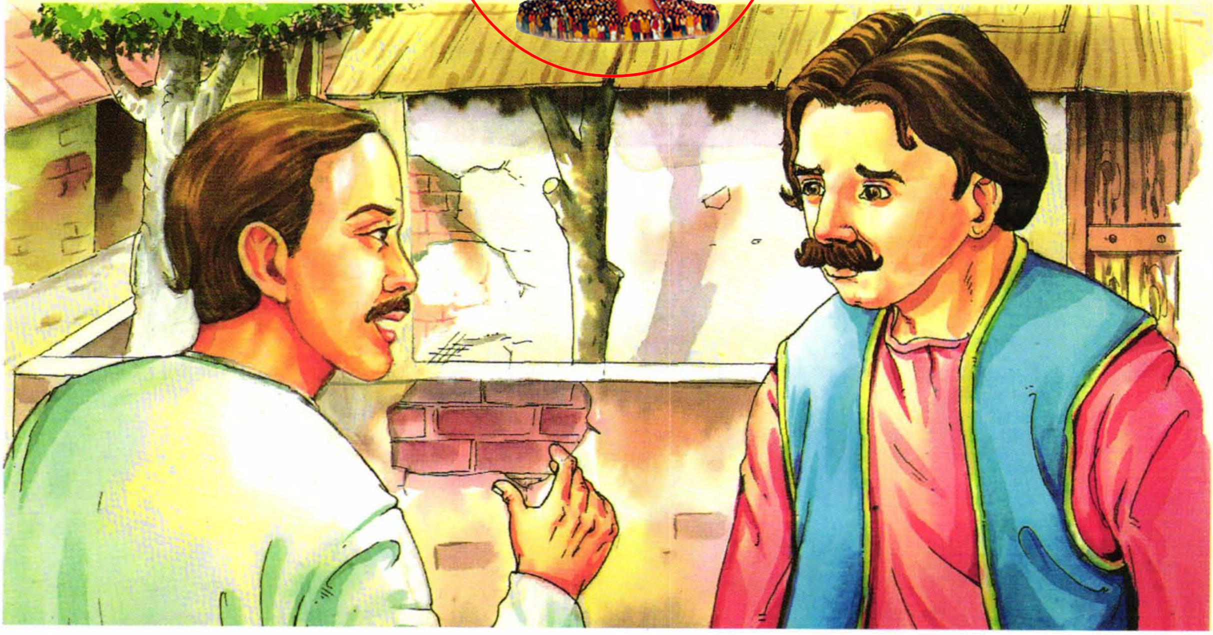

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी ने गायत्री मंत्र साधना के साथ-साथ गायत्री के संबंध में गहन अध्ययन और शोध-कार्य भी किया। अपने अनुसंधान और चिंतन-मनन के आधार पर उन्होंने 'गायत्री महाविज्ञान' शीर्षक से तीन बृहद ग्रंथ लिखे और गायत्री के संबंध में एक नया दर्शन प्रस्तुत किया।

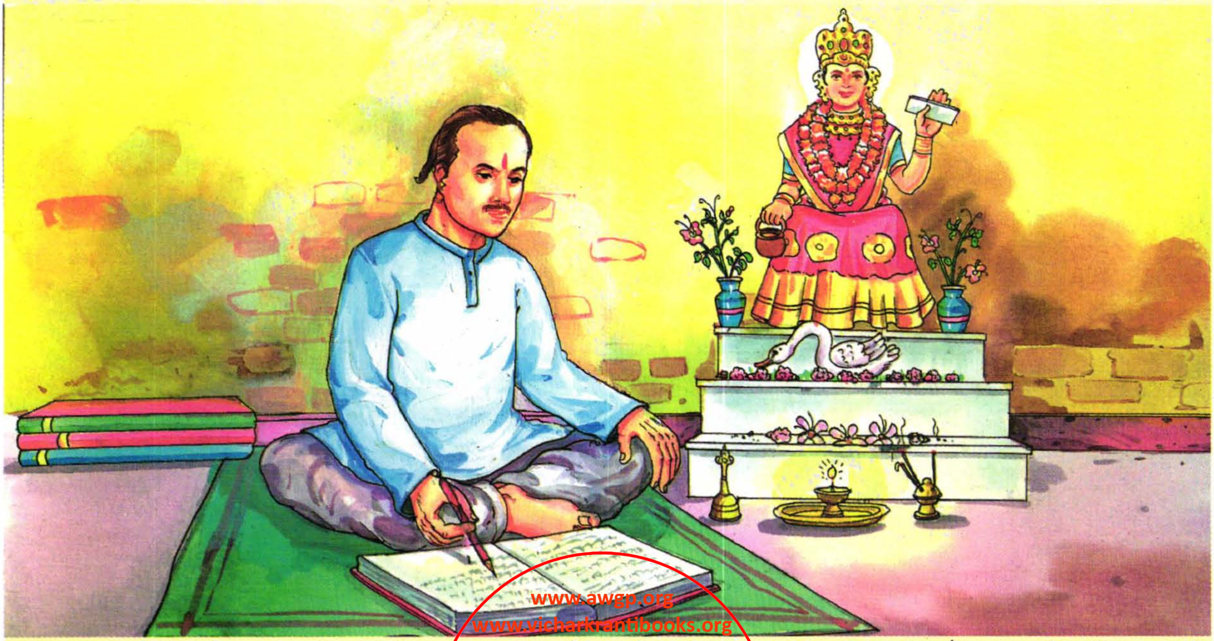

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी का मकान छोड़ना था। मिशन की गतिविधियाँ बढ़ रहीं थीं, गायत्री तपोभूमि की भी स्थापना करनी थी अतः जमीन देखने यमुना किनारे गए।

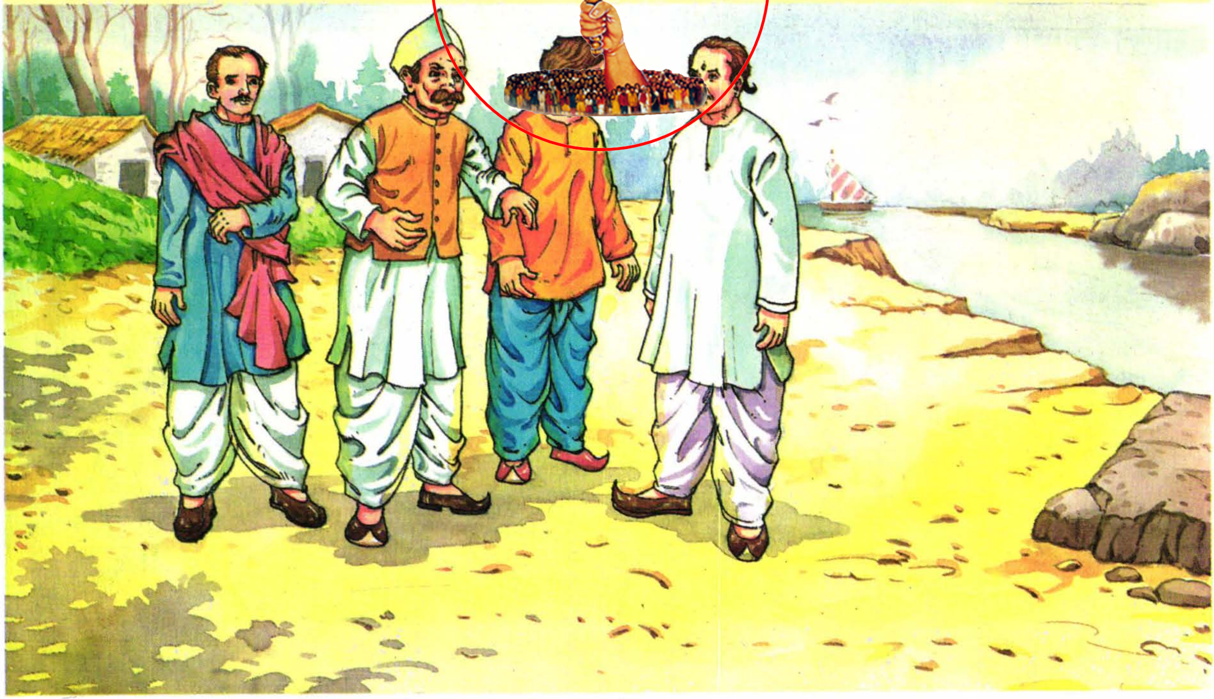

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तपोभूमि के निर्माण एवं यज्ञायोजन के लिए बहुत धन की आवश्यकता थी।

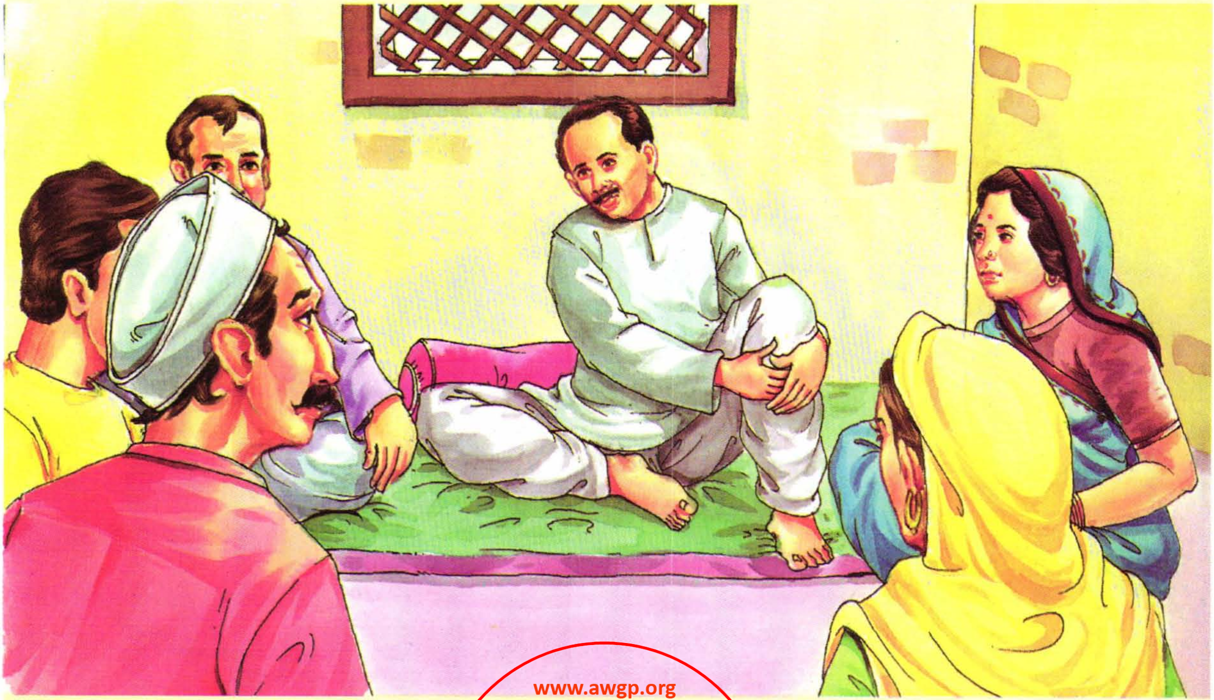

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

माता जी बोली—“मैं अपने जेवर दे देती हूँ आप जमीन खरीदें, इससे हमारा मिशन आगे तो बढ़ेगा। आप अपने काम को न रोकें।”

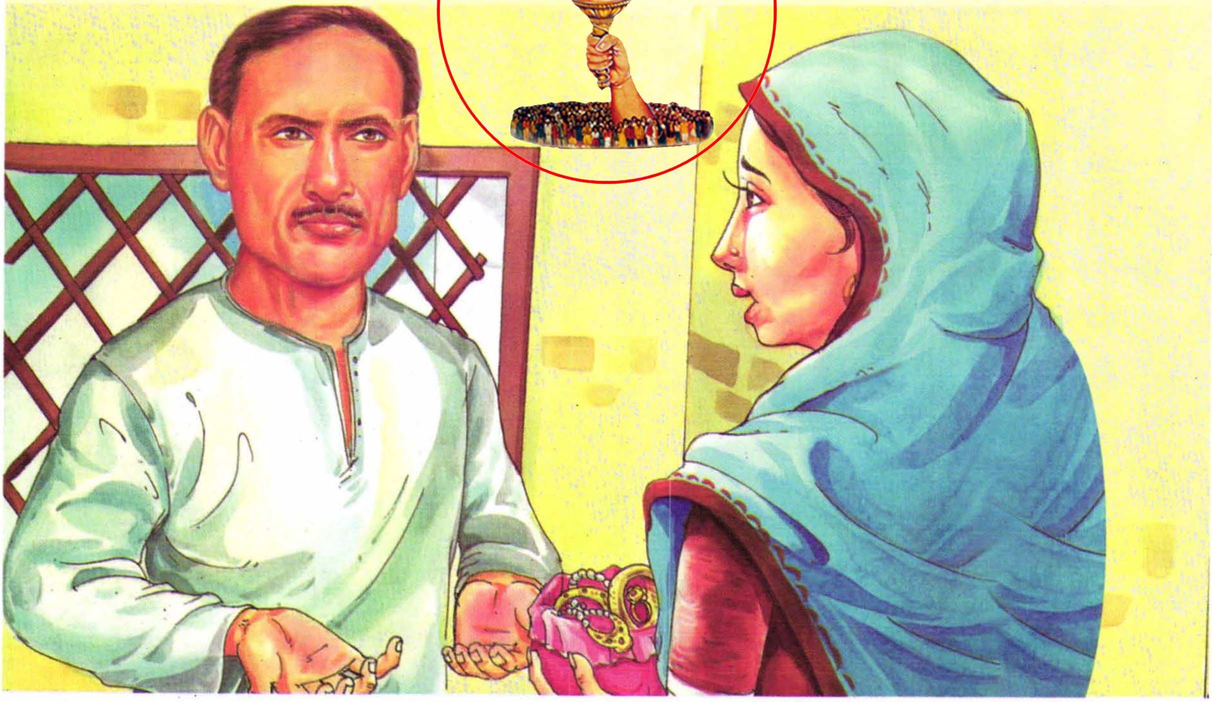

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वैशाख पूर्णिमा सन् १९५३ में मथुरा-वृंदावन मार्ग पर गायत्री तपोभूमि की स्थापना एवं गायत्री मंदिर का निर्माण हुआ। २४ दिन का मौन एवं जल उपवास रखा। एक हजार साधकों द्वारा चौबीस लाख गायत्री मंत्रों का हस्त-लेखन करवाने का संकल्प लिया।

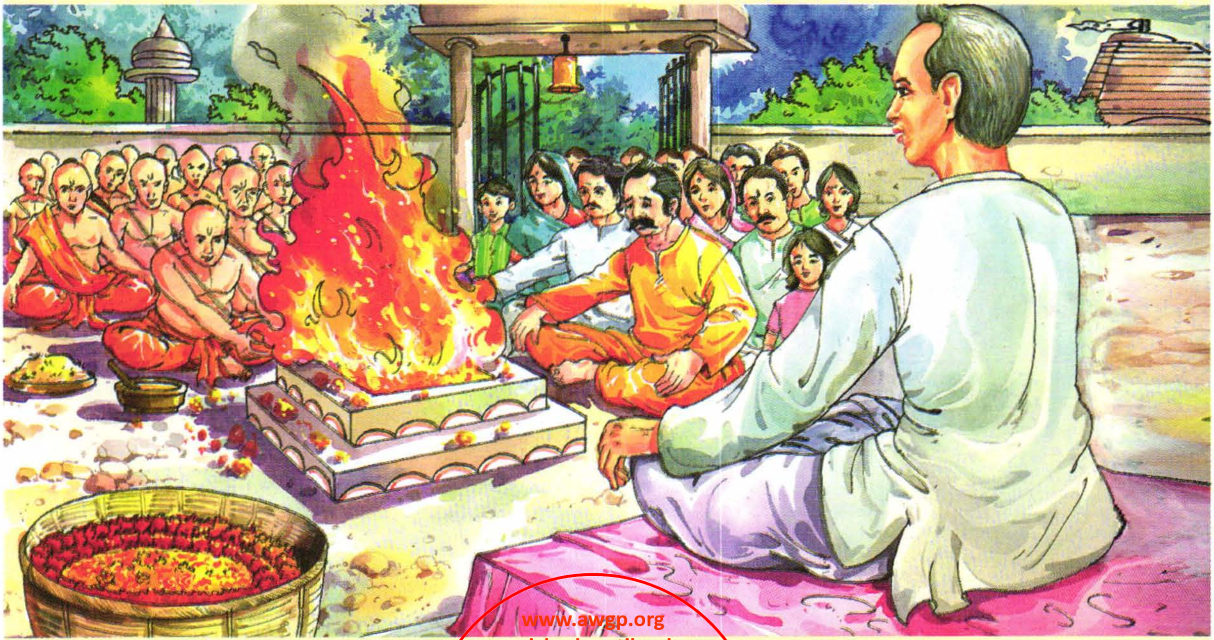

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सन् १९५४ में गायत्री तपोभूमि में जीवन-विद्या सत्रों तथा प्रशिक्षण शिविरों का प्रारंभ हुआ। इन सत्रों तथा शिविरों में जीवन के उपयोगी विषयों का तथा उपयोगी कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १९५६ में मथुरा में गायत्री नरमेध यज्ञ हुआ। इस यज्ञ के प्रति लोगों में बड़ी उत्सुकता थी। हजारों लोगों और उपासकों ने इस यज्ञ में भाग लिया तथा जब कुछ अनुयायियों ने संस्था के लिए जीवन-दान किया तो सभी लोग इस नरमेध यज्ञ का रहस्य जान सके।

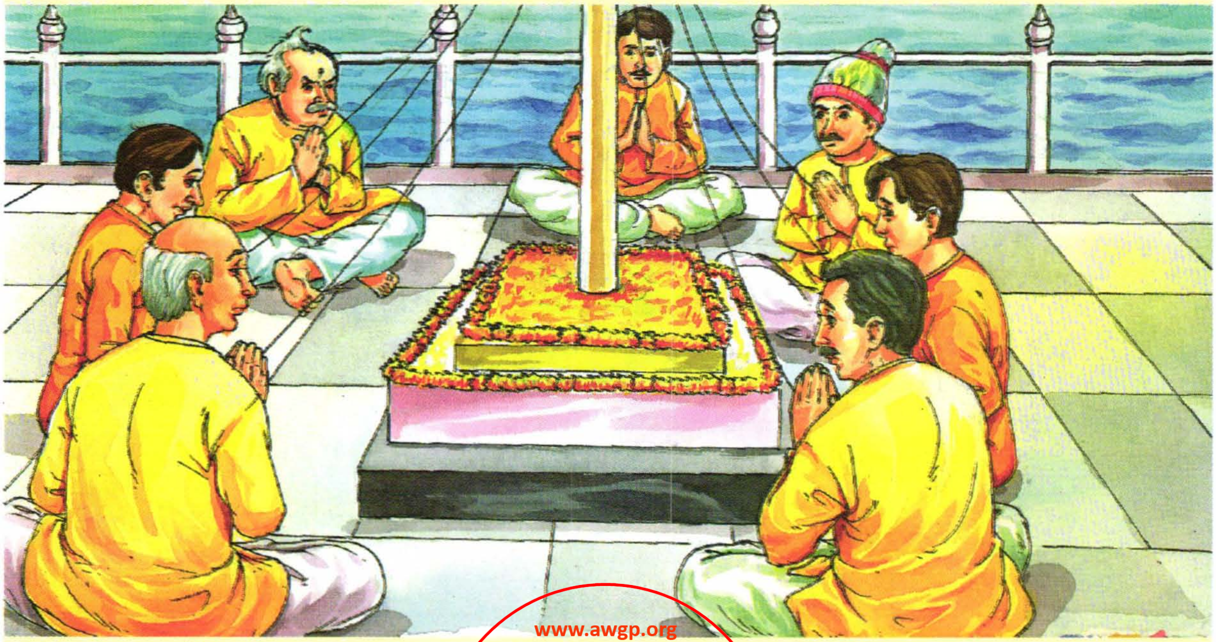

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सन् १९५७ में अखिल भारतीय गायत्री परिवार सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में गायत्री परिवार से [illegible] प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्हें परिवार के विभिन्न आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

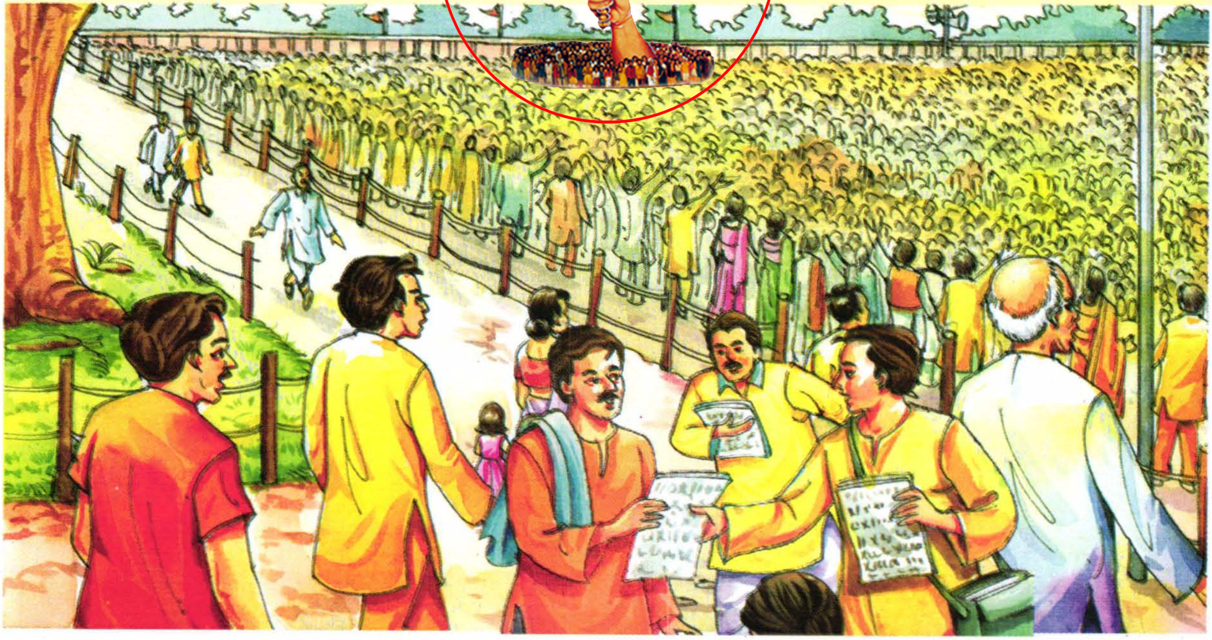

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवंबर सन् १९५८ में गायत्री का सहस्त्रकुंडीय विराट महायज्ञ हुआ। इसमें लाखों साधकों और अनुयायियों ने भाग लिया। उस समय मथुरा से वृंदावन जाने का प्रमुख मार्ग कई मील तक यात्रियों के शिविरों से भरा था। हर ओर अपार जनसमूह दिखाई देता था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ में भाग लेने दो व्यक्ति अलग-अलग साइकिलों पर सवार होकर हाथों में झंडे पकड़े गायत्री माता की जय बोलते हुए आए थे। इसी तरह एक अनुयायी जोधपुर से घोड़े पर अपनी जोधपुरी वेशभूषा में ॐ अंकित केसरिया ध्वज जोधपुर से मथुरा तक हाथ में लिए प्रचार करता यज्ञ-स्थल पर आया था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह गायत्री महायज्ञ अत्यंत विशाल और भव्य था। इसमें लाखों संकल्पवान व्रतशीलों ने भाग लिया। यज्ञ-स्थल बड़ा विराट था तथा साधकों के ठहरने की व्यवस्था मथुरा-वृंदावन के मार्ग पर कई मील विस्तृत क्षेत्र में की गई थी।

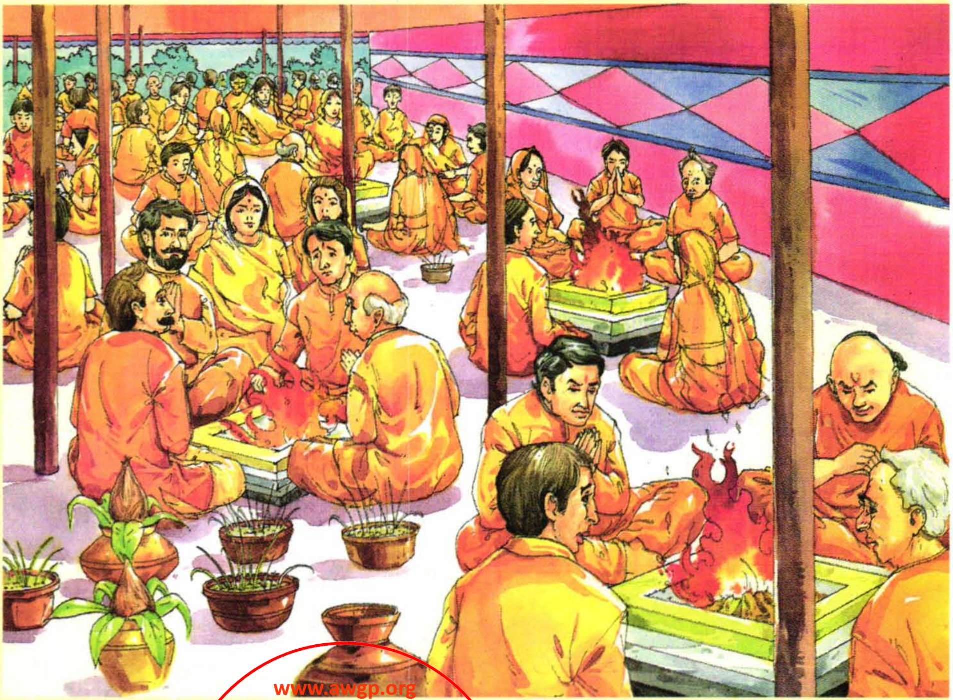

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस महायज्ञ का कार्यक्रम कई दिनों तक चला। संत-महात्माओं और विद्वानों के प्रवचन हुए। व्रतधारियों ने यज्ञ में बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। बिना दहेज के अनेक विवाह हुए तथा अनेकों ने अपने-अपने अवगुणों को त्यागने की प्रतिज्ञाएँ कीं।

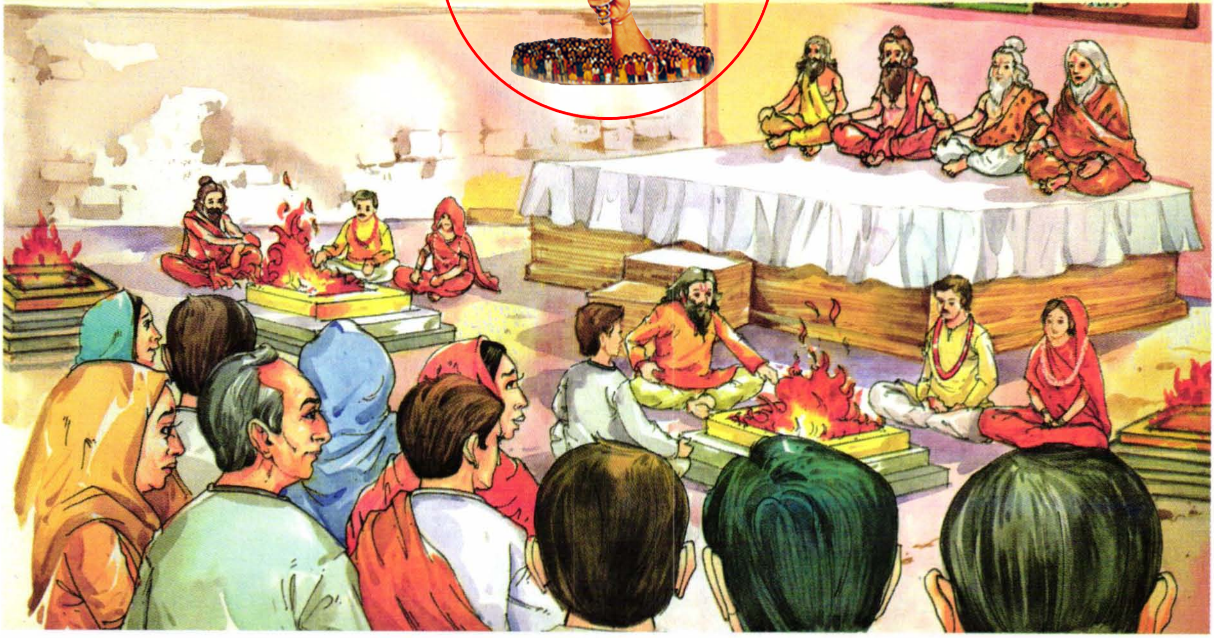

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस महायज्ञ से पूर्व गायत्री केवल ब्राह्मणों तक सीमित थी। आचार्य जी ने सभी जाति और धर्म के लोगों से यज्ञ करवाया। यही नहीं, इस यज्ञ में महिलाओं को भी गायत्री यज्ञ का अधिकारी बनाया और उनसे यज्ञ कराया। इस विराट यज्ञ में किसी से कोई दान नहीं लिया और न किसी से चंदा माँगा गया।

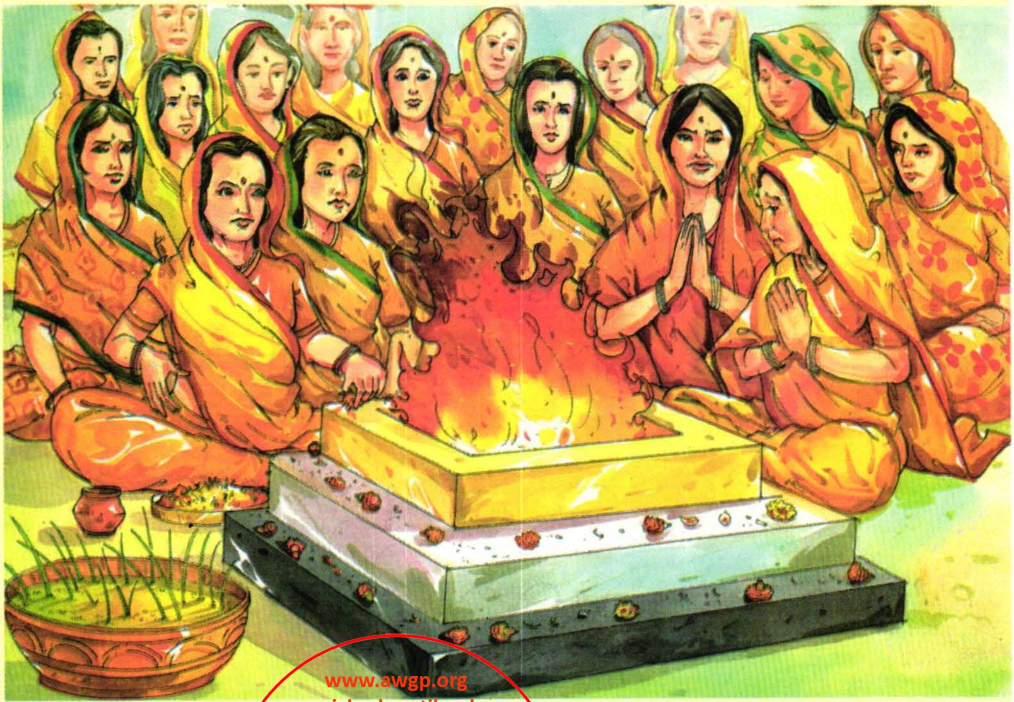

इस गायत्री महायज्ञ के समायोजन पर विदा लेते समय सभी परिजनों का मन भाव-विह्वल था। इस अनुपम अनुभूति ने अखिल भारतीय गायत्री परिवार के सूत्र का सूत्रपात किया। नए वातावरण की शुरुआत हुई।

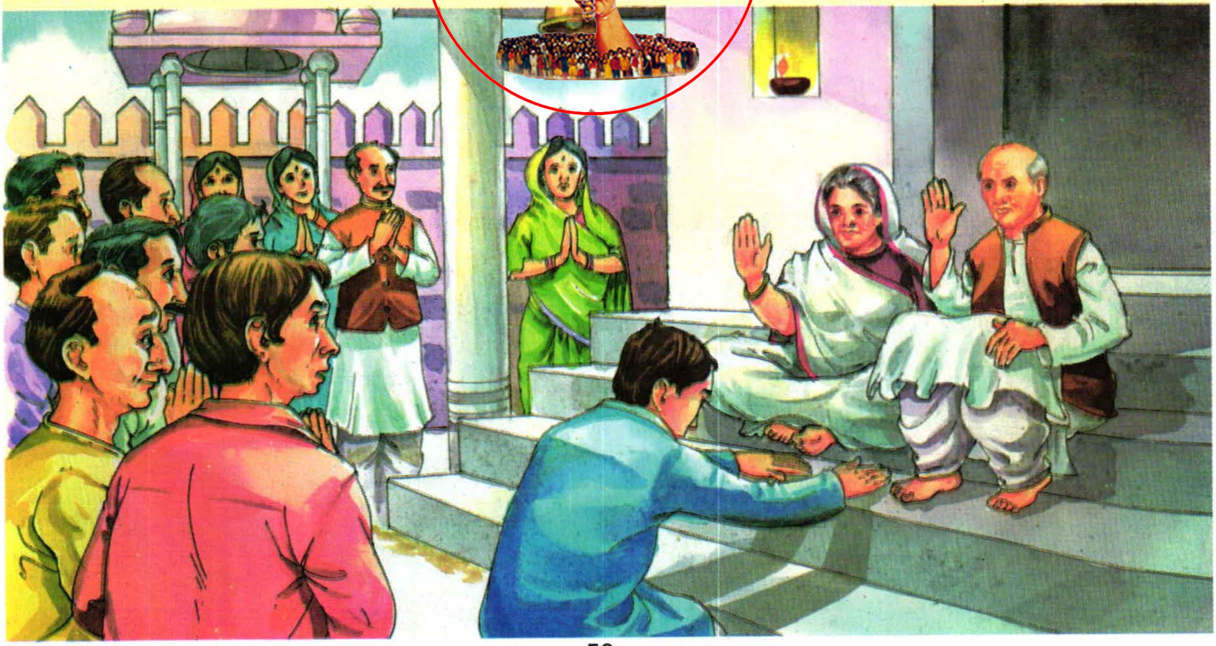

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहस्रकुंडीय यज्ञ के पश्चात पं० श्रीराम शर्मा तपोभूमि का कार्यभार और 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के संपादन का कार्य वंदनीया माता श्रीमती भगवती देवी शर्मा को सौंपकर अज्ञातवास में चले गए।

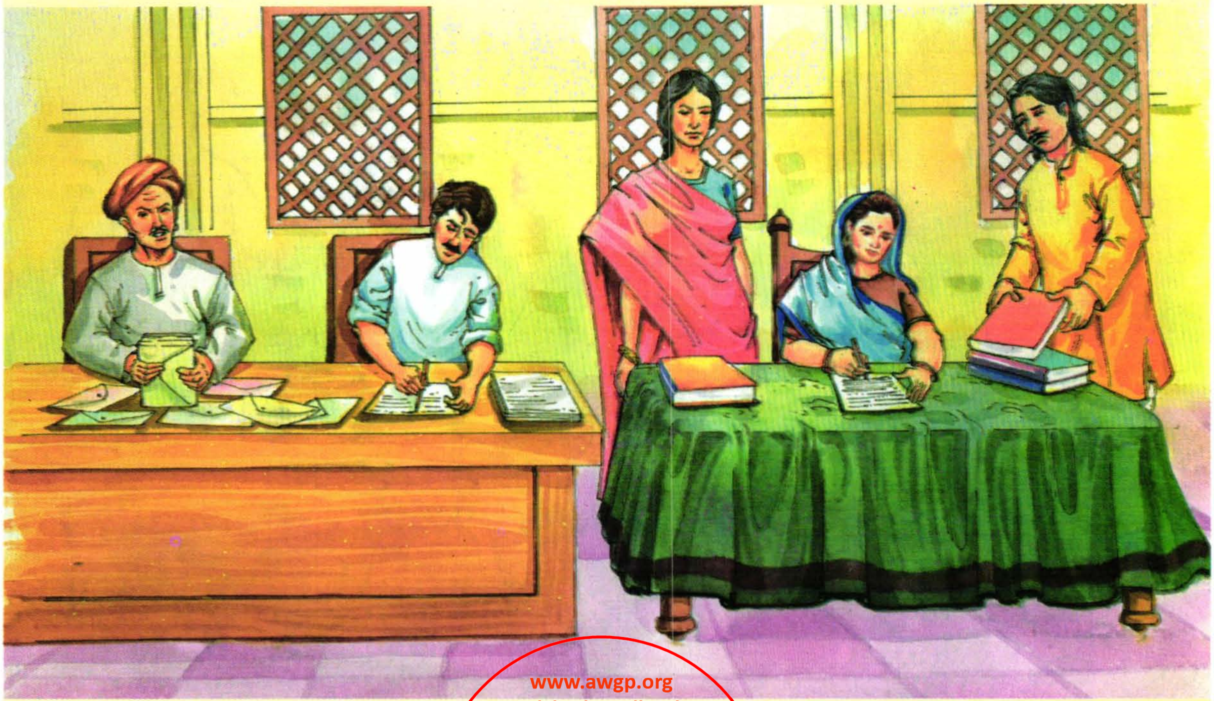

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

चारों वेदों के संहिता पाठ समग्र रूप में कहीं उपलब्ध न थे। इसी तरह पूरे एक सौ आठ उपनिषद्, छह दर्शन, अठारह पुराण, बीस स्मृतियाँ, चौबीस गीताएँ, आरण्यक, ब्राह्मण और निरुक्त आदि की स्थिति थी। गुरुदेव ने इस दिशा में कठिन परिश्रम किया और संपूर्ण वाङ्मय जुटाने में तथा उनमें से कुछ का भाष्य लिखने और संपादन करने में दत्तचित्त हो गए। इस काल में 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका की तथा गायत्री तपोभूमि की जिम्मेदारी वंदनीया माता जी ने सँभाल ली। वे एक वर्ष के लिए तप करने गंगोत्री गोमुख के दुर्गम हिमालय वाले क्षेत्र में चले गए। हिमालय से वापस लौटने पर लेखन कार्य पुनः शुरू हुआ।

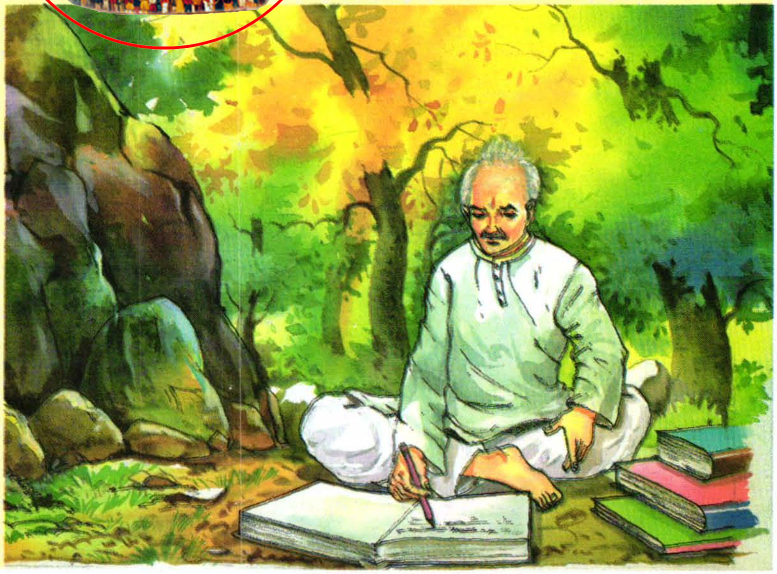

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव की प्रारंभ से ही यह मान्यता रही है कि गायत्री व यज्ञ, भारतीय संस्कृति के मानवमात्र को दो दिव्य अनुदान-वरदान हैं। किसी को भी जाति, लिंग, वर्ण और क्षेत्र का भेद किए बिना गायत्री को जपने व यज्ञ-कार्य करने का पूरा अधिकार है। इसी विचार को उन्होंने दृढ़ता पूर्वक अपने संपूर्ण जीवन में मान्यता दी।

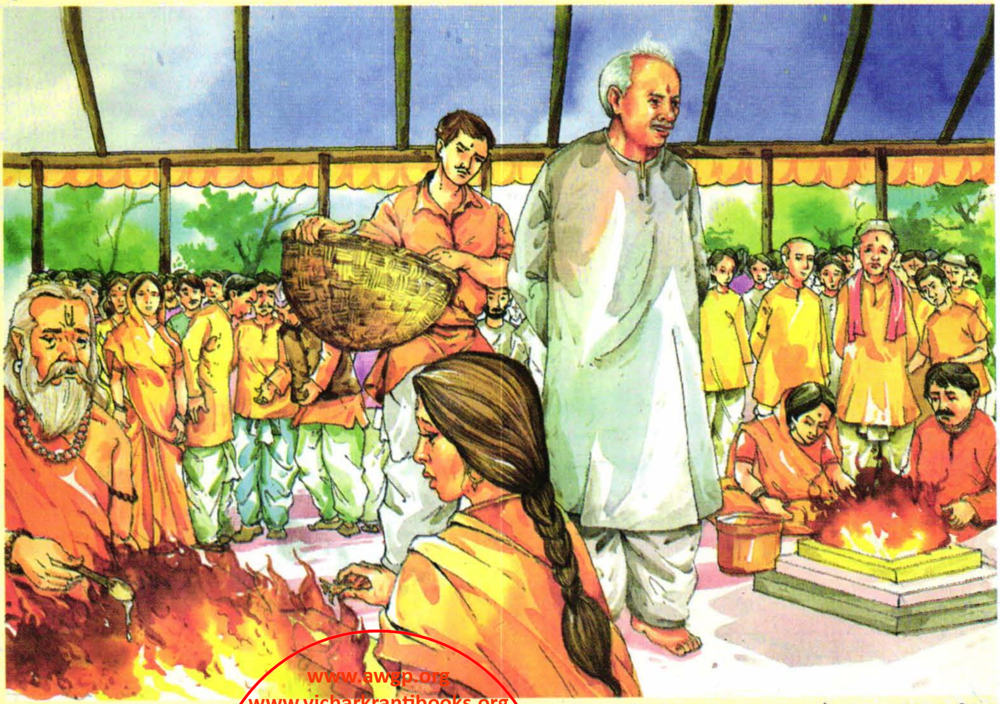

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अज्ञातवास से लौटने पर मालूम हुआ कि आचार्य जी ने इस बीच में वेद, पुराण और उपनिषदों का अनुवाद भी पूर्ण कर लिया है और इन का प्रकाशन कार्य प्रारंभ हुआ। इस कार्य से एक नई दिशा का बोध हुआ।

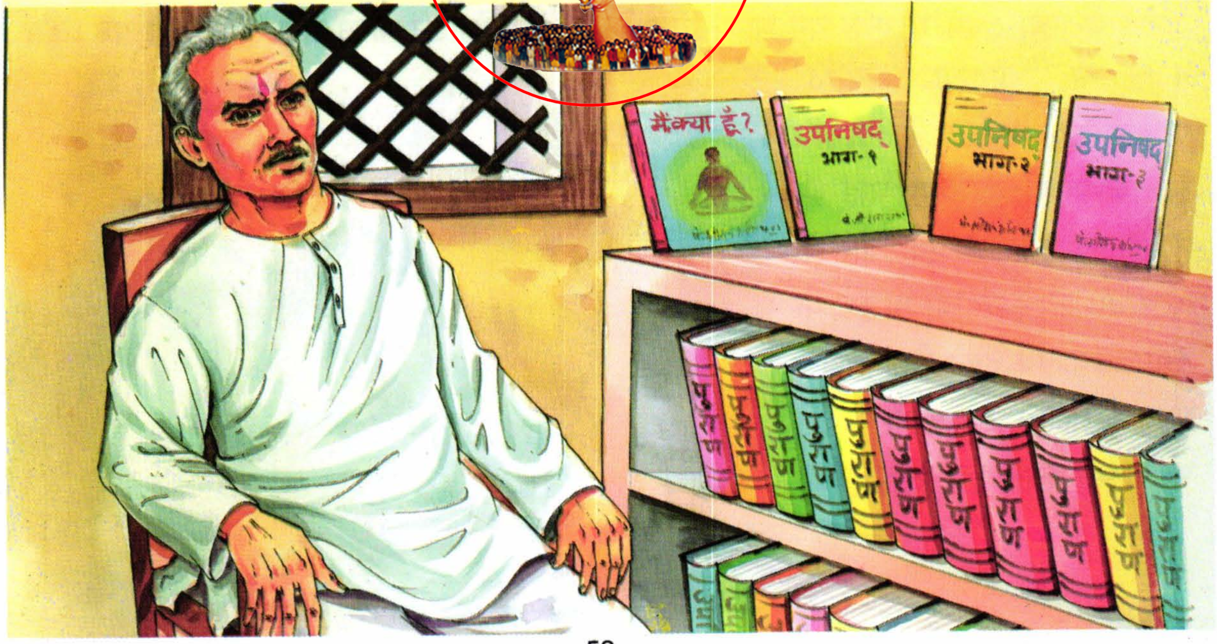

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी क्रम में अखिल भारतीय गायत्री परिवारों में शतसूत्रीय कार्यक्रमों की नई शुरुआत हुई। यह एक विस्तृत अभिनव योजना थी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

शतसूत्रीय कार्यक्रमों के साथ ही युग निर्माण विद्यालय और शिविरों का आयोजन भी शुरू हो गया। इनसे विभिन्न विषयों का रचनात्मक शिक्षण-प्रशिक्षण शुरू हुआ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विकासशील देश भारत की मूलभूत समस्या दरिद्रता के निवारण हेतु गुरुदेव ने विचार किया कि यह समस्या बिना स्वावलंबन की शिक्षा दिए दूर नहीं होगी अतएव उन्होंने छोटे-छोटे उद्योगों के प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था की और गृह उद्योगों का प्रशिक्षण दिलवाया।

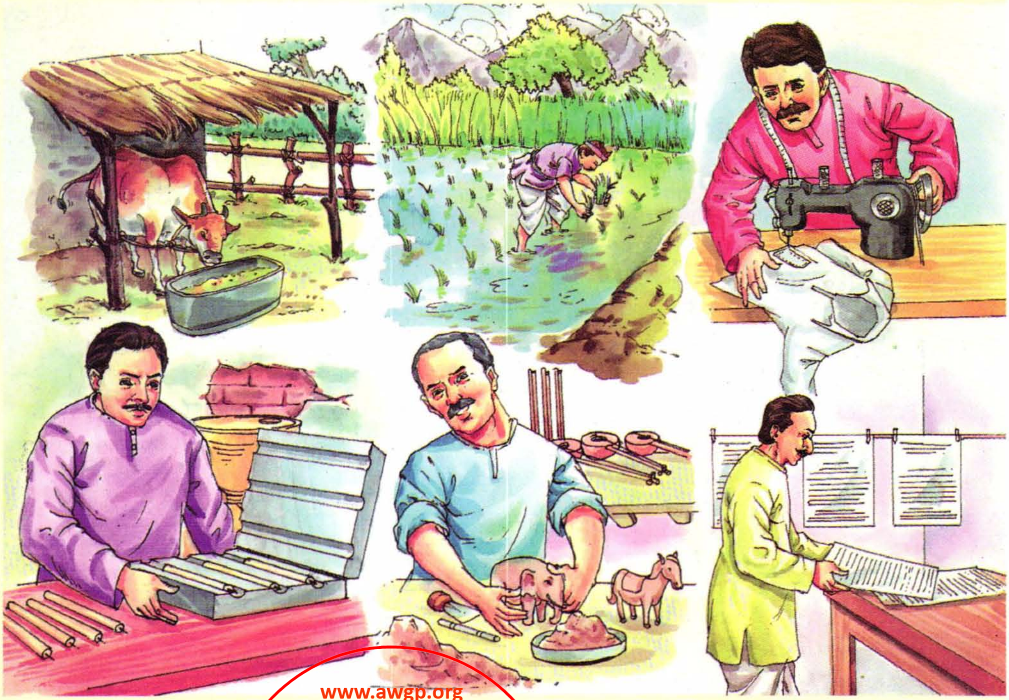

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सन् १९६७ में युग निर्माण विद्यालय की शुरुआत हुई। इस विद्यालय के माध्यम से जीवन के लिए उपयोगी विषयों का शिक्षण प्रारंभ किया। हजारों युवकों को इस विद्यालय के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

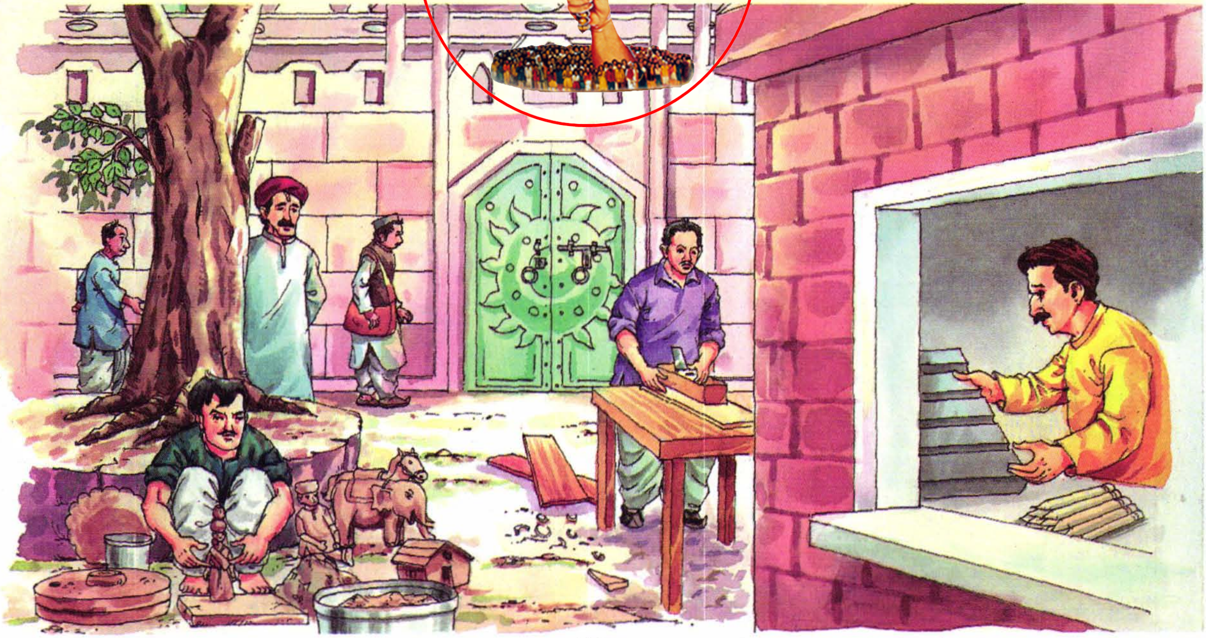

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १९६८ में उन्होंने (गुरुदेव ने) विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से संबंधित विज्ञान और बुद्धिवाद की मान्यताओं को ध्यान में रखकर महत्त्वपूर्ण अनेक प्रश्नों पर नोट्स विद्वानों से मँगवाए, जिसमें लगभग बीस हजार पृष्ठ विभिन्न विषयों से संबंधित एकत्र हो गए। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की इस नई चिंतनधारा ने सन् १९६८ से सन् १९९० तक अध्यात्म को एक नई दिशा प्रदान की। सन् १९७८-७९ में अनेक पुस्तकें इस विषय पर प्रकाशित हुईं तथा वैज्ञानिक शोध-कार्य शुरू हुआ। सन् १९७९ और सन् १९८० में चिंतन सत्र आयोजित किए।

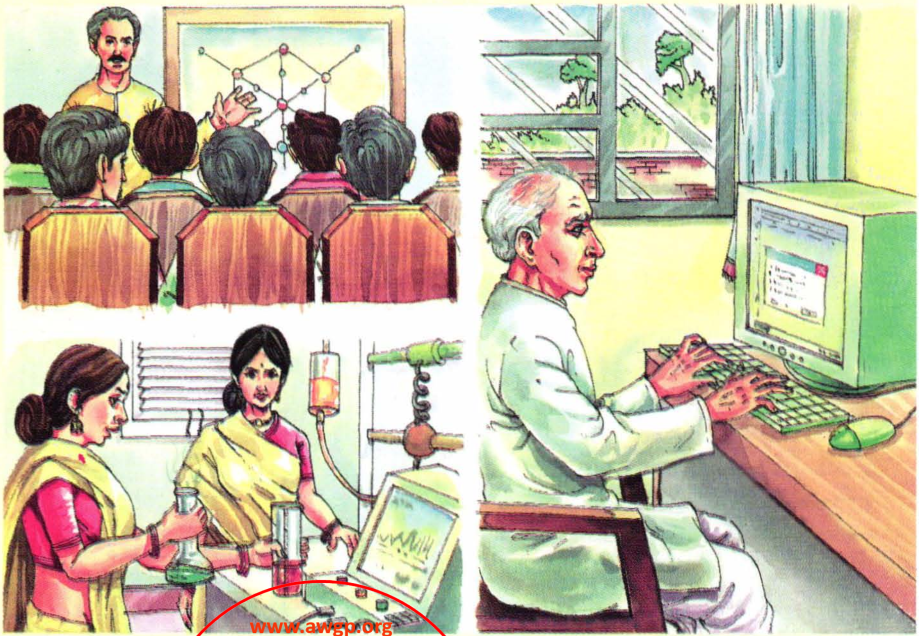

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक बार गायत्री तपोभूमि देखकर एक बड़े सेठ बहुत प्रभावित हुए। वह पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी से मिलने पधारे। उन्होंने कहा— "गायत्री मंत्र का प्रचार-प्रसार बहुत अच्छे ढंग से कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप हिंदू धर्म का भी प्रचार करें। मैं आपकी धन से खूब मदद करूँगा।"

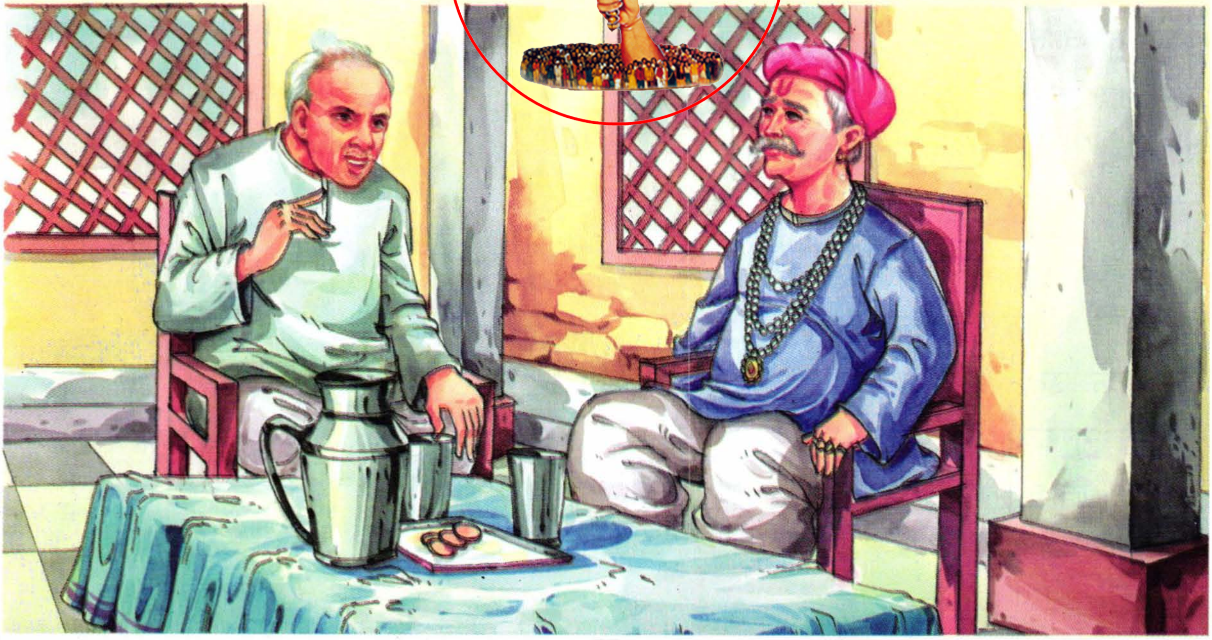

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी बोले—"मैं सब धर्मों का हूँ। सभी धर्म मुझे प्रिय हैं। मेरा उद्देश्य मानवमात्र को जाग्रत करना है। मैं किसी धर्म विशेष का प्रचारक नहीं हूँ। आपकी सहायता के लिए धन्यवाद।" सेठ चुपचाप चले गए।

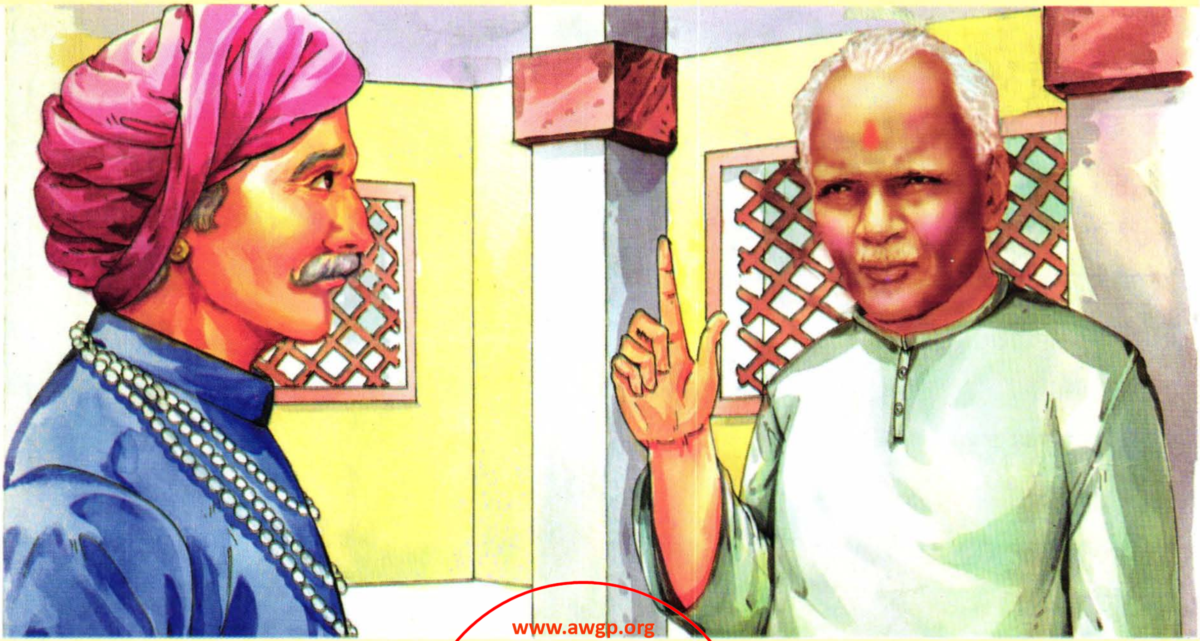

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दिसंबर, १९६९ ई० की घटना है—पटना जंक्शन पर मुंगेर जिले के श्री विजयकुमार शर्मा की माँ का देहांत हो गया। वह गायत्री का शतकुंडी यज्ञ देखने आए थे। संयोग की बात है उसी समय गुरुदेव मथुरा लौटने के लिए पटना जंक्शन पधारे। उन्हें यह दुःखद समाचार किसी ने दिया तो वे तत्काल मृतक की लाश तक पहुँचे और बोले— "बेटे, तुम्हारी माँ मरी नहीं है, इन्हें उठा।" यह बात सुनकर सब भौचक्के थे कि मृतक माँ अचानक उठ बैठी और उन्होंने गुरुदेव के चरण स्पर्श किए। गुरुदेव आशीष देकर गाड़ी में बैठ गए।

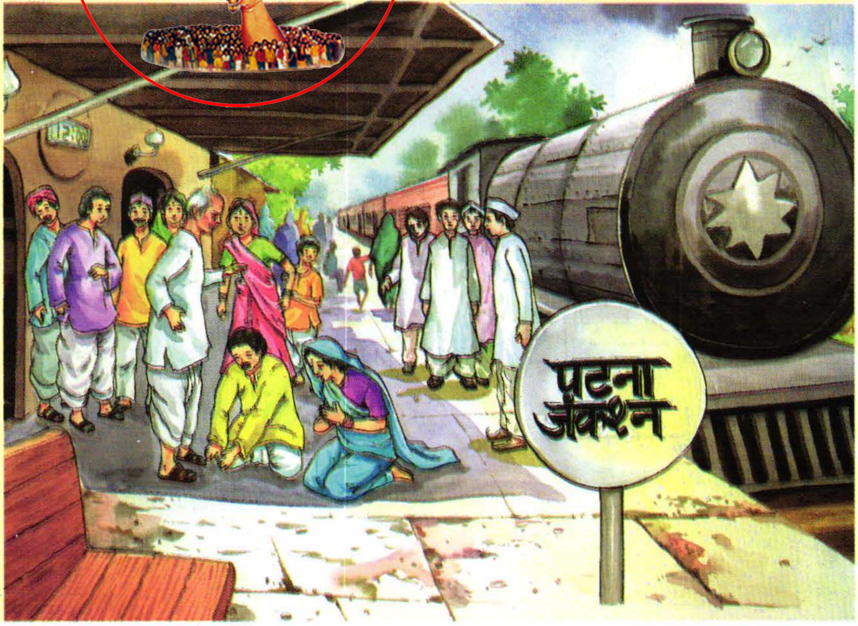

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम कृष्ण सिंह एडवोकेट बेतिया ने बताया—"सन् १९७० में अक्टूबर में मैं, पत्नी और बच्चों सहित मथुरा एक शिविर में गया था। मैंने अवसर देखकर अपनी संस्था के प्रमुख श्री उमाकांत झा की चर्चा की। गुरुदेव ने खिन्न होकर कहा—आज तो उनका समय समाप्त हो रहा है। मैं इस बात का अर्थ उस समय कुछ नहीं समझा, किंतु घर पहुँचने पर मालूम पड़ा कि श्री झा साहब का उसी दिन स्वर्गवास हो गया था। गुरुदेव में अदृश्य को देखने की अद्भुत शक्ति थी।"

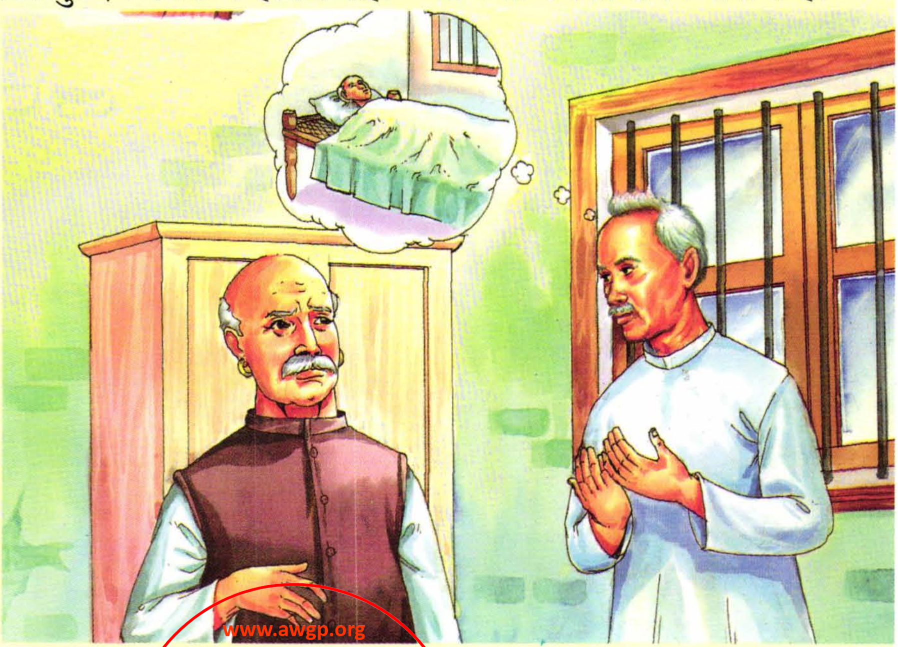

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

२० जून, १९७१ ई० को आचार्य जी ने शांतिकुंज, हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। हजारों श्रद्धालु नर-नारियों ने उन्हें तथा वंदनीया माता जी को भावपूर्ण रूप से विदाई दी। आचार्य जी अपने गुरु के निर्देशानुसार कुछ दिन बाद हिमालय की ओर चले गए।

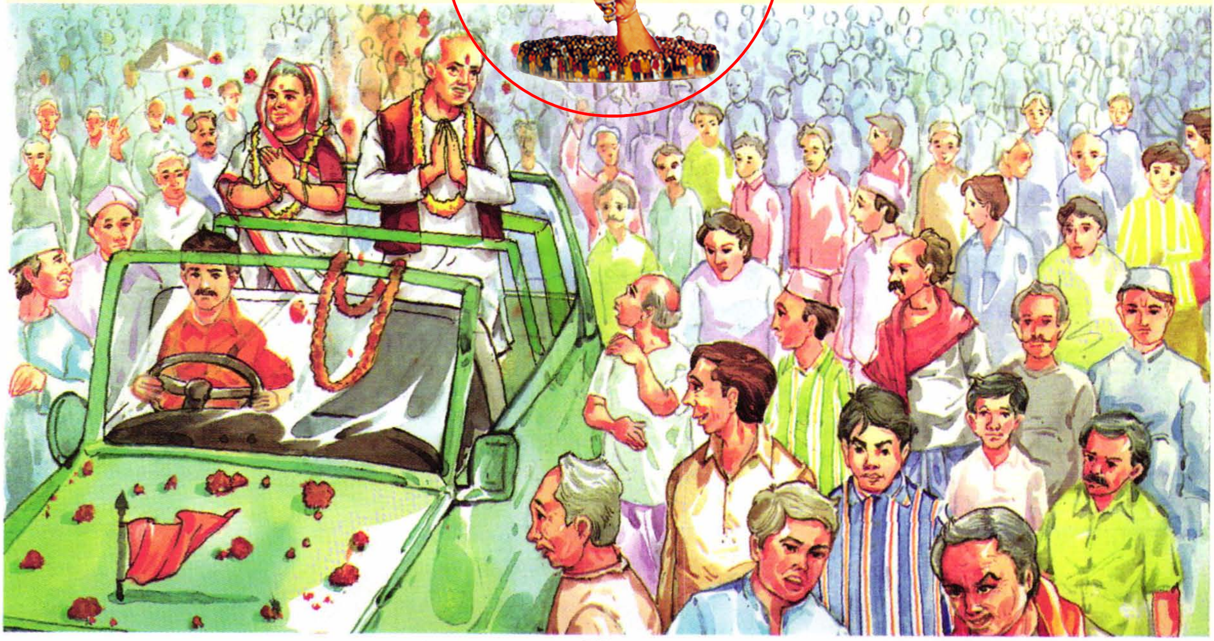

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी अपने संकल्प के अनुसार अपनी मार्गदर्शक गुरुसत्ता के पास चले गए। शांतिकुंज में वंदनीया माता जी कुछ साधकों के साथ रह गईं। उस समय वह स्थान प्रसिद्ध नहीं था। उस समय स्थान में सघन कुंज थे।

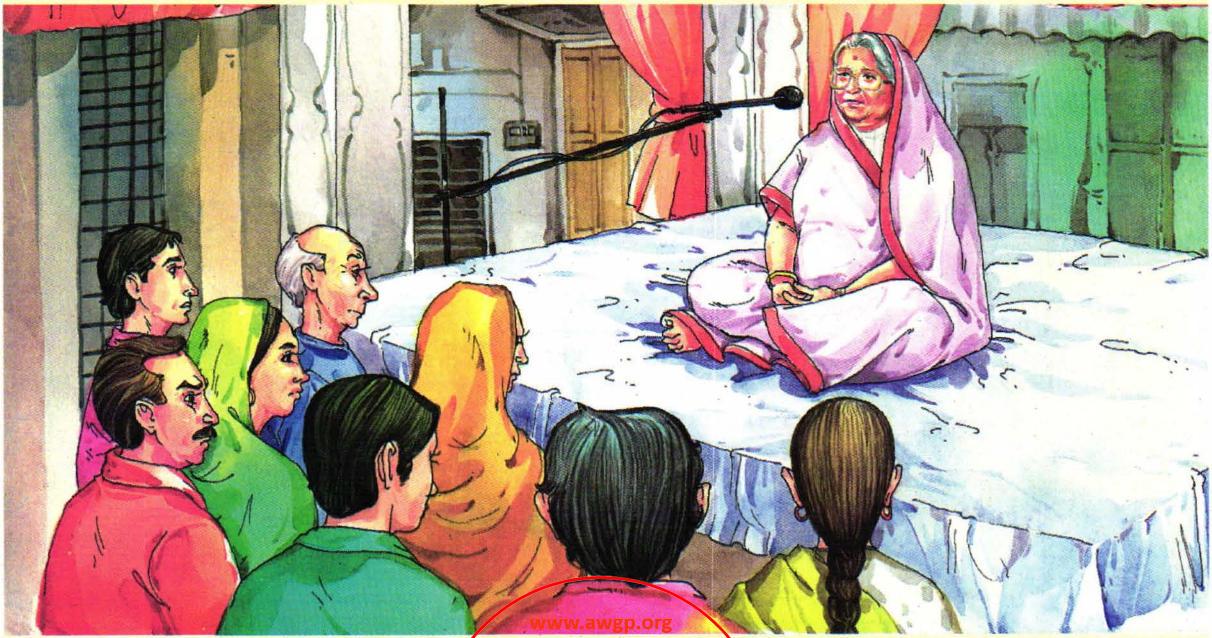

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव को यह देखकर अत्यधिक कष्ट होता कि विश्व की आधी के लगभग जनशक्ति नारी रूप में है और उसकी स्थिति भारत में बहुत ही बुरी है। वह दमन, शोषण, उत्पीड़न और अशिक्षा की शिकार है। उन्होंने इस ओर ध्यान दिया तथा वंदनीया माता जी के संरक्षण में कन्याओं के शिक्षण शिविर सन् १९७१ से लगाए गए और १९७५ ई० से 'महिला जाग्रति अभियान' शीर्षक से एक स्वतंत्र पत्रिका निकाली। प्रशिक्षित देवकन्याओं ने सन् १९७५ से सन् १९७९ तक प्रभावशाली महिला जाग्रति का कार्यक्रम चलाया।

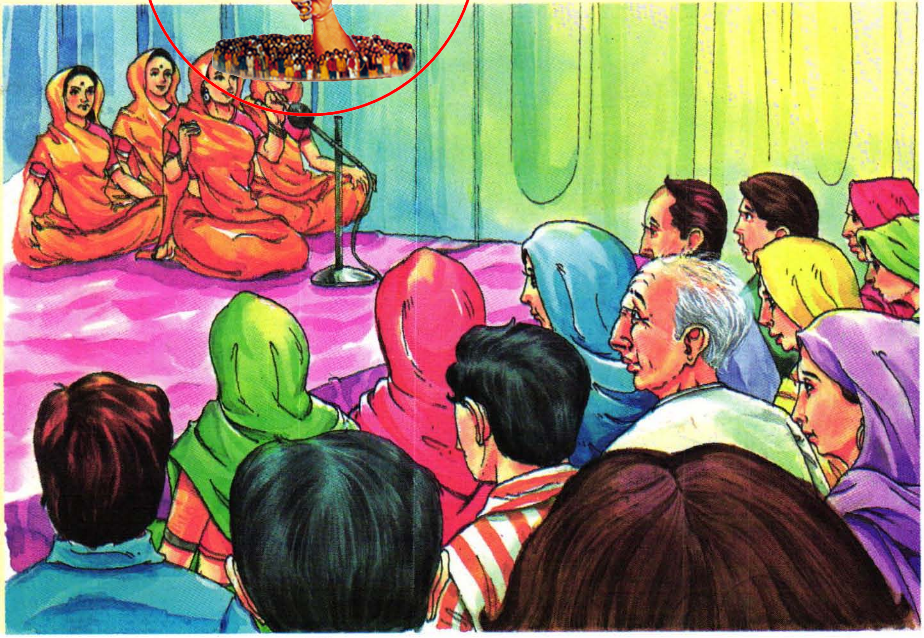

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी की अनुपस्थिति में वंदनीया माता जी ने कुमारी कन्याओं से शांतिकुंज में २४ लाख के गायत्री के पुरश्चरण करवाना शुरू कर दिया। नारी-चेतना का यह प्रारंभिक काल था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी की हिमालय यात्रा पूर्ण हुई। वे अपने गुरु से नए निर्देश प्राप्त कर शांतिकुंज लौट आए। शांतिकुंज लौट आने पर विभिन्न निर्माण-कार्यों को उनका मार्गदर्शन मिला और शांतिकुंज का विस्तार हुआ।

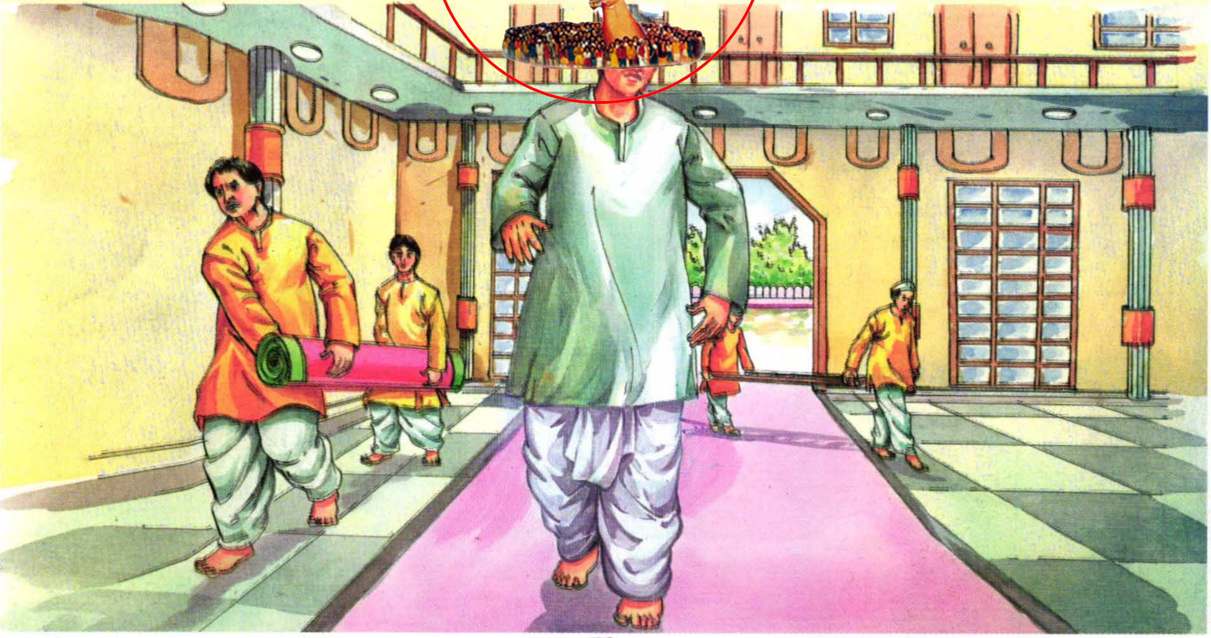

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री परिवार की शाखाएँ और युग निर्माण योजना की शाखाएँ काफी विस्तृत क्षेत्र में फैल गई थी। आचार्य जी के लिए विदेशों से भी निमंत्रण प्राप्त हुए। उन्होंने विचार किया और मिशन के कार्य को व्यापक बनाने के लिए ऐसी यात्राओं का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

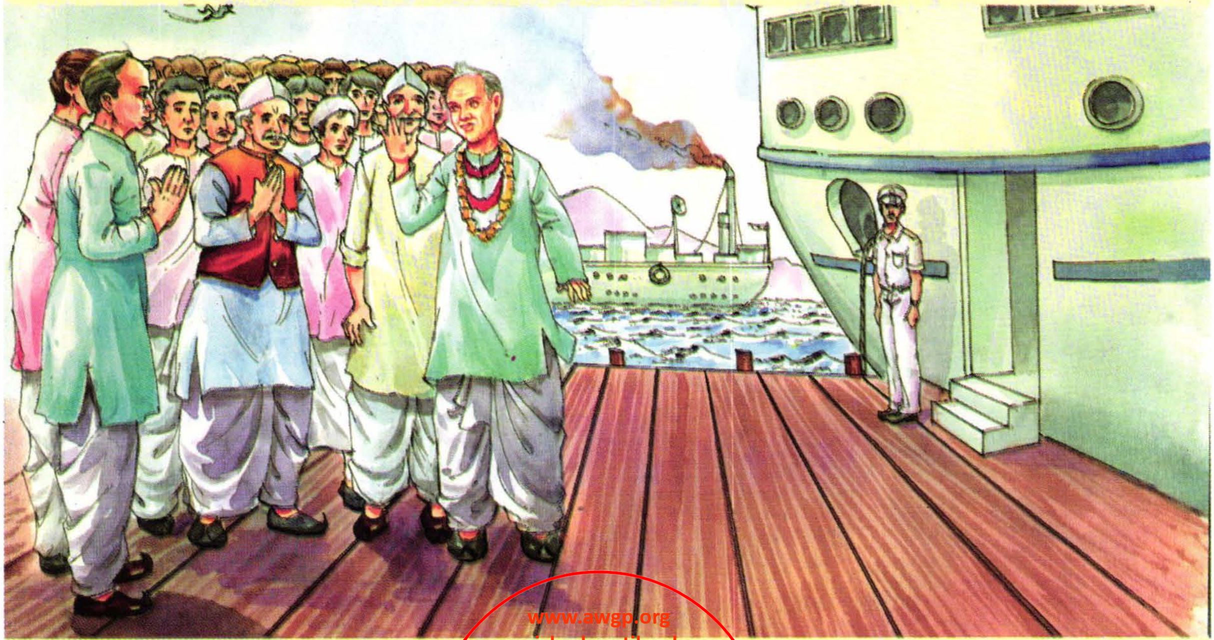

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सन् १९७५ में वंदनीया माता जी ने महिला जागरण अभियान शुरू किया। इसमें महिलाओं को नव-संदेश देने के लिए 'महिला जाग्रति अभियान' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। साथ ही महिला साहित्य का प्रकाशन शुरू हुआ।

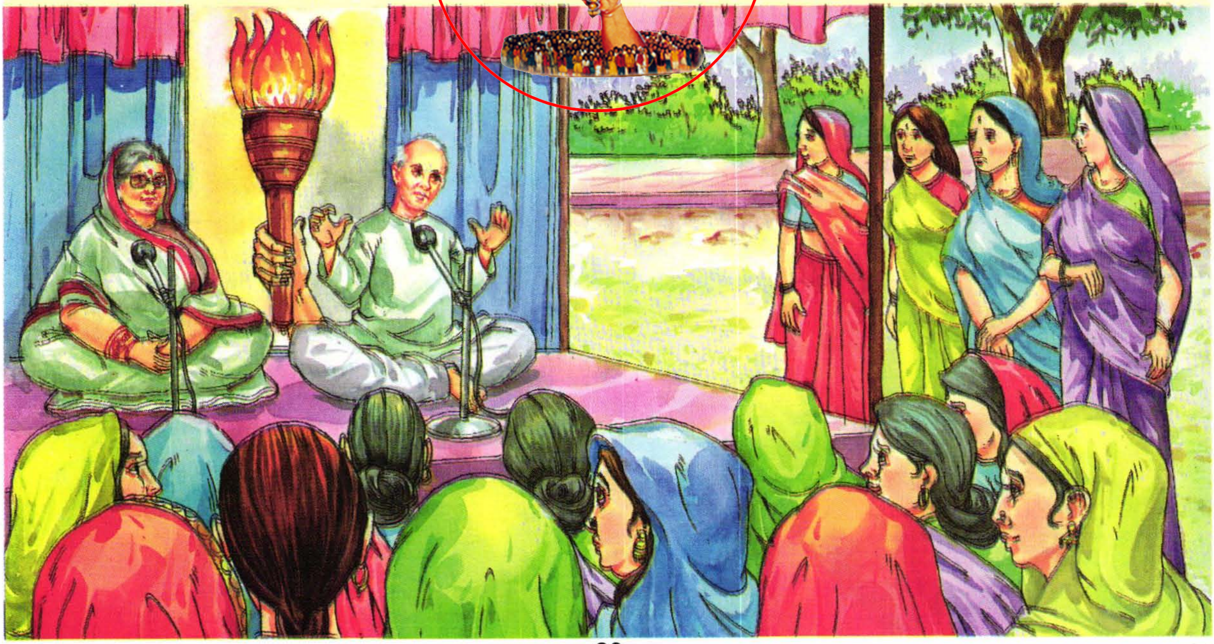

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महिला जागरण अभियान में महिलाओं के प्रशिक्षण हेतु शिविरों का आयोजन किया गया। उन्हें प्रेस-कार्य के विभिन्न प्रशिक्षण दिए गए। कन्याओं के लिए एक वर्ष के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस अभियान में वंदनीया माता जी के निर्देशन में कन्याएँ युग निर्माण संबंधी प्रवृत्तियों में भी भाग लेने लगीं और समाज में दूर-दूर तक विविध रचनात्मक कार्यक्रमों का विस्तार करने लगीं।

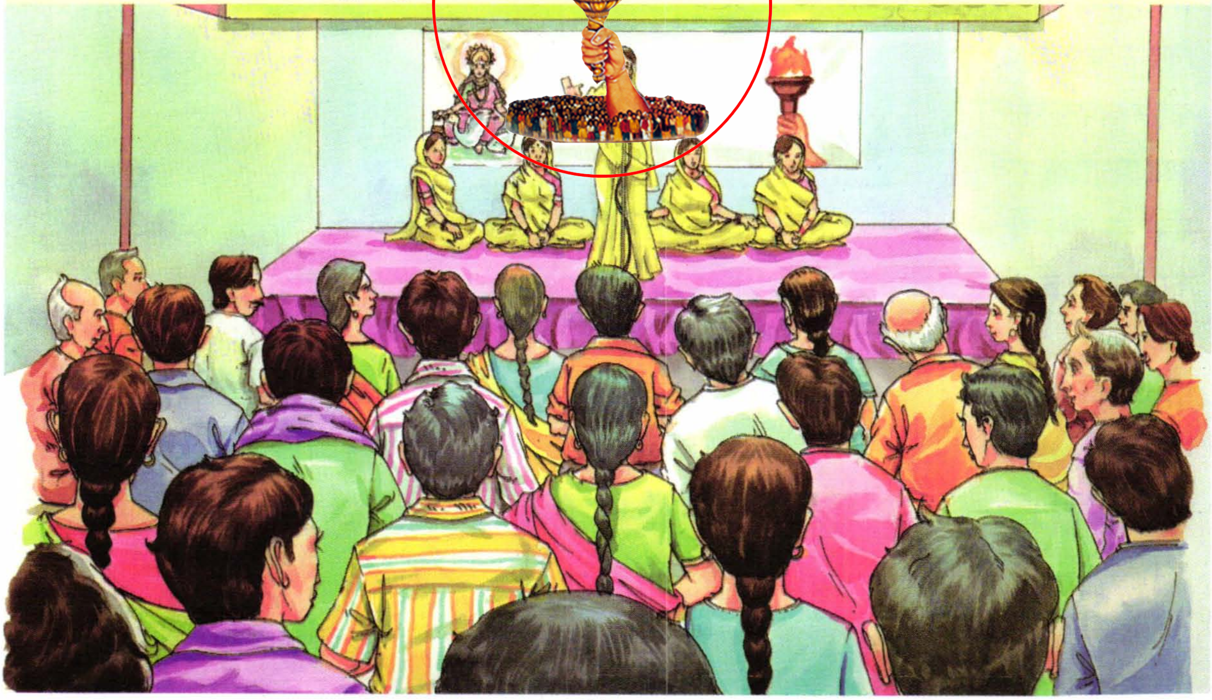

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी की प्रेरणा से हजारों गायत्री शक्तिपीठों का और प्रज्ञापीठों का निर्माण हुआ। ये शक्तिपीठ धार्मिक दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण थे ही, लोक-शिक्षण की दृष्टि से भी इन्हें उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। प्रज्ञापीठों में दर्शन और विज्ञान को विशेष स्थान दिया गया।

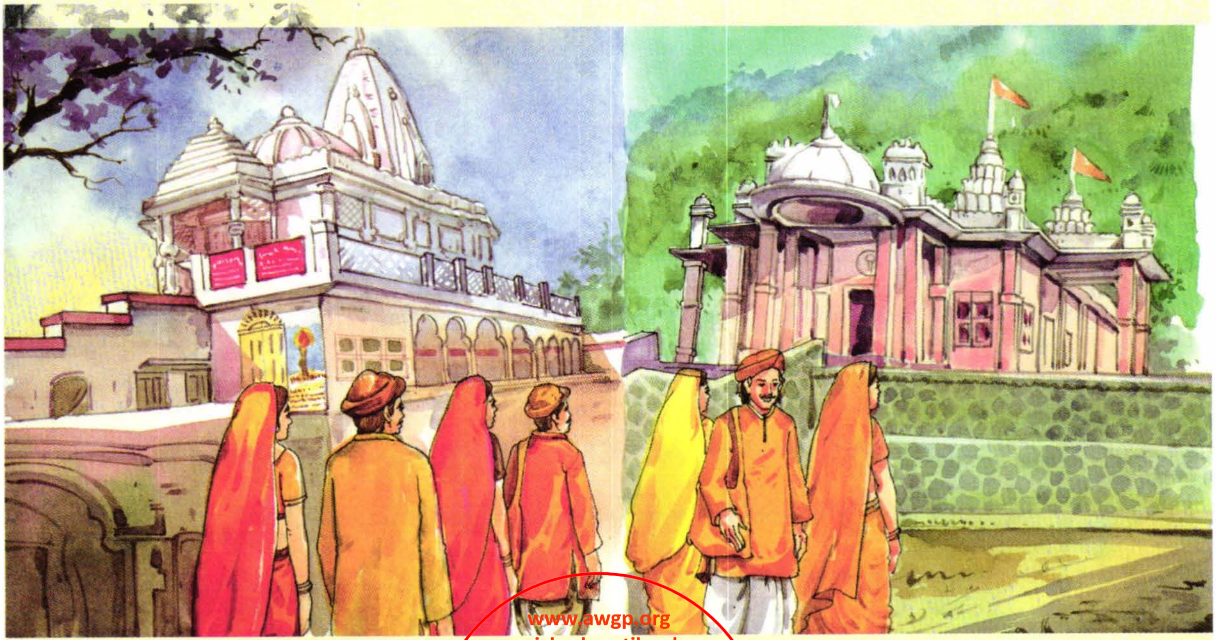

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी ने काफी चिंतन-मनन के पश्चात अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय के लिए शांतिकुंज के निकट ब्रह्मवर्चस की स्थापना की तथा यज्ञों के एवं मंत्रों के प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन वैज्ञानिकों द्वारा करवाया। एक नई शुरुआत हुई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक और वैज्ञानिक इस शोध यात्रा में उच्च साधना वाले तथा प्रज्ञा वाले साधक के लिए गायत्री नगर का निर्माण किया। आचार्य जी ने उनके प्रशिक्षण के लिए तथा चयन के लिए अनेक प्रशिक्षण शिविर लगाए।

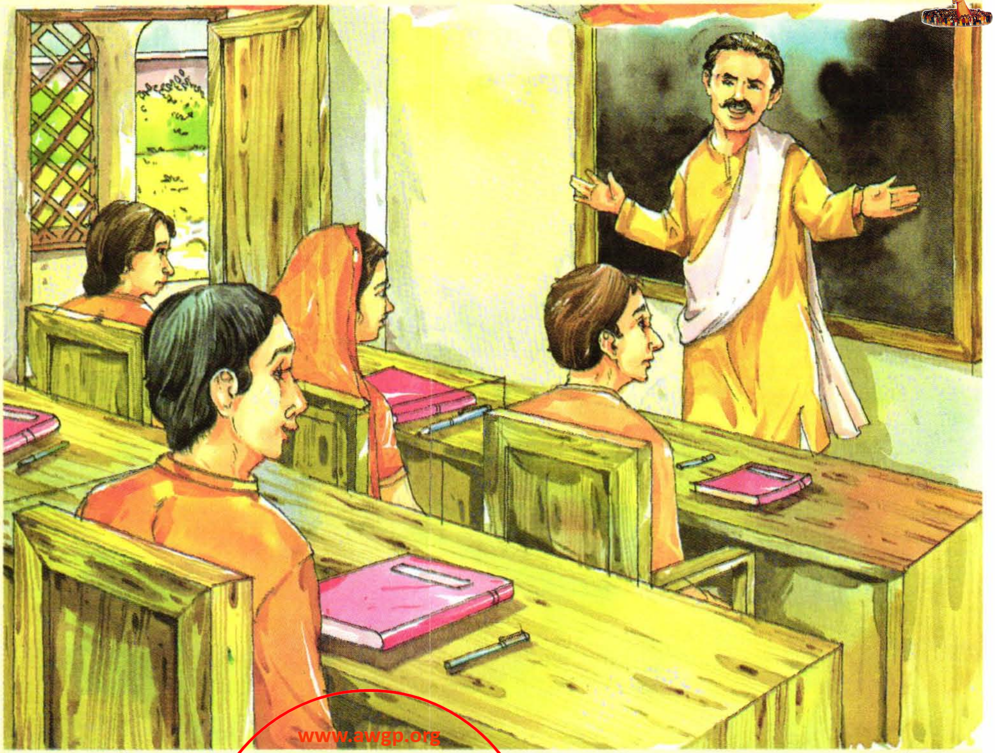

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी ने जड़ी-बूटी और औषधियों के शोध एवं निर्माण का कार्य शुरू करवाया तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए हजारों वृक्ष लगवाए। जल, [illegible] वातावरण की शुद्धि के लिए अभिनव प्रयास हुए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्यावरण संरक्षण की इस युग में दिन-प्रतिदिन आवश्यकता बढ़ती जा रही है। गुरुदेव ने वन संरक्षण और हरीतिमा विस्तार का कार्यक्रम बनाया और इसे वनौषधि उपयोग की व्यवस्था से जोड़ दिया।

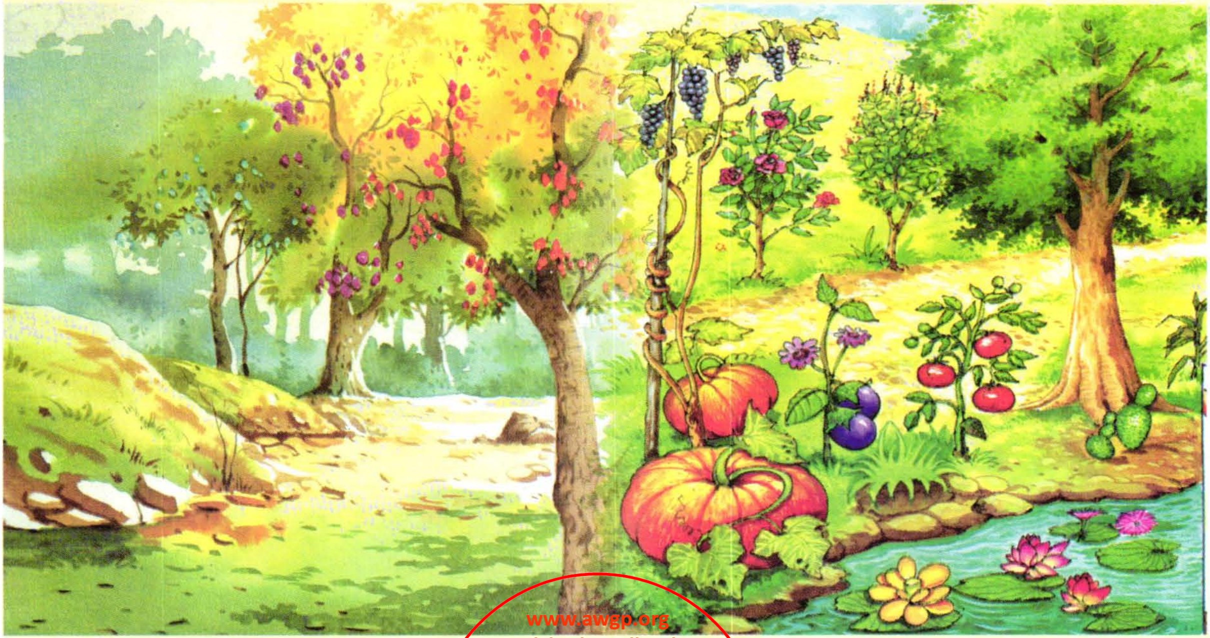

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मंत्र की प्रचंड शक्ति और यज्ञ की ऊर्जा के वैज्ञानिक प्रयोगों पर गुरुदेव का ध्यान गया और उन्होंने यज्ञाग्नि के धुएँ का रासायनिक विश्लेषण करवाने की व्यवस्था की तथा मंत्रों के प्रभावों को वनौषधियों पर जाँचने की व्यवस्था की।

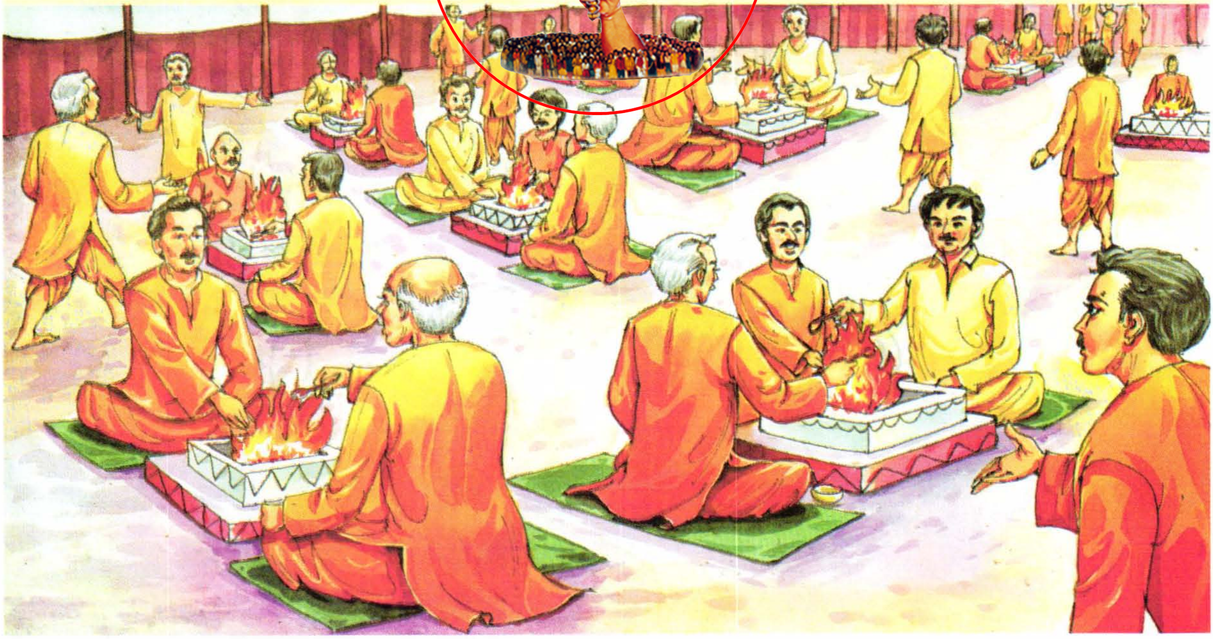

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मवर्चस को वैज्ञानिक नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित किया गया तथा इसमें वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए एक सक्षम प्रयोगशाला स्थापित की। इसके साथ ही विभिन्न विषयों पर एक विशाल ग्रंथशाला स्थापित की।

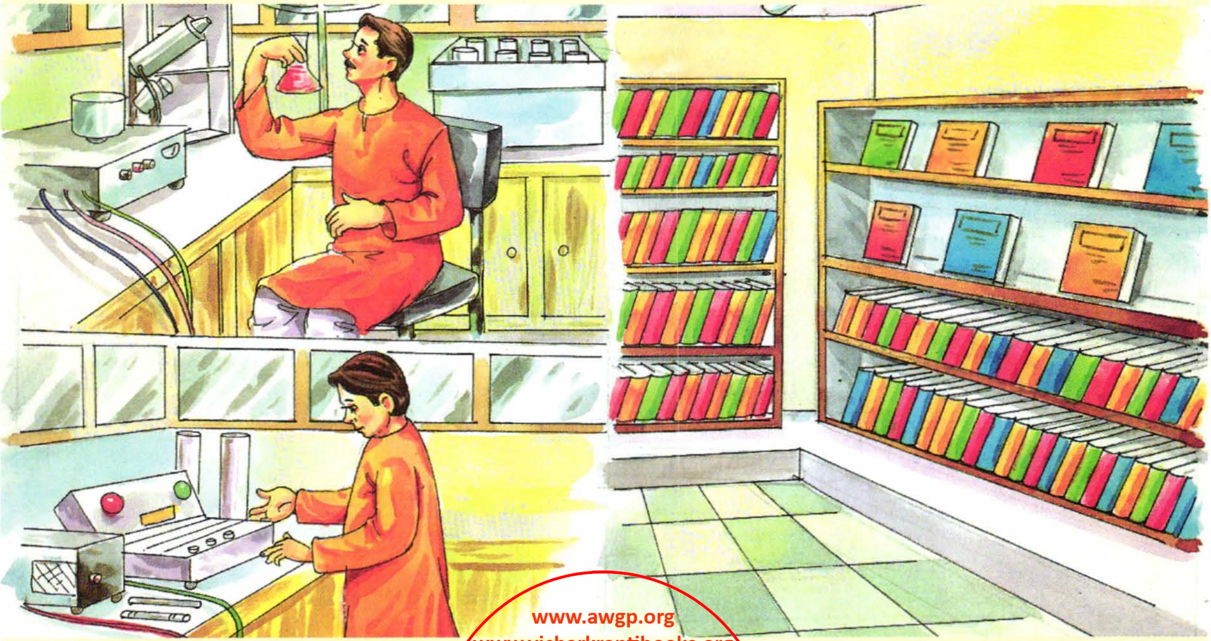

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समाज के अगणित सुपात्र व्यक्तियों को शक्ति प्रदान कर उनको समाज के नवनिर्माण हेतु एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करने के लिए अनेक प्रशिक्षण शिविर लगाए और उन्हें प्रशिक्षित किया। प्राण-प्रत्यावर्तन की यह प्रक्रिया स्थूल और सूक्ष्म, दोनों माध्यमों से चली।

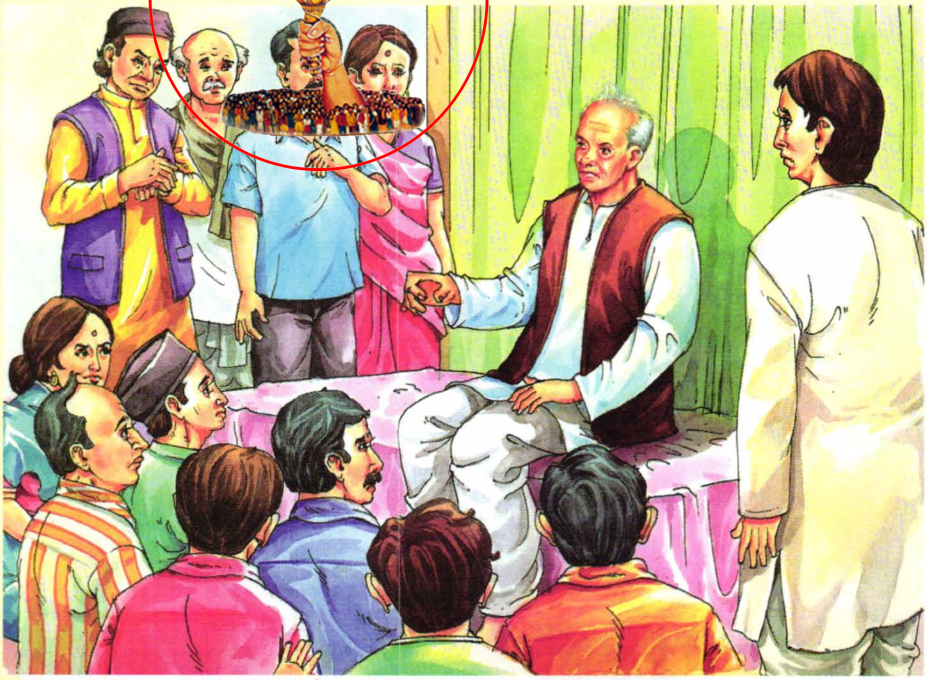

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शारीरिक रोगों के साथ-साथ वर्तमान युग में मानसिक रोग भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में गुरुदेव ने काफी गंभीरता से इनके निवारण हेतु विचार किया और शांतिकुंज में आसन, प्राणायाम और प्रज्ञायोग की उचित शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था की, जिसका लाभ आज लाखों लोग उठा रहे हैं।

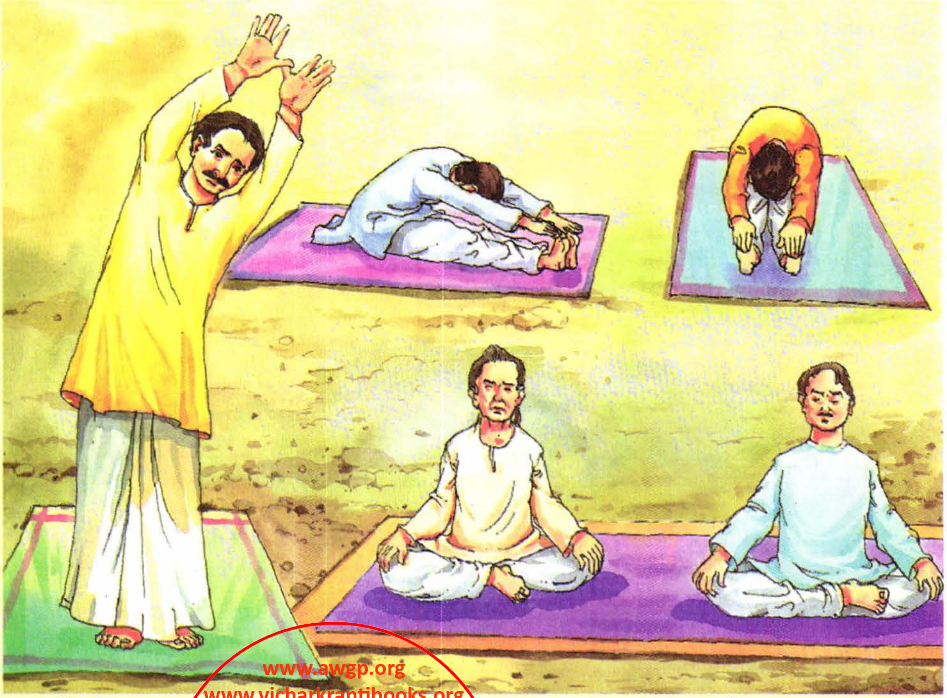

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आचार्य जी की कुछ वर्षों से सूक्ष्म साधना चल रही थी। २ जून सन् १९९० को गायत्री जयंती के दिन उन्होंने अपने स्थूलशरीर को त्याग अपनी आत्मा को माता गायत्री में लीन कर लिया। उनके महाप्रयाण का समाचार पाते ही श्रद्धालु एवं अनुयायी नर-नारी शोकाकुल हो उठे।

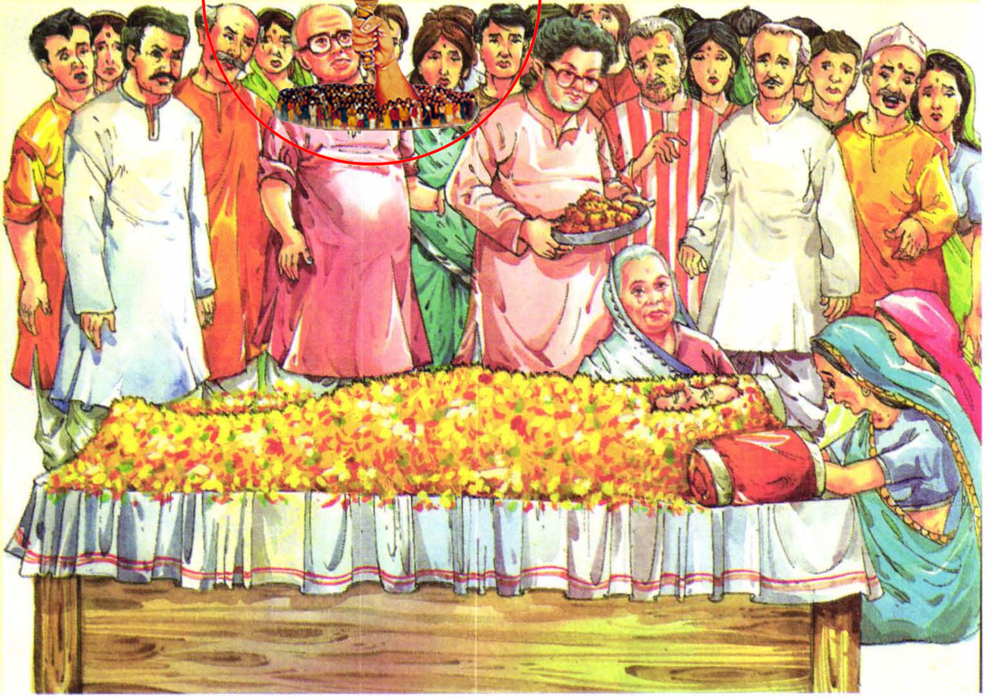

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

२ जून १९९० में पूज्य गुरुदेव ने अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार गायत्री जयंती के पावन दिन सूक्ष्म सत्ता से एकाकार होकर महाप्रयाण किया। उनके महाप्रयाण पर लाखों अनुयायियों के शोक का पारावार न रहा।

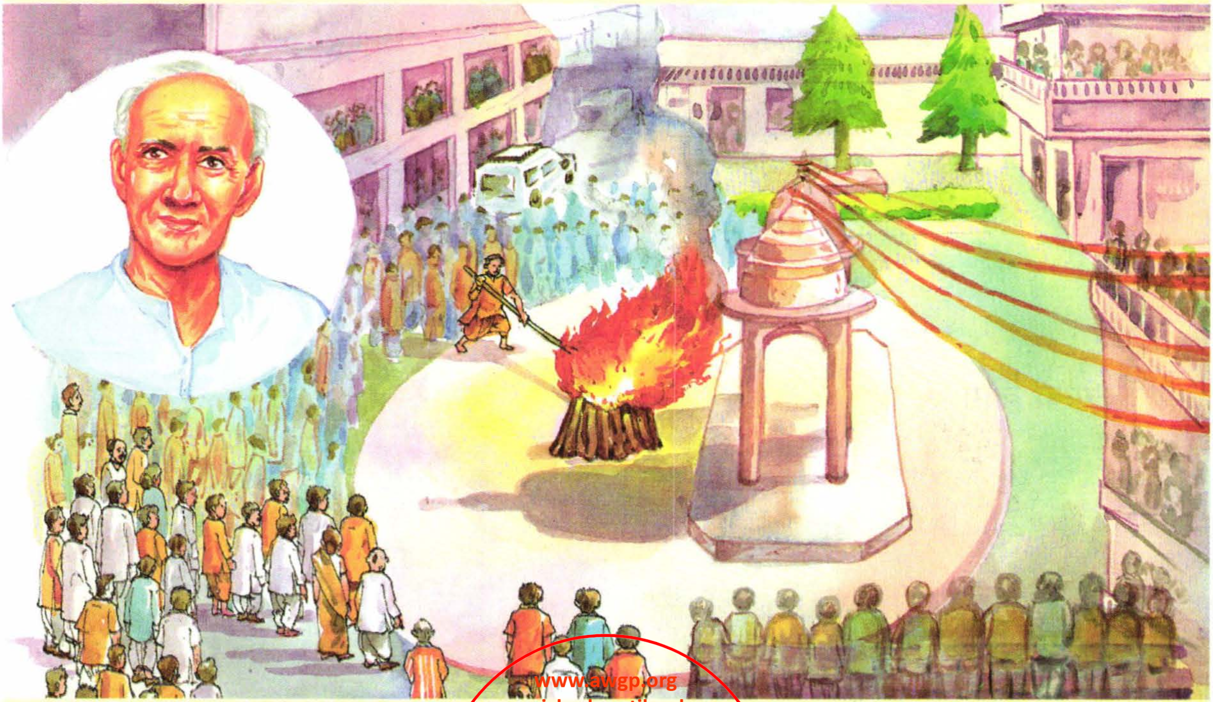

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

७ से ८ जून, १९९० तक छः स्थानों पर देश में लक्षवेदी ब्रह्मदीप महायज्ञ आयोजित किए गए। जिसका महत्त्व और प्रभाव धीरे-धीरे समाज में विदित होता रहा।

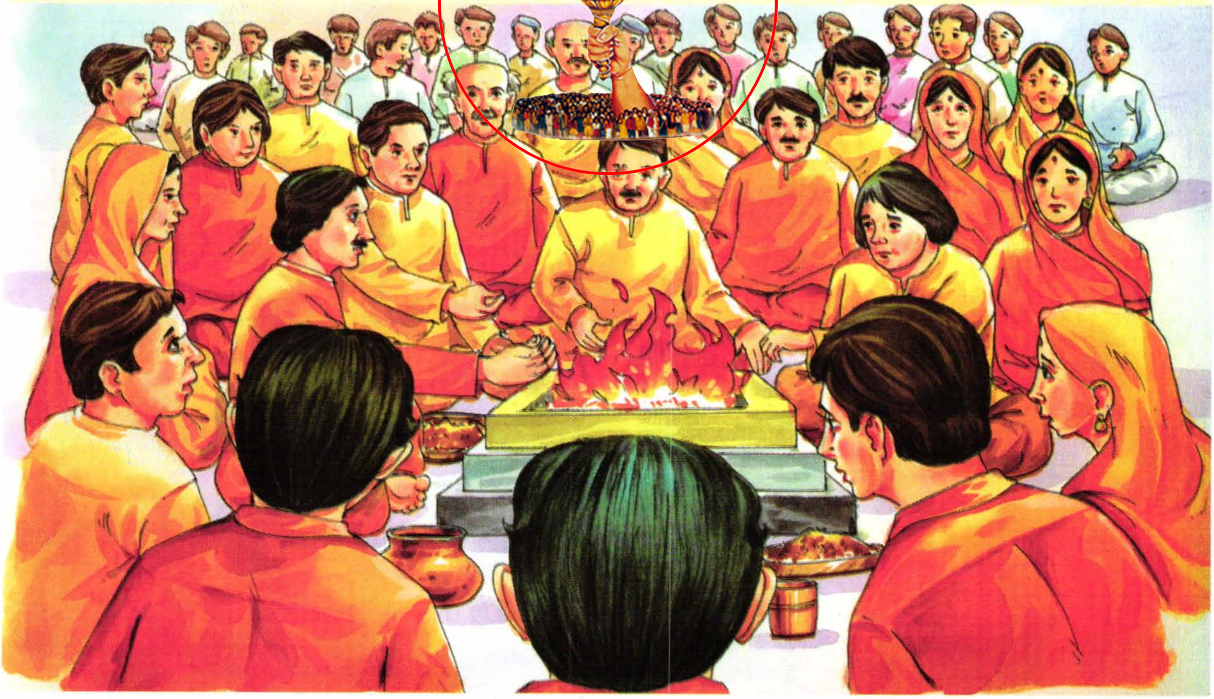

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परम वं. माता जी के निर्देशन में सन् १९९० में श्रद्धांजलि समारोह हुआ जिसमें देश-विदेश से नर-नारी आए।

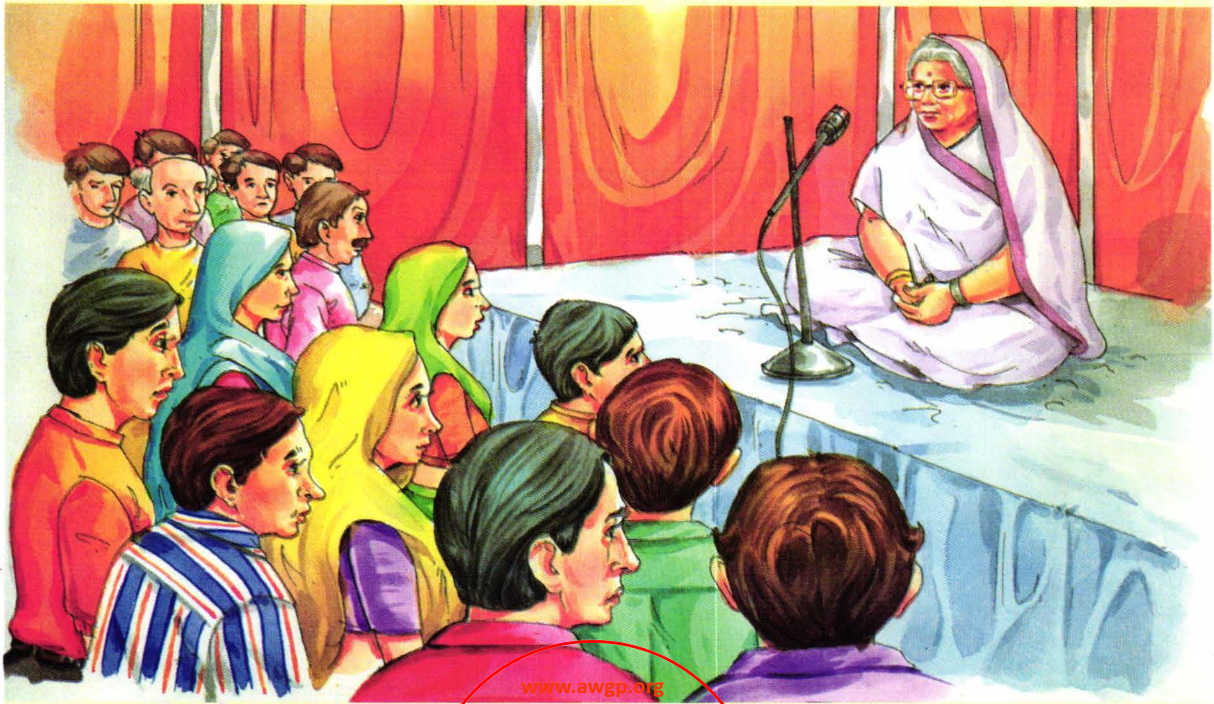

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भारत सरकार के डाक-तार विभाग द्वारा पूज्य गुरुदेव की पावन स्मृति में २७ जून १९९१ को तात्कालीन उपराष्ट्रपति डॉक्टर शंकर दयाल ने उनके डाक टिकट का विमोचन किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देव संस्कृति को घर–घर तक पहुँचाने के लिए वंदनीया माता जी के संरक्षण में ८ एवं १० जून १९९२ को ऐतिहासिक शपथ समारोह हुआ।

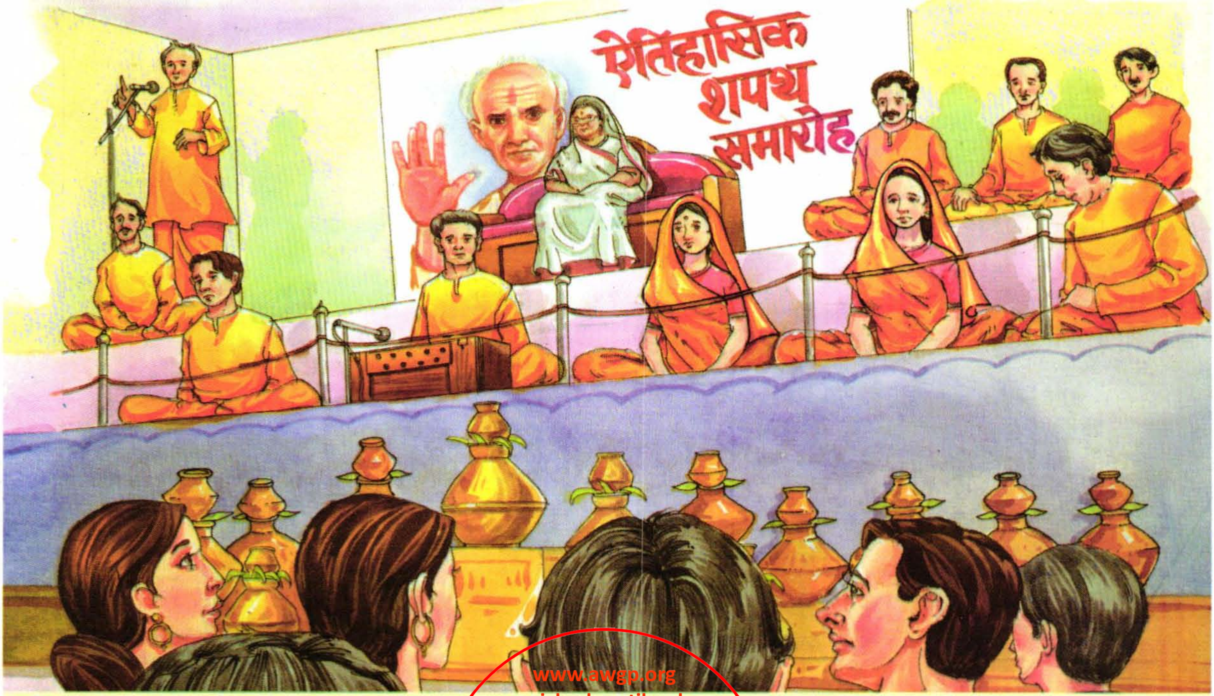

वंदनीया माता जी के संरक्षण में राष्ट्र के सोए पराक्रम को जगाने के लिए तथा उसे सुसंगठित करने के निमित्त देव संस्कृति दिग्विजय अभियान हेतु १० जून, १९९२ को अश्वमेध यज्ञों की घोषणा हुई।

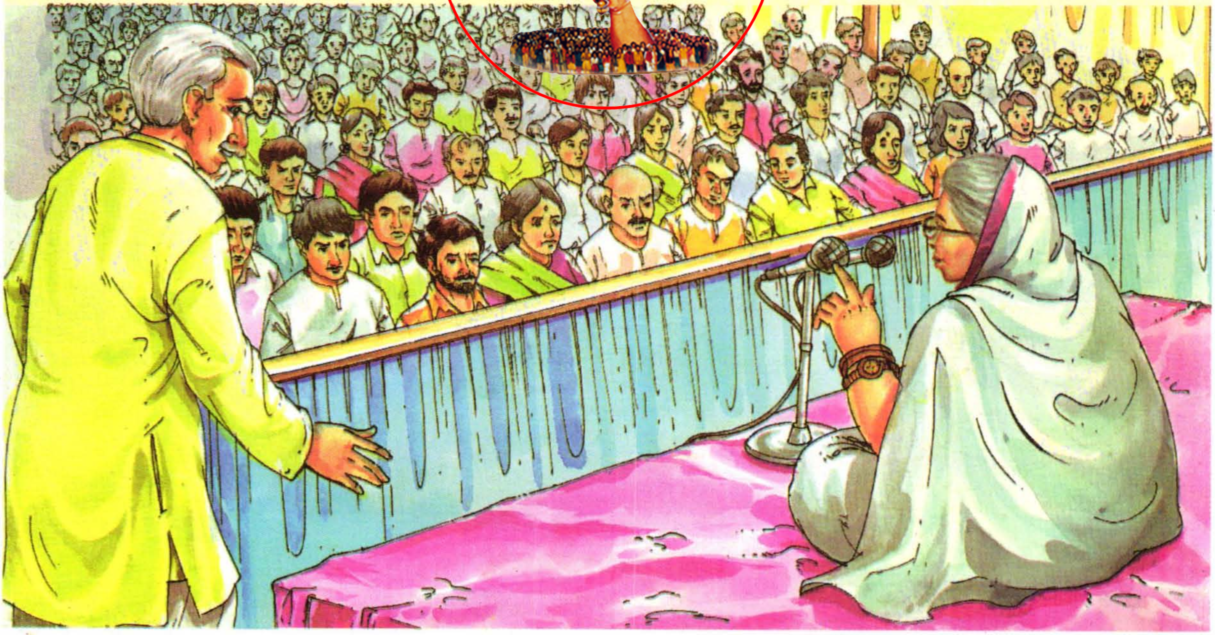

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रथम विराट अश्वमेध यज्ञ ७ से १० नवंबर १९९२ तक जयपुर (राजस्थान) में हुआ। इस यज्ञ में लाखों लोगों ने भाग लिया। उसके बाद यह श्रृंखला विश्वभर में चली।

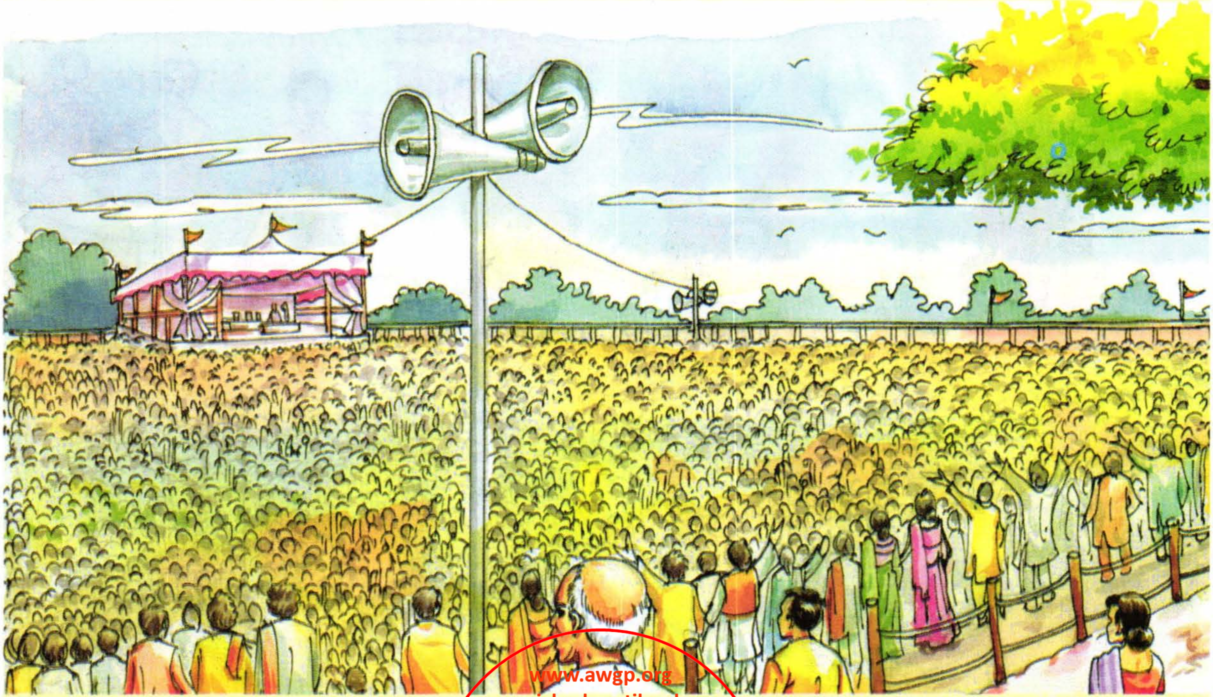

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितंबर, सन् १९९४ को वंदनीया माता जी ने अपने आराध्य की सत्ता में अपने को लीन कर लिया। उनके महाप्रया[illegible] चहुँओर अंधकार सा छा गया।

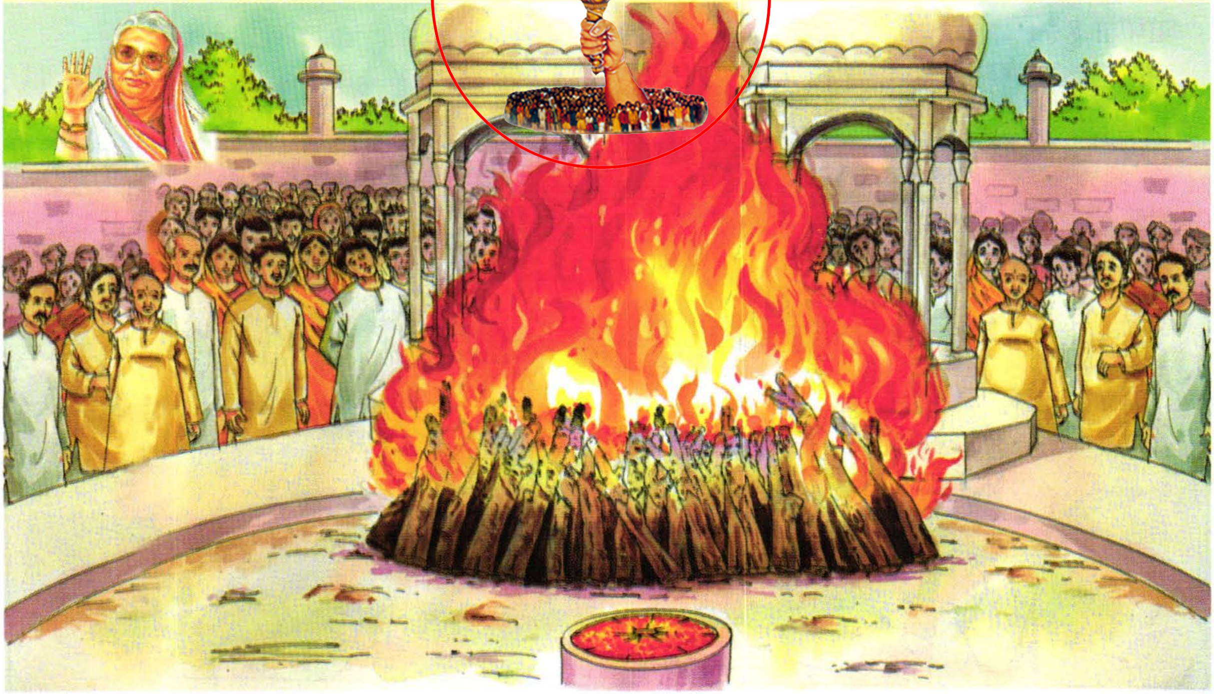

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वंदनीया माता जी के महाप्रयाण के पश्चात एक वर्ष तक आँवलखेड़ा (आगरा) में गायत्री मंत्र का अखण्ड जप किया गया और पूर्णाहुति के निमित्त विशेष साधनाएँ की गईं। एक वर्ष तक इस विशेष आयोजन में भारत के समस्त भागों से प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

७ नवम्बर १९९२ से ३० जुलाई १९९५ तक देश में तथा विदेशों में सत्ताईस स्थानों पर विराट अश्वमेध यज्ञ हुए। विदेशों में ऐसे यज्ञ [illegible] बार हुए थे। इन यज्ञों में भारतवासी एवं विदेश में रहने वाले भारतीयों ने बहुत प्रसन्नता से भाग लिया तथा विदेशियों ने इन यज्ञों के विषय में वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रथम पूर्णाहुति के लिए आँवलखेड़ा का यज्ञ-स्थल अत्यंत भव्यता से तैयार किया गया तथा उसमें अनेक रचनात्मक कार्यक्रम सँजोए गए। इस आयोजन को देखने तथा इसमें भाग लेने लाखों श्रद्धालु देश एवं विदेश के विभिन्न भागों से आए। आँवलखेड़ा का आयोजन स्थल अत्यंत दर्शनीय था।

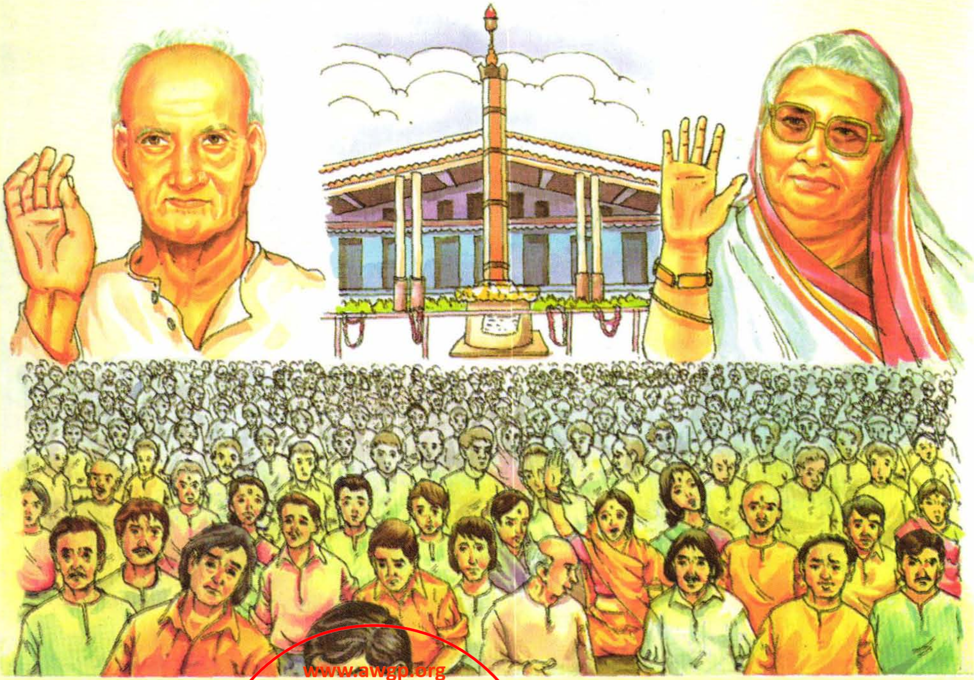

युगसंधि महापुरश्चरण की महापूर्णाहुति सन् २००० में शांतिकुंज, हरिद्वार में आश्वमेधिक यज्ञ के रूप में संपन्न की गई। इस आयोजन में [illegible] परिजन देश-विदेश से भाग लेने आए। यह कार्यक्रम अद्वितीय रहा। शांतिकुंज, हरिद्वार में आयोजन स्थल बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था।

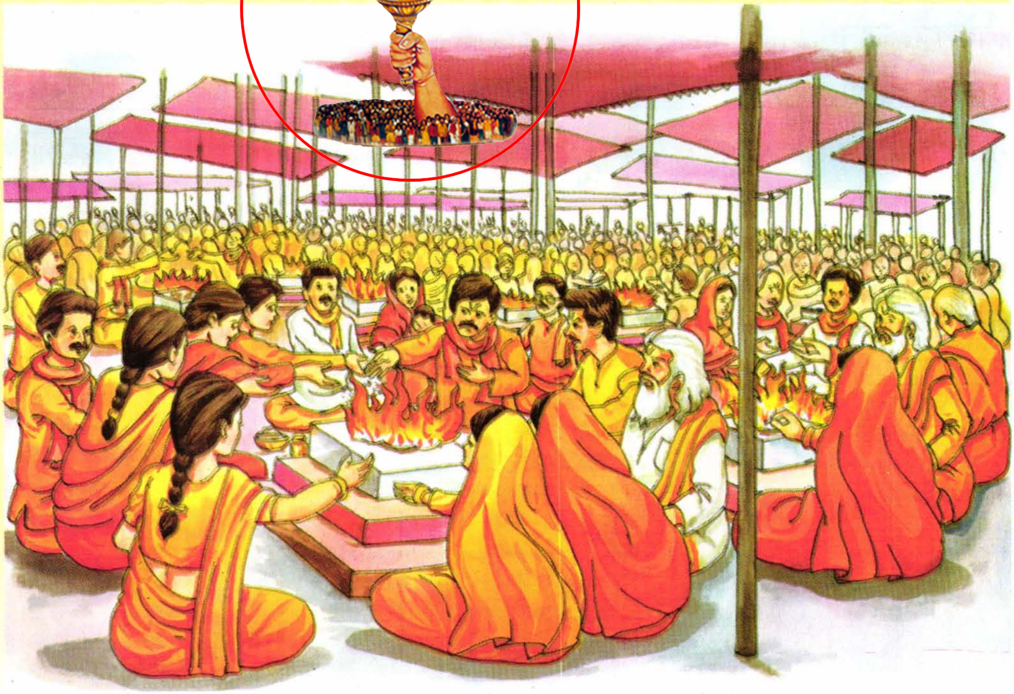

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आँवलखेड़ा, आगरा

आँवलखेड़ा ग्राम में युगपुरुष पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म २० सितंबर १९११ में हुआ। जन्म स्थान एक विराट कीर्तिस्तंभ स्थापित है तथा एक चबूतरे पर उनके द्वारा किए गए कार्यों को शिलालेखों के रूप में स्थापित किया गया है।

यहाँ पर अध्यात्म, योग, व्यायाम तथा सामूहिक जप, अनुष्ठान, यज्ञ आदि की गतिविधियाँ आज भी चल रही हैं। श्री दानकुँवरि इंटर कॉलेज, गायत्री शक्तिपीठ, स्वावलंबन केंद्र, बालिका उच्चतर माध्यमिक एवं महाविद्यालय तथा माता भगवती देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित हैं। इनसे लाखों लोग लाभ ले रहे हैं। यहाँ पर एक बड़ी गोशाला तथा यज्ञशाला भी है। जन्म स्थली पर भव्य सूर्य मन्दिर एवं ध्यान केंद्र का निर्माण किया गया है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गायत्री शक्तिपीठ

आँवलखेड़ा में संरक्षित पूज्यवर की साधनास्थली

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

परमपूज्य गुरुदेव ने सन् १९४० में अखण्ड ज्योति संस्थान की घीयामंडी, मथुरा में स्थापना की। यहाँ आकर बहुत से दुखी, तनावग्रस्त व्यक्तियों ने गुरुदेव के स्पर्श से नए प्राण पाए तथा उनके व परम वंदनीया माता जी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर अपने होकर चले गए।

एक कोठरी जो गुरुदेव की साधनास्थली थी, वहीं पर आज भी पूजाघर बना हुआ है। पूरे भवन को नया रूप दिया गया है, पर वह पूजा-स्थल वैसा ही रखा गया है। युग निर्माणपरक साहित्य, आर्षग्रंथों के भाष्य यहीं पर लिखे गए। गुरुदेव और माताजी इसी घर से सन् १९७१ जून में विदा लेकर शांतिकुंज, हरिद्वार चले गए।

पुस्तकों का प्रकाशन कठोर तपश्चर्या, ममत्व का विस्तार, पत्रों द्वारा जन-जन के हृदय को छूने की प्रक्रिया यहीं से प्रारंभ हुई। आज भी अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पेच का विराट तंत्र स्थापित है। गुरुदेव के साहित्य को १०० बड़े ग्रंथों (वाङ्मय) का प्रकाशन एवं प्रसार-वितरण यहीं से हो रहा है।

यहाँ एक अखण्ड ज्योति पारमार्थिक औषधालय है जो पीड़ित गरीबों की सेवा के लिए चलाया जा रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

युगऋषि का साधनाकक्ष

साधनाकक्ष

अखण्ड ज्योति पारमार्थिक औषधालय, मथुरा,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युगतीर्थ गायत्री तपोभूमि, मथुरा

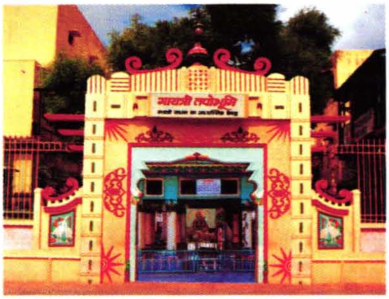

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

गायत्री तपोभूमि, मथुरा परमपूज्य गुरुदेव की २४ महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना है। यहाँ २४ सौ करोड़ मंत्रों का लेखन, २४ सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहित कर स्थापित किया गया है। गायत्री माता का भव्य मंदिर व महाकाल का आकर्षक मंदिर देखने योग्य है। यहाँ एक यज्ञशाला है जिसमें ७०० वर्ष पुरानी अखण्ड अग्नि स्थापित की गई है। गायत्री मंदिर के दाँए-बाँए गुरुदेव व माताजी की चरणपादुकाएँ एवं प्रतिमाएँ स्थापित हैं। यहाँ साधनाकक्ष में ९ दिवसीय एवं ४० दिवसीय साधक साधना करते हैं। सन् १९५३ में १०८ कुंडीय महायज्ञ, सन् १९५६ में नरमेध यज्ञ और सन् १९५८ में विराट सहस्रकुंडीय यज्ञ के आयोजन यहीं संपन्न हुए। युग निर्माण योजना का सूत्रपात यहीं से हुआ।

यहाँ युग निर्माण स्वावलंबन विद्यालय सन् १९६७ से सफलतापूर्वक चल रहा है। यहाँ निःशुल्क संस्कारों की व्यवस्था, सभी के लिए माताजी के भोजनालय में निःशुल्क भोजन एवं परिसर में आवास की व्यवस्था है। परिसर में ही पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय है तथा ठंढे जल की प्याऊ भी लगी हुई है। यहीं से गुरुदेव के साहित्य का, युग निर्माण योजना पत्रिका का संपादन व युग शक्ति गायत्री गुजराती का प्रकाशन, वितरण होता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मंदिर

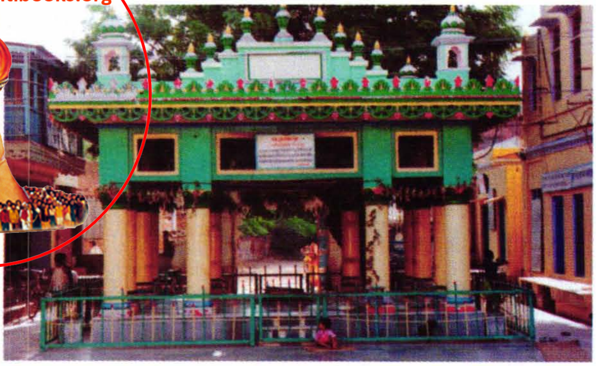

७०० वर्ष पुरानी हिमालय की अखण्ड अग्नि स्थापित यज्ञशाला

प्रज्ञानगर स्थित महाकालेश्वर मंदिर

निर्माणाधीन युग निर्माण विस्तार भवन एवं प्रेस प्रशिक्षण भवन, गौशाला

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्रीतीर्थ शांतिकुंज, हरिद्वार

उत्तराखंड के हरिद्वार नगर में स्थित शांतिकुंज करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। इसकी स्थापना सन् १९७१ में ऋषियुग्म के द्वारा हुई। यह आश्रम गायत्री परिवार के मुख्यालय (केंद्र) के रूप में जाना जाता है।

यहाँ पर गायत्री माता का एक भव्य मंदिर तथा सप्तऋषियों की प्रतिमाओं की स्थापना है, गुरुदेव द्वारा सन् १९२६ में प्रज्वलित किया गया अखण्ड दीप यहीं स्थापित है। नित्य नियमित हजारों साधक यज्ञ संपन्न करते हैं। यहाँ शरीर, मन व अंत:करण को स्वस्थ समुन्नत बनाने का व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया जाता है। यहाँ भटके हुए देवता का मंदिर, सजल श्रद्धा प्रखर प्रज्ञा ऋषियुग्म के प्रतीक स्मारक के दर्शन-प्रणाम से मनोकामना पूर्ण होती है। जड़ी-बूटी उद्यान जिसमें ३०० से अधिक दुर्लभ वनौषधि लगाई गई हैं। यहाँ प्रतिमाह ९ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र तथा एक माह का युगशिल्पी सत्र निरंतर चलता है।

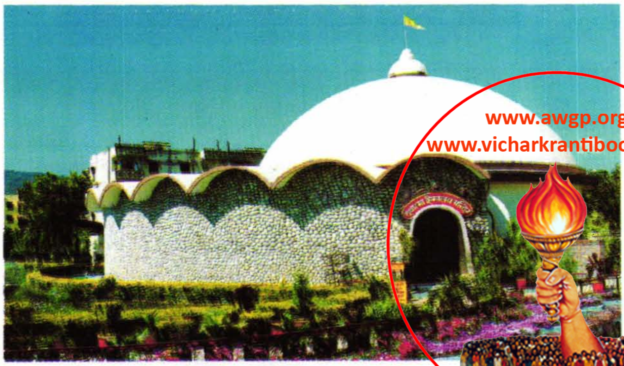
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

देवात्मा हिमालय

माँ गायत्री एवं सन् 1926 से प्रज्वलित अखण्ड दीप

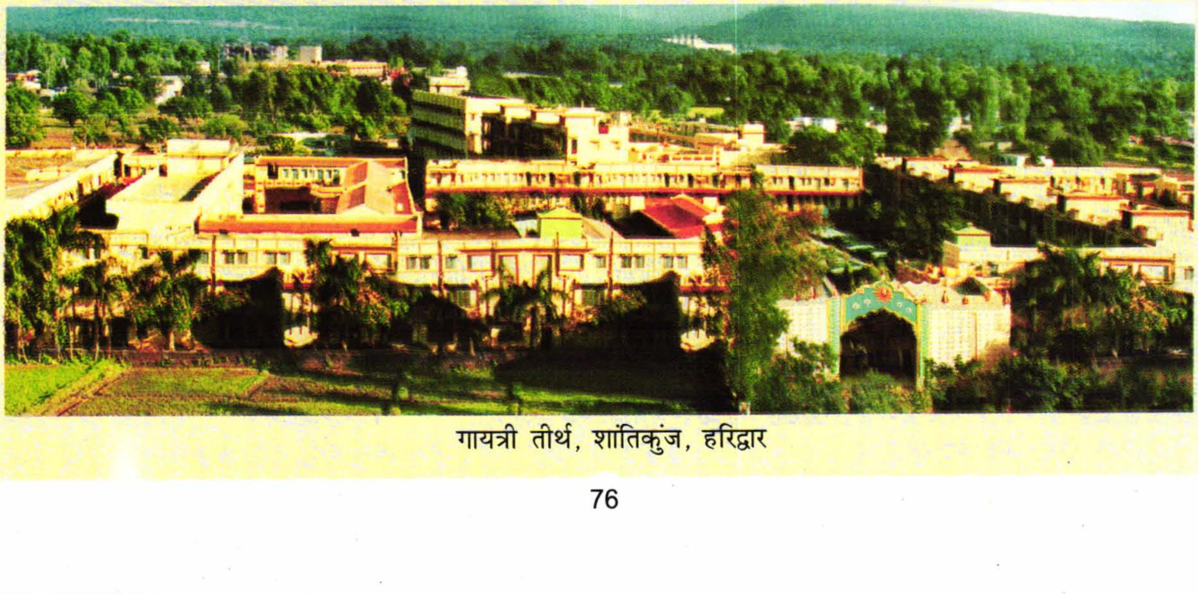

गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज, हरिद्वार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार

वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रयोगशाला ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना १९७९ में हुई। आधुनिकतम कंप्यूटराइज्ड उपकरणों से सुसज्जित इस प्रयोगशाला के मुख्य तीन भाग हैं—(१) यज्ञ चिकित्सा की प्रयोगशाला (२) आध्यात्मिक साधनाओं द्वारा शरीर, प्राण और मन अर्थात समग्र जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का मापन करने वाली प्रयोगशाला। (३) वनौषधि अनुसंधानशाला और दुर्लभ जड़ी-बूटी का वनौषधि उद्यान।

आदि शक्ति गायत्री माता की २४ शक्तिधाराओं के २४ मंदिर स्थापित हैं, जिनमें मंत्र विज्ञान एवं यंत्र विज्ञान के सभी तत्त्वों का समर्पित समावेश।

वैज्ञानिक अध्यात्मिक प्रयोगशाला, संदर्भ पुस्तकालय जिसमें असंख्य बहुमूल्य पुस्तकों का संग्रह है। इस संस्थान में समर्पित वैज्ञानिकों का समुदाय सेवा में लगा हुआ।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान हरिद्वार

मंत्रशक्ति एवं यज्ञ की ऊर्जा के प्रभावों का चिकित्सीय अनुसंधान केन्द्र

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्राचीन गुरुकुल परंपरा पर आधारित भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव गढ़ने हेतु इस विश्व विद्यालय की स्थापना की गई। यह शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा संचालित है।

इसका मूलभूत उद्देश्य है देव संस्कृति का शिक्षण एवं प्रसार करना। यह विद्यालय युवाओं को स्वावलंबन एवं रोजगार के अनेक अवसर जुटाएगा। देश व संस्कृति के उत्थान एवं विश्व मानवता के कल्याण में भावी नागरिकों की भागीदारी सिद्ध करेगा।

श्रेष्ठतम नागरिक, समर्पित स्वयंसेवक, प्रखर राष्ट्रभक्त एवं विषय के विशेषज्ञ बनाने का उद्देश्य पूरा करेगा। यहाँ आधुनिक लाइब्रेरी, महाकाल का भव्य मंदिर और एक बड़ी गोशाला भी है। विभिन्न विषयों के परास्नातक कोर्स के साथ-साथ यहाँ ६ माह, १ वर्ष, २ वर्ष तथा ३ वर्ष के डिप्लोमा कोर्स भी चलाए जाते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

छात्रावास, भोजनालय एवं कार्यकर्ता निवास

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री ज्ञानपीठ, अहमदाबाद

गायत्री ज्ञानपीठ, पाटीदार सोसाइटी, जूनावाडज की अहमदाबाद में स्थापना सन् १९८९ में हुई। यह स्टेशन से ८ किलोमीटर दूर है।

गायत्री माता का भव्य मंदिर जो दर्शनार्थियों के लिए प्रात: ५ बजे से १२ बजे तक तथा सायं ४ बजे से ८.३० बजे तक खुला रहता है। सुंदर यज्ञशाला में प्रतिदिन यज्ञ होता है तथा विभिन्न संस्कार कराए जाते हैं। अपना साहित्य बिक्री केंद्र तथा पुस्तकालय भी है। ज्ञानपीठ से गुजराती साहित्य का वितरण तथा विक्रय होता है।

युग शक्ति गायत्री (गुजराती) पत्रिका का अनुवाद यहीं तैयार होता है। होम्योपैथिक चिकित्सा की व्यवस्था परिसर में है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का संचालन पूरे गुजरात प्रांत में यहीं से होता है।

गायत्री ज्ञानपीठ, अहमदाबाद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महापुरुषों एवं संतों के उद्गार—परम पूज्य गुरुदेव के संबंध में

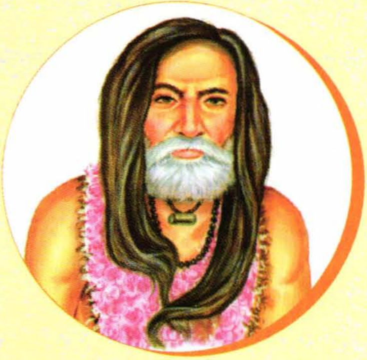

प्रसिद्ध महान संत देवरहा बाबा ने कहा—''गायत्री के सिद्धसाधक आचार्यश्री का मैं नित्य अभिनंदन करता हूँ। वे तो मेरे हृदय में बसते हैं।''

महात्मा आनंद स्वामी आर्यसमाज के सर्वमान्य संत ने कहा—''आचार्यश्री ने गायत्री को जन-जन की बनाकर महर्षि दयानंद के कार्य को आगे बढ़ाया है। गायत्री और वे एकरूप हैं।''

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सनातन धर्म की गरिमा स्थापित करने वाले स्वामी करपात्री जी महाराज ने अपने उद्गार व्यक्त किए—''आचार्य जी इस युग में [illegible] हैं। उन्होंने गायत्री को सबकी बना दिया, यदि इसे मात्र ब्राह्मणों की मानकर उन्हीं के भरोसे छोड़ दिया होता तो अब तक गायत्री महाविद्या संभवतः लुप्त हो जाती।''

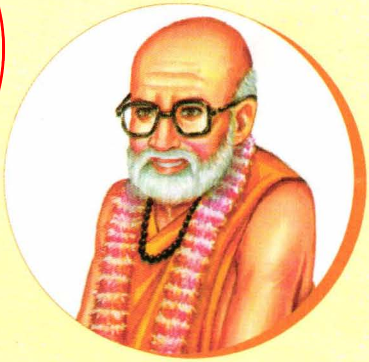

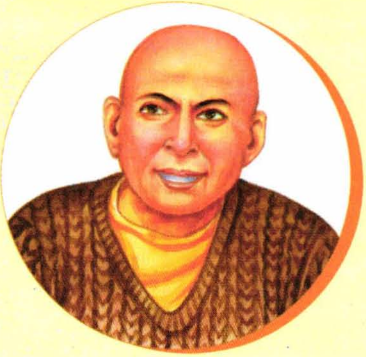

महान संत स्वामी अखंडानंद जी सरस्वती की अभिव्यक्ति—''जो गायत्री का गंगाजल की तरह सेवन करना चाहते हों, वे आचार्य जी का मार्ग अपनाएँ। यह आसान है और निरापद भी। आचार्य जी ने तो यज्ञ को भी देवदर्शन की तरह सुलभ बना दिया है।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महान संत स्वामी कल्याण देव जी के उद्गार—"मेरा और आचार्य जी का संबंध कृष्ण और सुदामा जी जैसा था। लोग मथुरा-वृंदावन मंदिरों के दर्शन करने जाया करते हैं, मैं आचार्य जी के यज्ञ के दर्शनों के लिए मथुरा जाया करता था।"

भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन को गुरुदेव का समग्र आर्ष साहित्य भेंट किया गया तो उन्होंने कहा—"यदि यह ज्ञान नवनीत मुझे कुछ वर्ष पूर्व मिल गया होता तो संभवत: मैं राजनीति में प्रवेश न कर, आचार्य श्री के चरणों में बैठा, अध्यात्मदर्शन का शिक्षण ले रहा होता।"

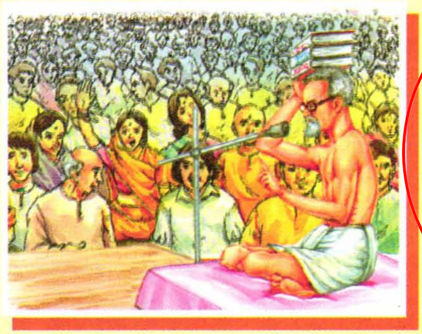

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विनोबा जी को एक कार्यकर्त्ता पूज्य गुरुदेव के वेदभाष्य लेकर भेंट करने [illegible]। भेंट प्राप्त कर उन्होंने कहा—"ऐसा सुंदर भाष्य कोई सुंदर ऋषि[illegible] कर सकता है। अन्य में भला ऐसी सामर्थ्य कहाँ?" विनोबा जी [illegible]ा में काफी देर तक वेदभाष्य की प्रशंसा में बोलते रहे। गुरु[illegible] ने ही वेदमूर्ति की उपाधि दी।

भारत के उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने युग ऋषि की डाक टिकिट जारी करते हुए नई दिल्ली २७ जून १९९२ को कहा—"मैं आचार्य श्रीराम शर्मा को प्रखर प्रतिभा, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा प्रचंड आत्मविश्वास से संपन्न अपनी तरह का एक विशिष्ट अध्यात्मवादी चिंतक मानता हूँ।"

"आचार्य जी ने सिद्धांत और साधना को आधुनिक तर्क और शब्द देकर सामाजिक परिवर्तन का जो रास्ता दिखाया है, उसके लिए आने वाली पीढ़ियाँ युगों-युगों तक उनकी कृतज्ञ रहेंगी। मैं आचार्य जी के आध्यात्मिक व्यक्तित्व को उनके समाजसुधारक व्यक्तित्व में पूरी तरह से घुला-मिला मानता हूँ।"

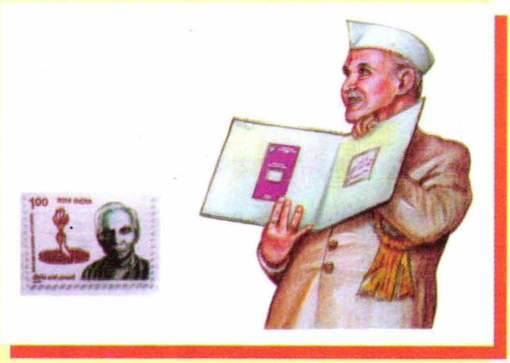

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नित्य पाठ करें

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है– इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- "हम बदलेंगे-युग बदलेगा" "हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा" इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना—एक दृष्टि में

हमारे लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण
- स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज
- आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुंबकम्
- एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक शासन
- जनमानस का भावनात्मक परिष्कार

हमारे आधार :

- व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण
- नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति, सामाजिक क्रांति
- धर्मतंत्र से लोकशिक्षण (विचार क्रांति)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हमारा उद्घोष : हम बदलेंगे युग बदलेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा

हमारा प्रतीक : लाल मशाल – ज्ञानयज्ञ (आलोक वितरण) का सामूहिक सशक्त प्रयास

हमारा संविधान : युग निर्माण सत्संकल्प

हमारी ध्रुव मान्यताएँ :
- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।
- जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

आत्मनिर्माण के दो सूत्र : उत्कृष्ट चिंतन, आदर्श कर्तृत्व

जीवन निर्माण के चार स्तंभ : साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा

आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार : उपासना, साधना, आराधना

प्रगतिशील जीवन के चार चरण : समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी

संयमशीलता के चार स्तंभ : इंद्रियसंयम, समयसंयम, अर्थसंयम, विचारसंयम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारे सात आंदोलन

१. साधना—साधना ही युग निर्माण मिशन का मूल प्राण है। इसी आधार पर गायत्री परिवार खड़ा है।

* जीवन साधना से जोड़कर स्वाध्याय, संयम, सेवा में लगाना। * मंत्र जप, मंत्र लेखन, संस्कार, देवस्थापना, बलिवैश्व, यज्ञ, धार्मिक आयोजन, तुलसी आरोपण आदि प्रत्येक व्यक्ति करे। * पूज्य गुरुदेव द्वारा कराई गई विभिन्न ध्यान साधनाओं में से किसी एक को गहराई में उतारें।

२. शिक्षा—ऐसे आंदोलन के रूप में गति दिया जाना है, जिसमें न केवल समूचा राष्ट्र साक्षर हो सके, बल्कि सुसंस्कारित व आत्मावलंबी भी बनें।

* शिक्षा का प्रसार। * पुस्तकालय, वाचनालय, प्रौढ़ शिक्षा, रात्रि पाठशालाएँ। * शिक्षा विद्या के साथ जुड़े। * विद्यालयों में विचार क्रांति। * बाल संस्कार शालाएँ। * कामकाजी विद्यालय योजना । * स्वयं को जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के लिए प्रेरित करें। * युग साहित्य के स्वाध्याय। * स्वाध्याय एवं सत्संग करें। * ज्ञान आचरण में कितना उतरा ? समीक्षा करें । * भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा एवं विद्यालयों में संस्कृति मंडल का गठन।

३. स्वास्थ्य—रुग्णता रोकने के उपाय जीवन शैली में परिवर्तन कर विकसित करना इस आंदोलन का उद्देश्य है।

* सुख को स्वास्थ्य पर हावी न होने दें। * स्वास्थ्य के सूत्रों को अभ्यास में लाएँ। * आहार-विहार, चिंतन, चरित्र, श्रम, विश्राम का संतुलन बनाएँ। * योग, व्यायाम, प्राणायाम, आदि को दिनचर्या में लाएँ। * संयम बरतें एवं जड़ी-बूटी चिकित्सा अपनाएँ। * स्वच्छता बढ़ाएँ। * शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्यों को साधें।

४. स्वावलंबन—हमारे कृषि प्रधान देश में आर्थिक क्रांति ग्राम केंद्रित करके बनाई गई योजनाओं द्वारा ही आएगी।

* स्वावलंबन की मनोवृत्ति। * श्रम का सम्मान। * स्वयं सहायता बचत समूह, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग, गौपालन। * कमजोर वर्ग का शोषण न हो, श्रम और कौशल का लाभ मिले। समझदार और समर्थ उन्हें प्रेरणा दें।

५. पर्यावरण—हरीतिमा संवर्द्धन और कचरे की व्यवस्था।

* प्रकृति के यज्ञीय चक्र (इकोलॉजिकल बैलेंस) के प्रति आस्था। * अनगढ़ सुख-व्यसन, फैशन के लिए प्रकृति पर चोट न हो। * कचरे का निस्तारण।

* दैवी आपदाएँ, बाढ़, भूकंप, दुर्भिक्ष को कम करने के लिए वृक्ष लगाना, यज्ञ द्वारा प्रदूषण को कम करना। * शिक्षकों, छात्रों को प्रशिक्षण, स्मृति उपवन की स्थापना। * सामाजिक जागरूकता, प्रशिक्षण एवं व्यवस्था तंत्र विकसित करें। * हीन भावों, विचारों, संकल्पों और व्यवहारों को निरस्त कर श्रेष्ठताओं का विकास करें।

६. महिला जागरण—महिलाओं में आत्म गौरव का जागरण—उनका परिपूर्ण शिक्षण।

* योग्यता का विकास। * स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, सुरक्षा और सुसंस्कार। * आत्मगौरव का बोध, आत्मविश्वास। * सोने की जंजीरों से मुक्ति। * बेटे-बेटी को एक जैसा मानें। * बेटी-बहू का अंतर मिटे, नारी की नारी के प्रति संवेदना जागे। * क्षेत्रीय नारी संगठन बने-नारी को आगे बढ़ाएँ। * जगह-जगह सार्थक आयोजन हों। * जिनकी पूरी व्यवस्था महिलाएँ सँभालें।

७. व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन—तंबाकू, शराब, पान मसाला, गुटखा, मादक औषधियों का प्रचलन रोकें। "व्यसन से बचाएँ—सृजन में लगाएँ" युवाशक्ति को राष्ट्र निर्माण में लगाएँ।

* कुरीतियों, व्यसनों से समय, श्रम, साधन, स्वास्थ्य बचाएँ, सृजन में लगाएँ। * त्याज्य परंपराएँ क्यों पनप रही हैं, विचार करें। * उपजाति का भेद मिटे * व्यवसाय समाप्त हो। * मृतक-भोज, जेवर का प्रचलन बंद हो। * दहेज, फिजूलखरची जैसी कुरीतियाँ बंद हों।

* व्यसनों से हानि का बोध। * साधना से संकल्प। * औषधियों और सामाजिक दबाव का प्रयोग हो। * महिलाओं-बच्चों को प्रेरित करें, सत्याग्रह करें। * विद्यालयों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संप्रदायों को प्रेरित, सक्रिय करें।

* व्यसनों से हानि का बोध। * साधना से संकल्प। * औषधियों और सामाजिक दबाव का प्रयोग हो। * महिलाओं-बच्चों को प्रेरित करें, सत्याग्रह करें। * विद्यालयों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संप्रदायों को प्रेरित, सक्रिय करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

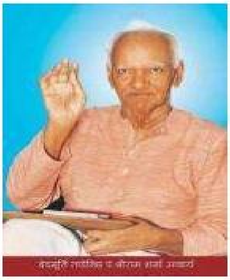

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऎसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org